कपिली के आर-पार

अंतर्भारतीय पुस्तकमाला

कपिली के आर-पार

(कपिली परिया साधु)

नवकांत बरुआ

अनुवाद

लोकनाथ भराली

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

प्रथम संस्करण : 1988
प्रथम आवृत्ती : 1992 *(शक 1913)*

ISBN 81-237-0001-6

Kapili Ke Aar-Par *(Hindi)*
Original Title : Kapili Paria Sadhu (Assamese)

रु० **12.00**

निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, ए-5, ग्रीन पार्क, नयी दिल्ली-110 016
द्वारा प्रकाशित।

कपिली परिया साधु' और असमिया उपन्यास की धारा

उपन्यास के तौर पर 'कपिली परीया साधु' अच्छा होने के बावजूद लेखक की अन्यतम साहित्य कृति के रूप मे नहीं गिना जा सकता। युवा वय की रचना होने के कारण इस उपन्यास में काव्यात्मक उच्छ्वास बहुत अधिक है। इसके बावजूद यह कहा जा सकता है कि जिस नजरिये मे यह उपन्यास रचा गया है वह काव्यमय तथा थोड़ा अस्पष्ट होने के बाद भी, इसमें ऐसी खासियत है जो कि असमीया कथा-साहित्य के लिये नयी है।

साहित्यिक मूल्य की कसौटी पर असमीया उपन्यास का दावा बहुत थोड़ा है। आर्थिक दृष्टि से असम पिछड़ा हुआ है। बरतानवी शासनकाल में इसकी जो मामूली-सी उन्नति हुई थी, उसके पीछे साम्राज्यवादी उपनिवेशी ताकत की शोषण-प्रवृत्ति थी। मुनाफे के लिए अंग्रेजों ने असम की बेशकीमती प्राकृतिक संपदा को अपने काम में इस्तेमाल किया था। असम में उनका राज क़ायम होने के आधी सदी के अंदर, इस देश की व्यापक फैली हुए धरती पर अंग्रेज मालिकों ने अपनी समृद्ध जमींदारी खड़ी कर ली थी।

1947 के बाद के जमाने में आर्थिक दृष्टि से असम की जितनी उन्नति हुई, उपनिवेशी जमाने के मुकाबले में वह बहुत ही मामूली थी। हां, मोटर चलाने लायक सड़कें बनी हैं। स्कूल-कॉलेजों की संख्या बढ़ी है। देहाती जीवन से संपर्क-हीन चंद बड़ी-बड़ी योजनाएं बनानेवाली सरकारी संस्थाएं अचानक जहां-तहां उभर आयी हैं। उसके साथ-साथ कुछ नौकरशाह, कुछ शिल्पविज्ञानी और कुछ ठेकेदार, जिनकी संस्कृति पूर्ववर्तियों के मुकाबले में काफी निचले स्तर की है, मध्यम वर्ग में दाखिल हुए हैं। असम की जनसंख्या की नब्बे प्रतिशत जनता अभी भी गांव में रहती है। सर्व भारतीय औसत में उनमें निरक्षरों की संख्या सबसे अधिक है। उसी तरह असम में प्रति व्यक्ति की औसत आय भी सबसे कम है। अखबार तथा पत्र-पत्रिकाओं के गिने-चुने लेखकों को अगर निकाल दिया जाए तो लेखनी को जीविका के साधन के तौर पर अपनाने वाले व्यक्तियों की संख्या असम

में गिनती की है। ऐसी प्रतिकूल परिस्थिति में साहित्य में आत्मप्रकाश की ताकत विफलता से उफनेगी यह उम्मीद करना निहायत गलत है।

मौजूदा जमाने की पूंजीवादी सभ्यता ने असम को ऊपर ही ऊपर छुआ भर है। असमीया युवकों के लिए विज्ञान या प्राविधि अभी भी सरकारी दफ्तर या किसी कॉलेज में अच्छी नौकरी पाने की सीढ़ियां हैं। सामंती समाज की बुनियाद हालांकि असम में जीर्ण दशा के अंतिम कगार पर पहुंच चुकी है, फिर भी असम की संस्कृति तथा भावधारा में आज भी उसका प्रभाव है। यौन सनसनी वाली चंद रंगीन पत्र-पत्रिकाओं को छोड़ दिया जाए तो कागज की इस महंगाई में साहित्य तथा संस्कृति की प्रतिष्ठित सामयिक पत्र-पत्रिकाएं मृतप्राय-सी हैं। महज भाषा तथा प्रादेशिकता की समस्या को लेकर बहस के समय असमीया बुद्धिजीवी लोग सक्रिय हो उठते हैं, दूसरे वक्त चुप रहते हैं। असमीया साहित्य तथा संस्कृति की मौजूदा परिस्थिति को लेकर सरकार द्वारा पोषित चंद आशावादी ही खुशी जाहिर करते हैं। उन्हें पता है उनकी जीविका शासक वर्ग के समर्थन पर निर्भर है। मगर आलोचक का उत्तर-दायित्व कठिन है—वह इस तरह समझौता नहीं कर सकता।

ये सब बातें कहने का मेरा मकसद यह नहीं है कि असमीया साहित्य में अखिल भारतीय स्तर का उपन्यास नहीं है। उन्नीसवीं सदी के रूसी उपन्यास के खास घराने की तरह खासियत न रहने पर भी असमीया उपन्यास में समकालीन देश तथा जाति के इतिहास की कुछ-कुछ झलकियां दिखाई नहीं पड़ती—यह बात नहीं है। पहले विश्वयुद्ध की सूचना के समय उस जमाने की परिस्थिति के परिवेश में, उपनिवेशी ताकत द्वारा संचालित पिछड़े हुए मुल्क के बुर्जुआ समाज की तरह, असमीया बुर्जुआ लेखकों द्वारा रचित उपन्यास में भी समाज संस्कार तथा व्यक्ति स्वातंत्र्य पर थोड़ा बहुत जोर दिया गया था। सामंती सांकल से छुटकारा पाने की अभिलाषा ने रूमानी प्रेम के प्रतीक का रूप ले लिया था। लड़ाई के बाद वाले जमाने के असमीया उपन्यासों में समाज को अंतरंग तथा वास्तव रूप में देखने की रुझान मिलती है। इससे पहले के जमाने के लोगों ने समाज को कुम्हार के हाथ में मिट्टी की लोई की तरह देखना चाहा कि जैसा मनचाहा समाज को उसी रूप में गढ़ लिया। लड़ाई के बाद के जमाने में समाज-चेतना के साथ-साथ हाथ पकड़कर देशात्मबोध आया था। समाज की बुरी हालत देख-देख के चितानायक लोग दुश्चितग्रस्त हुए थे। एक अनिश्चित पापबोध तथा निराशा उनके मन में घर कर गयी थी। उनमें से कुछ ने रूढ़ सत्य से भागकर दुःखवाद तथा छायावाद की आड़ में पनाह लेना चाही थी। मुल्क के लोग पहले ही साफ समझ रहे थे कि मध्यवर्गीय नेता देश की समाज व्यवस्था को बचा नहीं पायेंगे। प्रतिष्ठित उपन्यासकारों में से एकमात्र बंगाल के ताराशंकर ने ही अपने चंद उपन्यासों में मध्यवर्गीय देश-हितेषिता का उच्छ्वास प्रकट किया था। साहित्यिक कृतियों के तौर पर उनके

दूसरे उपन्यासों के मुकाबले में वे निहायत ही सामान्य हैं। भारत का साम्यवादी आंदोलन भी उस समय नाबालिग था। फिर भी उस समय के कम्युनिस्टों ने आवाज उठायी थी कि स्वदेशी आंदोलन की अगली कतार पर मुल्क की मेहनतकश जनता यानी सर्वहारा वर्ग को आ खड़ा होना होगा। इन तमाम नारेबाजी को अनसुनी करके, गांधीजी ने अपने राष्ट्रीय आंदोलन का केंद्र गांव-गांव में स्थापित करना चाहा। उनका प्रयास कामयाब न होने पर भी, जिस नैतिक साहस के भरोसे वे काम पर उतरे थे, अंत तक वह बहुत ही विस्मयकारक रहा। देश की चोटी पर जो लोग रहे पहली बार उन्होंने निचले स्तर के आम लोगों की ओर देखा। चित्तरंजन दास ने अपने 'देशेर कथा' किताब में बंगाली युवा समाज को जनता के हित के लिए स्वयं को समर्पित करने के लिए पुकारा। इस पुकार में आवेग था मगर कोई निश्चित दिशा संकेत नहीं था। उन दिनों ही असम साहित्य सभा के वार्षिक अधिवेशन में अध्यक्षता करते असम के ऊंचे ओहदे पर आसीन एक राज कर्मचारी ने असमीया लेखक समाज के निराश प्रेम को लेकर नाहक हाय-तौबा मचाने के बजाय मुल्क की पीड़ित व वंचित आम जनता की ओर देखने का उपदेश दिया था। यह कुछ भी हो, मगर मुल्क के ऊंचे तबके के जो लोग हैं, वे सोवियत रूस के बारे में थोड़ी-बहुत खबर तो रखते ही थे। जाति भावना से अपने मुल्क की गरीब जनता के प्रति वे भले ही ममता का अनुभव करें—मगर उनमें से ही एक दिन विद्रोह का विस्फोट हो सकता है—इस आशंका से उन्हें भला मुक्ति कैसे मिलती? लिहाजा एक ओर जनसंतोष, दूसरी ओर संशय के बीच उनका चित्त डोलने लगता था। माणिक बंद्योपाध्याय के अन्यतम श्रेष्ठ उपन्यास के नायक शशी को जब तक उसके गांव के आम इंसान की कृपा तथा करुणा के पात्र के रूप में देखा, तब तक उनका संशय तथा निराशा दूर नहीं हुई।

असमीया साहित्य के आरंभ के उपन्यासों के लेखक मध्यवर्गीय परिवारों की संतान थे। किसी के पिता सरकारी नौकरशाह थे या अंग्रेज चायबागान के या सौदागरी दफ्तर के नौकरी-पेशा थे। उनकी शिक्षा-दीक्षा कलकत्ता शहर में हुई थी। वहां से ही उन दिनों के बंगाली संस्कृति के सूत्र वे लोग पश्चिमी सभ्यता के सम्पर्क में आये थे। विभिन्न क्षेत्रों में बंगालियों के कार्यकलापों के बारे में वे ऊंची राय रखते थे। पूरब तथा पश्चिम की समन्वित भावधारा बंगालियों ने ही अपनायी थी, वास्तव में यह भावधारा प्रभुत्व शक्ति की दलाली मात्र है और इसके सामन्त-तंत्र के सफाये के बजाय उल्टे छद्मवेश में वह मजबूत होता रहेगा, यह वे समझ नहीं पाये थे। मगर अच्छी बात यह थी कि, असमीया साहित्य के इन कृतिकारों के मन में बंगाली राष्ट्रीयता के हमलावर तेवर के बारे में आशंका रही। बृहत्तर बंगाल में उनकी भाषा, संस्कृति तथा उनकी विशेष सत्ता कहीं खो न जाए—इसके लिए पूरी ताकत लगाकर उन्होंने संग्राम किया था। इस उग्र प्रतिक्रिया के

फलस्वरूप वे लोग जिन्होंने बहुत बाद में अपनी सामंती परंपरा में पनाह ली थी, इस बात को उस समय वे समझ नहीं पाये थे। दोनों पड़ोसी प्रदेशों की इस आपसी होड़ को देख बरतानवी शासक वर्ग बहुत ही खुश हुए थे इस बात को कहने की आवश्यकता नहीं है। असमीया उपन्यास साहित्य के अन्यतम प्रवर्तक रजनीकांत बरदले ने असम को सामंती परंपरा ढोनेवाली विभिन्न प्रथा तथा विधि-निषेधों की अमानवीय हृदयहीनता से लोगों को परिचित कराया था। परंपरा से जो तमाम संस्कार बड़े ही आदर के साथ स्थापित थे, उनके खिलाफ उन्होंने हथियार उठाया था। ऐसा होने के बावजूद पड़ोसी बंगला साहित्य के उपन्यासकार शरतचंद्र ने जब नैतिक चरित्र के भले-बुरे विचार पर चालू मूल्यांकन की खिलाफत की थी, रजनीकांत ने ऐसी आशंका प्रकट की थी कि इसके फलस्वरूप समाज का पतन हो सकता है। उस समय के लेखकों में निस्संदेह लक्ष्मीनाथ बेजबरुआ समझदारी में श्रेष्ठ थे। वे कहते थे, पाश्चात्य विज्ञान के साथ भारत की आध्यात्मिकता का मेल कराना बुद्धि की पराकाष्ठा है। असमीया उपन्यासकारों में उत्कर्ष की ऊंचाई में जो पहले पहुंचे थे, उस हेमचन्द्र बरुआ ने भद्र समाज के गुरुजनों के खोखले ढोंग को लेकर एक तीखी व्यंग्य रचना की। मगर समाज व्यवस्था के एक भटकाव को लेकर शृंगारात्मक रचना के तौर पर उन्नीसवीं सदी की बंगला किताब 'हुतोम पेंचार नक्शा' में परिहास का जो स्रोत व उच्छ्वास दिखता है, हेमचंद्र की रचना में नहीं है। हालांकि आसानी से उसके कारण का पता लगाया जा सकता है। कंपनी के जमाने में कलकत्ता व्यापार धंधे का प्राण केंद्र था। राजधानी कलकत्ते की दलाल संस्कृति में प्राणशक्ति का प्राचुर्य था, सुदूर कस्बे में वह कैसे मिलेगा। इसीलिए पूर्ववर्तियों में अगुआ होकर भी, रजनीकांत ने अगल-बगल या सामने की ओर न देखकर, अपने दूसरे समसामयिकों की तरह पीछे की ओर नजर रखी थी। उन्होंने अपने उपन्यास का मालमसाला असम देश के इतिहास के पन्नों में खोजा था। असम के अतीत के गौरव को लेकर एक ओर जैसी हाय-तौबा उन्होंने मचायी थी, उसी तरह समाजवाद के निर्मम तथा वीभत्स पक्ष की ओर उंगली उठाकर दिखाने में नहीं चूके। उसके साथ उनकी रचना ने एक ऐसी समाज व्यवस्था की कल्पना की, जहां इंसान निर्भीक रूप से आजादी के साथ जिन्दगी गुजार सके। मगर अंग्रेजों के प्रति उनकी प्रभुभक्ति गहरी थी और अंतिम दिनों में तांत्रिक प्रक्रिया में उनकी आसक्ति जम गयी थी।

विश्व युद्ध का विश्व-यज्ञ पूरा होने के बाद 1918 में भारत के इतिहास ने नया मोड़ लिया। साम्राज्यवादी ताकतें उनके अपने मुल्कों में फंसे संकट से परेशान होकर उसे संभालने के लिए अपना बोझ अपने-अपने उपनिवेशों पर डालने लगी। उपनिवेश का बुर्जुआ समाज बोझा ढोने का आदी होने के बावजूद अपनी सहन सीमा की अंतिम कगार पर पहुंच चुका था। तिलक तथा गांधी की तरह वे भी

समझ गये कि लड़ते हुए प्रभुशक्ति की मदद के लिए जी-जान से कोशिश करने के बावजूद, अंत में कोई फायदा नहीं होता। ऊपर से उस समय रोजमर्रे की जरूरी चीजों की कमी झेलनी पड़ती है। बाजार में चीज अगर मिली भी तो उसकी कीमत आसमान को छूती रहती है और लोगों की पहुंच के बाहर होती है। भारत का किसान समाज अब बेचैन हो उठा। लड़ाई से वापस आये लड़ाकू लोगों ने देश भर के इस असंतोष की आग को और भी उकसा दिया। लड़ाई के दिनों में उन्होंने बाहरी दुनिया को देखा है, विप्लव-विद्रोह की कहानियां सुनी हैं, साम्राज्यवादियों की कमजोरी क्या है, वह ये समझ गये थे। मांटेग्यू-चेम्सफोर्ड शासन संस्कार के प्रस्ताव से भारत के राष्ट्रवादी लोग जरा भी खुश नहीं हो पाये। रोलट कानून के कारण तथा जलियांवाला बाग के हत्याकांड के फलस्वरूप विदेशी शासन के खिलाफ भारतीयों का मनोभाव क्रमशः अनमनीय हो उठा। सारा देश एक स्वर में बोल उठा 'शैतानों का शासन रोकना होगा'। देश के नेता लोग गांव-गांव में पीड़ित जनता की बगल में आकर खड़े होने लगे, लगा प्रभुत्वभक्ति के साथ सीधी लड़ाई अब करीब आ गई है। अखिल भारतीय किसान सभा सक्रिय हो उठी। अखिल भारतीय कांग्रेस को उनके साथ समझौता करना पड़ा। राष्ट्रीय आंदोलन की लहर दूर असम तक आ पहुंची। उस हलचल के फलस्वरूप असम की अभी-अभी बनी प्रदेश कांग्रेस ने 1920 के वार्षिक सम्मेलन असम में करने के लिए बुलाया। इसी बीच बीसवीं सदी के शुरू से असम के समाज सुधारक तथा भक्तों के मिले-जुले प्रयास से अफीम-विरोधी आंदोलन तेज़ी से सफलता की दिशा में आगे बढ़ने लगा। उस समय से 'कानिखोर' यानी 'अफीमखोरों' की संख्या कम नहीं थी। आमतौर पर समकालीन या उसके बाद के जमाने के असमिया उपन्यासों में देशहितैषिता का स्रोत बेरोकटोक था। मुट्ठी-भर लेखकों को उस समय भी समझ में नहीं आया कि अधिकतर सेवा तथा आत्मबलिदान की जो तस्वीर उकेरी गयी थी, असल में वह भले आदमी का मुखौटा ओढ़कर बुर्जुआ हित का समर्थन था। जनता के बीच इस तमाम आदर्श का प्रचार करना कठिन है, इसलिए ये तमाम लेखक आदर्श के सवाल से कतरा गये थे। इतने दिनों में जनता ने समझ लिया कि 'देहाती' व 'निर्बोध' कहकर भद्र समाज ने इतने दिनों तक जो उनकी उपेक्षा की तथा उनका मजाक उड़ाया था, वास्तव में वे लोग उतने बेवकूफ नहीं हैं।

इस जमाने की श्रेष्ठ कृति है बीणा बरुआ का 'जीवनेर बाटत' (जिन्दगी की राह में)। भाव की गहराई में, संवेदनशीलता में, तटस्थ यथार्थपरक नजरिया तथा इतिहास चेतना से समृद्ध यह रचना असमीया उपन्यास की तरक्की की शुरुआत थी। आधुनिक युग में भारतीय भाषा में रचित श्रेष्ठ उपन्यासों में 'जीवनेर बाटत' निस्संदेह उल्लेखनीय है। (प्रसंगवश यहां कहा जा सकता है कि इस असमीया उपन्यास की कथा धारा को बरकरार रखने के लिए रवीन्द्र संगीत का व्यंजनामय

सार्थक प्रयोग बंगला की देन है।) इस उपन्यास की विषयवस्तु दो अलग-अलग मगर समानांतर समाज का चित्ररूप है। एक ओर बंद गड्ढे की तरह गांव समाज का निश्चल-निष्प्राण, कुसंस्कार तथा अज्ञानता से घिरा हुआ जीवन है तो दूसरी तरफ ऋतुचक्र तथा अवसरवादियों (महाजन, सरकारी नौकरशाह, पण्डे-पुरोहित) की स्वाभाविक साजिशें इनकी जिन्दगी को नियंत्रित करती हैं। इस दुःख-दुर्दशा के बीच में भी इस देहाती जिन्दगी की अनाडम्बर शांत मर्यादा को कोई भी क्षुण्ण नहीं कर सकता। अगल-बगल है शिक्षित या अर्द्ध-शिक्षित शहरी बाबुओं का समाज —उनके लालची जीवन में कहीं भी गहराई नहीं है। इस बाबू समाज के कुलतिलक एक तरुण अपने नाम के पीछे डिग्रियों की पूंछ जोड़ता जाता है। देहाती इलाके में छुट्टी गुजारने जाकर एक सहज सुन्दरी निहायत भोली-भाली देहाती लड़की से उसकी अचानक मुलाकात हो जाती है। परपुरुष के साथ मेलजोल की पाबंदी लांघकर शिक्षित तरुण ने उस अशिक्षित तरुणी का दिल जीत लिया। शहर में लौटकर उसे अधिक तनख्वाह वाली नौकरी पाने के साथ-साथ शहर की एक सुशिक्षित पत्नी मिल गयी जिसकी रुचि मार्जित थी। तरुण गृहस्वामी की पदोन्नति अपनी शंबुक गति से होने लगी, तरुणी पत्नी उससे नाराज तथा नाखुश रहने लगी, क्योंकि अमीर बाप के घर में अमीरी से रहने की वह आदी थी। इधर प्रथम प्रेम की निन्दा तथा कुत्सा से उबरने के बाद गांव के स्कूल के सदाशय शिक्षक से उसकी शादी हुई। असमय पतिवियोग के कारण सुखी विवाहित जीवन में छेद पड़ गया। तरुणी विधवा का हृदय फटता रहा मगर जुबान नहीं खुली। ऊपर से वह रूढ़िवादी देहाती समाज की लड़की है। फिर भी प्रथम प्रेम की वह सुखद स्मृति उसके मन में झलक दे जाती है। कहानी जब चरम परिणति में पहुंचती है उस समय उसे मुजरिम के कटघरे में देखा गया। जिस इजलास में उसका न्याय होना है उस न्यायाधीश के आसन पर बैठा था उसके पहले प्यार का नायक। मुजरिम को पहचान कर जज साहब संकट में पड़ गये। दुःख में, यंत्रणा में, क्षोभ में, पश्चाताप में उन्होंने अपने को घिरा पाया। कहानी के संक्षिप्त कथासार से लेखक की काव्यमय भाषा के बाद भी भावुकताविहीन अनुभूति की सूक्ष्मता, भावावेग का प्राचुर्य तथा परिणत नीतिबोध के उज्ज्वल प्रकाश का अंदाजा नहीं लगाया जा सकता। नायिका टगर का चरित्र ठोस तथा व्यक्ति स्वातंत्र्य में वह विशिष्ट है। एक ओर इतिहास है, जिसकी माया में हिन्दू रमणी आदर्श में महीयसी है दूसरी ओर है प्रेम में पागल, साध्वी स्त्री तथा शुद्धचारिणी विधवा। जैसा विचित्र उसका वाक् संयम है वैसी ही विचित्र है उसकी वाक्पटुता। असम की पल्ली संस्कृति मे उखड़ी हुई इस नारी के मुकाबले में दूसरा कोई चरित्र दिखाई नहीं पड़ता। जिन अमार्जित शहरी लोगों के हाथ में पड़कर टगर की इतनी फजीहत हुई उसका चरित्र उकेरते जाकर भी लेखक ने अविचार नहीं किया, बल्कि सहानुभूति के साथ समझा

दिया है कि असल में वह व्यक्ति कठोर हृदय नहीं था। असल में परजीवी शहर के साथ कुंठित शोषित देहात के सम्बन्ध विस्तार से उकेरते जाकर इस प्रतीक-चरित्र की अवधारणा की गयी है। टगर का पति धरणी देशभक्त था, देश की आम जनता से वह दिलोजान से प्यार करता था। घुट-घुटकर धरणी की मौत की घटना खास आशय रखती है। गोलाप ताण्डनर की निराशा भी उसी तरह तात्पर्य-पूर्ण है। फल का लोभ न रखकर ताण्डनर ने सेवा का काम चलाये रखना चाहा था।

आजादी-आंदोलन की लहर उस समय समुद्र-सी थी, उस लहर में प्रतिकार-हीन पापबोध बह गया था। बहुसंख्यक लोगों के लिए न होने पर भी, कम-से-कम बुद्धिजीवी वर्ग को आज़ादी ने कुछ समय के लिए सम्मोहित कर दिया था। आज़ादी हासिल करने के तुरन्त बाद के जमाने का विस्फोट 'कपिली परीया साधु' उपन्यास में दिखाई पड़ता है। परिणत मन का वास्तविक बोध या गहराई जो कि 'जीवनेर बाटत' किताब में साफ झलकती है, इस किताब में वह दिखाई नहीं पड़ती। इसमें भाषा की उच्छ्वास की मात्रा बीच-बीच में पीड़ादायक है। इस किताब के आदर्श चरित्र गोसाईं की तरह दूसरे चरित्र भी मानो छाया की तरह उभर आते हैं और फिर छाया की तरह गायब हो जाते हैं। ऐसा लगता है, मानो इस किताब में लेखक ने अपने हृदयावेग की गांठ खोलनी चाही है। कहीं-कहीं अनुभव की कमी को अनु-भूति की गहराई से मिटाना चाहा है। खास-खास भाव की व्यंजना खासकर टुकुल गोष्ठी की बाढ़ को अप्रतिहत गति से लाकर प्राकृतिक दृश्यों की बहुरंगी वर्णन की सृष्टि की है। अपनी पहुंच के अन्दर जो मध्यवर्गीय समाज था उससे कतराकर लेखक ने आम आदमियों के बीच से नायक का चरित्र खड़ा किया है। आज़ादी के आंदोलन के अन्तिम दौर में जनसमुद्र का ज्वार आया था, लाखों लाख लोग उस भरी ज्वार में बह गये थे। नायक उन्हीं लोगों में से एक है। इस उपन्यास की रचना करते वक्त वे बिहार के जन आंदोलन पर आधारित सतीनाथ भादुड़ी के बंगला उपन्यास 'ढोढाई चरित मानस' से बुरी तरह प्रभावित थे, यह एक घरेलू बैठक में लेखक ने स्वीकार किया था। चालीस के दशक के इस आंदोलन में सतीनाथ खुद शामिल थे और आम जनता की हिम्मत, ताकत तथा दृढ़ता देखकर मुग्ध हुए थे।

इस उपन्यास का नायक असम के हिन्दू भावापन्न एक पनजाति की संतान हैं। उपन्यास की घटना से बहुत पहले 1880 में सर एडवर्ड गेट ने कहा था, ये तमाम हिन्दू भावापन्न जनजातियां असमीया जन समाज की रीढ़ हैं। शहरी इन्सान की तरह वे लोग अहं से पूर्ण नहीं हैं, अपने अधिकार कायम करने के लिए वे लोग किसी तरह की ताकत का प्रयोग करने के लिए तैयार नहीं होते। वे तैरते रहते हैं, हित का हिसाब-किताब नहीं समझते। उनकी बेहिसाबी जीवन नदी में प्रचण्ड आवेग से उतरती है—भयंकर बाढ़ सब कुछ बहा ले जाती है, पीछे छोड़ जाती

है चिकनी मिट्टी। इन तमाम जनजातियों, उपजातियों तथा उनके पड़ोसियों की जीवनधारा नियंत्रित करती है नदी। नदी के गतिवेग के साथ छंद में उनकी धमनी का खून स्पंदित होता है। (जनजाति जीवन में नदी का प्रतीक प्रभाव लेखक ने बहुत व्यापक बनाना चाहा है। जहां वे रेखांकित नहीं करते वहां वे इस काम में सफल हुए हैं।) अभियान तथा आविष्कार के फलस्वरूप नायक का चित्र आशा-निराशा के द्वन्द्व में झूलता रहता है। अन्त में खून मांस से बनी जिस रमणी के देह-सम्बन्ध से उसका चरितार्थ होना सम्भव हुआ था, अन्त में लेखक तथा नायक की मिली-जुली भावना की जलती पूजा की वेदी पर बैठकर भरी हुई नदी में उसे विसर्जन देना पड़ा। मिलन के आनन्द के वर्णन में लेखनी प्रखर है, मगर विच्छेद की हृदयहीनता ढंकने की बजाय लेखक ने चंद अस्पष्ट बातों की आड़ में रचना की है। इस तरह का अन्त न करने पर कोई नुकसान नही था। मगर तरुण उम्र की कपोल कल्पना को युक्ति तर्क की लगाम लगाते चाहना विडम्बना ही है। निताई की मौत में उस पापबोध का आभास मिलता है। देखकर लगता है नायक चूंकि रास्ते में पड़ा पाया हुआ लड़का है और चूंकि जन्मगत कोई सामाजिक बंधन उसका नहीं है उस कारण से ही मानो वह जीवन के साथ किसी बंधन में बंधना नहीं चाहता। उन तमाम बंधनों को तोड़ने के लिए उसे जिस चरित्र जैसा होना चाहिए, लेखक ने वैसा ही उसे उकेरा है। केवल आज़ादी के आंदोलन से जुड़ने के अनुभव ने नायक के महत्वबोध को जगा दिया, चित्त को प्रेरित किया और स्थिर लक्ष्य पथ को दिशा दी है। संभवतया यही एकमात्र रास्ता है, जिस रास्ते से घर का लड़का घर वापस लौटता है।

—हिरन गोहैन

लेखक की ओर से

(मूल असमिया उपन्यास में)

यह कहानी काल्पनिक है। यदि किसी को इसमें परिचित, अर्द्धपरिचित कोई मिल जाये तो उसका दोष सम्भवत: मुझे स्पर्श नहीं करेगा। क्योंकि, कपिली के किनारे की एक कहानी गल्प से अधिक सच नहीं है। दूसरी ओर मुझे आत्मसन्तुष्टि भी यथेष्ट मिलेगी; क्योंकि कहानी के रूपाइ और उसके संस्पर्श में आने वाले दूसरे लोग मेरे लिए मांसल ही हैं। एक जीवनी में आवश्यकता से अधिक कल्पना का पुट भी, मेरा विश्वास है, मैंने नहीं दिया है। बाकी सारी बातें आप लोगों के हाथों में हैं।

पुस्तक में त्रुटियों का अभाव नहीं है। कुछ त्रुटियां छापेखाने की हैं, कुछ बेकार ही शीघ्रता से छापेखाने में भेजने की हैं, और दुःख के साथ मैं स्वीकार करता हूं, इनमें से बहुत सारे मेरे अधकचरे ज्ञान और अज्ञानता के कारण हुई हैं। कहानी है, इसलिए क्षमा-याचना करने के लिए साहस कर रहा हूं।

लिखने के लिए आरम्भ करने के समय छापाखाने में भेजने के समय और उससे निकलने तक इसकी तैयारी से विभिन्न समय में मुझे कई एक की स्वार्थहीन सहायता मिली है। विदेशी नीति के अनुसार केवल उनके नाम का उल्लेख कर देने से ही ऋण चुकाया जा सकेगा, मेरे हार्दिक आभार भी उसके लिए यथेष्ट नहीं हैं··· मैं उनके पास ऋणी ही रहा। [illegible]। कान्तश्री, नगाओं, असम। आषाढ़ की पूर्णिमा। 503 शंकराब्द।

लेखक

कन्दसी। आकाश भी नाम है। आकाश रोता है। खासी पहाड़ी में बारिश होती है। बरफानी नदी पानी में भर जाती है। जयन्तीया पहाड़ में मौसम आरम्भ होता है। उमियाम की लहरों में सांप की पूंछ को तोड़ने वाली तीव्र गति है। पहाड़ों को धोकर आने वाला पानी है, जूम-खेती को उपजाऊ बनाने वाला पानी है, जो किलिङ नदी की छाती को चीरकर सशब्द उतर आता है रास्ते के मुहल्ले-बस्तियों को रौंदकर।

हाफलङ-माङबङ के कछारी गांवों में ढोलक बजती है। आकाश पर भी बजता है, दैयाङ नदी में सबका नाश करने वाली बाढ़ आती है, एक पहाड़ से दूसरे पहाड़··· इठलाकर···। मिकिर पहाड़ी की कपास की फसल को बारिश भिगो जाती है··· मिकिर बालाएं लाख के कीड़े वाले पेड़ों की रखवाली करती हैं···उनके पैरों के नीचे से बहने वाली यमुना नदी, पानी से भर जाती है।

कपिली नदी को सभी आकर पानी का उपहार देती हैं। कपिली इतने उपहार को सहन नहीं कर पाती। उसकी संकरी छाती एहसास से भर जाती है। कपिली के दोनों कूलों के ऊपर से पानी बहने लगता है। मैदान डूब जाते हैं। सुपारी और खट्टे फलों के बगीचे में पहले घुटनों तक पानी होता है, इसके बाद कमर तक और फिर छाती तक पानी भर जाता है। पानी आंगन तक पहुंच जाता है—आंगन में सांप खेलने लगते हैं। भीतर फर्श पर पानी के साथ किनारे पर आने वाली कौवे-मछली की पंक्तियां लगती हैं। सवेरे के समय आंगन में घुटनों तक पानी होता है···शाम तक छाती तक भर जाता है···दीवारों की मिट्टी गलकर छप्-छप् आवाज करके ढहती है। शाम तक ऊपर छत के बेंत की गांठ पानी के कारण खुल जाती है। बाढ़ है। नगाओं जिले का आधा एक अथाह समुद्र बन जाता है। कहीं-कहीं दो-चार गांव ही बिना डूबे दिखाई पड़ते हैं। मवेशी बह जाते हैं। मनुष्य जाकर टापुओं में पनाह लेते हैं। आदमी मरता है। पानी में—जमीन में—बीमारी में—अनाहार में।

'रिलीफ' की नाव आती है। एक दिन के लिए आध-पाव चावल, दो दिन के लिए एक छटांक दाल, हफ्ते भर के लिए आधा छटांक तेल दिया जाता है। कुछ कपड़े भी—दो गज मारकीन कपड़ा, आधा हिस्सा कम्बल भी है। बीमारी आरंभ होती है। कुनैन आती है, डॉक्टर आता है।

शहर में छोटे-छोटे बाल-बच्चे—भीख दो बाबा, जीवन की रक्षा करो—बह जाते हैं वे कपिली बाढ़ में—यह गाना गाकर अनाथ आश्रम के गेरुआ कपड़े पहनकर

भिक्षा मांगने वालों की तरह ही भिक्षा मांगते-फिरते हैं। और जगहों मे भी सहायता आती है, सरकार से सहायता आती है। वकीलखाने में चर्चा होती है कौन कितना हड़प सका—अर्थात 'रिलीफ' की रकमों से कौन-कौन धनी बने।

दिन फिर आगे बढ़ता है। कपिली सूख जाती है। तलोंछ जमे हुए मैदान में 'शालि' धान की फसल होती है। लोग भूल जाते हैं। तहस-नहस होने वाले गांव पुन: सजीव हो उठते हैं।

यही कपिली नदी है। नगाओं का आंसू है। अखबार लिखता है। किन्तु कपिली के किनारे वाले लोग जानते हैं—कपिली आनन्दाश्रु भी है—निरानन्दाश्रु भी है। बाढ़ के पानी के द्वारा कपिली उनका अनिष्ट करती है। कपिली के पानी द्वारा ही उनके मैदानों को उपजाऊ बनाती है। कपिली का साफ पानी ही उनकी प्यास बुझाता है। कपिली होकर ही उनका व्यवसाय-वाणिज्य चलता है। आज का नहीं राजाओं के दिन से ही। गोभा, नेली, डिमरुवा आदि छोटे-छोटे राजे-रजवाड़े कपिली के किनारे ही राज करते थे। आहोम और जयन्तीया के झगड़ों के कई युद्ध-स्थल इसी कपिली के किनारे पर ही थे। जयन्तीया का हंसोड़ राजदूत कपिली होकर जागी की चौकी में पत्र-संदेश दे जाता था। तीन राजे-रजवाड़े बीच-बीच में बगावत करते थे, फुलगुरिका हाट बंद कर देते थे। रास्ता बंद कर देते थे। का 'कपिली' अर्थात् कपिली मां को उन दिनों जयन्तीया राजा ने हर वर्ष मनुष्य को उत्सर्गित किया था।

कपिली ही कपिली के किनारे पर बसने वालों का जीवन है। कपिली जिंदा नदी है। उनके जीवन और मृत्यु के साथ यह जिंदा नदी ओतप्रोत रहती है।

उस कपिली के आर-पार की कहानी सुनाना चाहता है। सूखी 'कलंग' के किनारे पर बसने वाला एक कवि, 'कलङक' जो सोता मर गया है, कपिली उसमे पानी भर देती है। कलङ तब ऊपर की ओर बहने लगती है।

राजा-रजवाड़े का देश है—बारपूजीया, गोभा, नेली, खला डिमर रवा—इस प्रकार कुल मिलाकर बारह परिवार हैं। सिंह हैं, लिखते हैं सिङ आहोम शासन के समय दो-चार व्यक्तियों को राजखोवा का सम्मान भी मिला था। कछारियों को दबाने के लिए कपिली होकर जाने वाले पानी फुकन-सेनापति को तोप, बारूद और रसद देकर सहायता देने वालों में ये ही राजे-रजवाड़े थे। पहले के शहर से दूर बसने वाले लोग हैं। इधर कुछ शरणीया लोग भी आ बसे हैं। लेकिन इनकी उपाधि लिखते है राजा। मनसिंह राजा।

बर्मियों के आक्रमण के कारण छिन्न-भिन्न होने वाले इतिहास के पन्ने जब पुन: एकत्र हुए उसके बहुत बाद को रजवाड़ा मानसिंह को हम पाते हैं कपिली के किनारे के भुरबंधा गांव में।

कपिली पहले की तरह ही है। तीन सिरवाले परदादा के मुंह से सुना हुआ

बरपानी के कपिली के साथ मिलने के स्थान का घुमाव उसके पास ही गायन-बायन का वह गहरा पानी—सभी एकसे अब भी हैं। प्रति वर्ष दो नावें वहां डूबेंगी ही। व्यापारी नाव अब भी वहां से होकर जाते समय पान और सुपारी चढ़ाये बिना चप्पू चलाती ही नहीं। कहते हैं कि वहां जल-कुंवरदेवी का भूल भुलैया भवन है। वहीं कमला कुमारी जलदेवी बनकर रह रही है। कमला देवी पहले मनुष्य ही थी। देश के मंगल की खातिर जल-कुंवर को उत्सर्गित हुई। मनुष्य की बेटी है, बीच-बीच में वह मनुष्य को देखने के लिए व्याकुल हो उठती है। उस समय जल-कुंवर जहां तक हो सके कपिली से मनुष्यों को पकड़कर ले जाता है। उस समय ही कमला देवी शान्त होती है। उसके बाद ही कपिली के किनारे के खेत की हरी फसल सुनहरी बनती है।

जल-कुंवर के मुल्क से लौटने वाले लोग भी थे। उन्हें गुवालपरीया खानदान कहा जाता है। काजली नदी के ऊपर की ओर होकर गुवालपारा की एक नाव में बैठा लाङचु लाख और कपास ले जाने के लिए आया था। उस समय कमला देवी दुःखी थी। बिहु के पश्चात् से ही उसका मन दुःखी था। जेठ के महीने में वह भी सूख जाती है, कपिली भी सूख जाती है। आषाढ़ के प्रारंभ में पगली-सी हो जाती है। कपिली भर जाती है। जल-कुंवर की नाव के साथ गुवालपरीया को खींचकर ले गया। साथ के लोगों की मृत्यु हुई। गुवालपरीया को इसलिए छोड़ दिया गया कि उसकी देह में दाग पड़ गया था। उसकी दायीं आंख में फुल्की पड़ गयी थी। कपिली की रेत पर ही वह पड़ा हुआ था। गाय चराने वाले लड़कों को वह मिल गया और उसे लाकर बाहर से आकर बसने वाले सन्तोष के अहाते के भीतर रख गये। सन्तोष कब यहा आया था गांव वालों को मालूम नहीं था। कहते हैं कि वह पांडुवा नाम के किसी स्थान का व्यापारी था। अन्त में डिमरुवा के रजवाड़े ने उसे बरुवा कर दिया था। उसके परिवार के लोग कहां गये किसी को भी मालूम नहीं है। केवल निशानी के रूप में मेड़वाली एक बारी है। इस समय वह मवेशियों के चरने का मैदान है। वही सन्तोष विदेशी का अहाता है। गुवालपरीया चंगा हो उठा। किन्तु वह लौटकर कमला देवी के बारे में कह सकता है, अतः जल-कुंवर ने उसे पागल बना दिया। और गुवालपरीया लौट नहीं गया। वहीं लोगों के घर मेहनत-मजदूरी करके गुजारा करने लगा। कुछ दिन के बाद फुटुकी बाई की बहरी नातिन सोनतरा के साथ उसका अवैध संबंध हुआ। गांव के लड़कों ने पकड़ कर उसे एक सबक सिखाया। किन्तु वह गांव वालों को डांट देकर सोनतरा के साथ ही रहने लगा। दो घुटने, एक सर। ये बहुत ही पुरानी बातें हैं। गुवालपरीया का परती अहाता अब भी है। चरवाहा लड़के वहां आंवला खोजने जाते हैं। कपिली का पानी उस अहाते को नहीं छूता। गुवालपरीया का परिवार अंग्रेज-जर्मन लड़ाई के बाद होने वाले इनफ्लेन ज्वर में उजड़ गया। अपवित्र स्थान हैं। इसलिए

कपिली नहीं छूती है । सन्तोष विदेशी के अहाते के मेढ़ बांध के जैसे ऊंचे हैं । वहां भी पानी नहीं घुसता ।

कपिली जिन्दा नदी है । कपिली चाहती है हरा-भरा संसार । परिवार, उनके खेत में तलोंछ डालकर उसे उपजाऊ बनायेगी । फिर उन्हें ही कष्ट देकर उसे आनंद मिलेगा ।

कपिली के किनारे वाले गांव दूसरी जगह नहीं चले जाते । प्रतिवर्ष डूबने पर भी नहीं जाते । छोटा राजा मानसिंह एक बार क्षेत्री की ओर जाकर बसना चाहता था । उस बार कपिली उसके बैल के जोड़े को ले गयी । रात को भकतधूलि बैरागी से कपिली ने सपने में कहा—छोटे राजा का लड़का यदि कपिली के किनारे से जाना है तो मैं भी पीछे-पीछे जाऊंगी । केश खुले हुए, दोनों आंखें मशाल की तरह जल रही थीं । उसकी आवाज मेघ के गर्जन-सी लग रही थी । इस तरह पते की बात सुनकर गांव वालों ने मानसिह को जाने से मना किया ।

मानसिह भी डर गया । कपिली में डूबकर मरने वाले बैलों के जोड़े की जगह एक जोड़ा नया बैल खरीदने के लिए गांव वालों ने चन्दा इकट्ठा करके दिया । अपने बेटे धीरसिंह के साथ जाकर फुलगुरि के हाट से मानसिंह एक जोड़ा बैल खरीद लाया जिनके अभी तीन ही दांत उगे थे ।

कपिली के किनारे बसने वाले लोग चाहे दुःख का दिन हो या सुख का, कभी भी कपिली के किनारे से नहीं चले जाते ।

धीरसिह का गांव पक्की सड़क से चार मील दूरी पर है । पहले गांव वालों की सड़क थी, इधर बाढ़ ने ली है । गुवालपरीया का परती अहाता गांव की दायीं ओर है । बीच में ही सन्तोष विदेशी का अहाता है ? यानी उस पांच एकड़ का मेढ़वाला चरागाह । उस ओर कपिली है । परती अहाते के पास से रास्ता है । बीच से भी है । गांव की बहू-बेटियां पानी भरने के लिए एक दूसरे रास्ते से जाती हैं । जरा घूमकर, सरसों के खेत के बीच से रास्ता है । काक-बांस के झुरमुटों के उस पार भूतनियां ताली बजाती हैं । छोटे लड़के या लड़कियां मिलने पर अपनी दीदी का भेस बनाकर फुसलाकर ले जाती हैं । इसलिए ठीक दोपहर के समय 'पात चेला' स्कूल के लड़के इधर आने से डरते हैं ।

पातचेला स्कूल में वैथाराम पण्डित काम करता है । असली घर जागी रोड में है । बनुवाबरा के छोटे वंश का है । स्कूल सवेरे लगता है । बच्चों को दोपहर को मवेशिया को चराना पड़ता है । बाजार आदि जाना पड़ता है । तीन दिन के बाद रूपाइ आज स्कूल आया है । इसलिए उनको मिश्र-घिउग (घटाव) का हिसाब नहीं आया । वह एक कोने में एक टांग पर ध्यानस्थ है । उनकी आंख कपिली पर है । कपिली में पश्चिमी सरूवा मछली पकड़ रहे है । कुछ समय पहले ही वे आये है । मछली पकड़कर वे अस्मतल ले जाते हैं । धरमत से मछलियां नीचे की तरफ

जाती है - गुवाहाटी को। जिले को भी जाती है—अर्थात् नगाओं शहर को। जिले के वकील लोग मछली को मिर्च से लाल करके खाते हैं। वह एक बार जिला गया था अपने पिता के साथ एक मुकदमे में चटाई के बराबर चौड़ी एक चितल मछली लेकर। वकील के घर उन्हें आंगन में खाने के लिए दिया था। काफी तीती करके पकायी गयी चितल मछली दी गयी थी। चितल मछली भी खाने में इतनी खराब लग सकती है! वह अचरज में पड़ गया। वकील की लड़की ने उसके चुटकी काटी। गोरी लड़की लाल फ्राक पहने हुई। उसने भी उसकी बांह पर चुटकी काट दी थी। उसने—'मां गो' कह के चिल्लाकर अपनी मां से कह दिया था।

"अरे, बाघ के मुंह में जाने वाले, इतने दिनों क्यों नहीं आया था?" 'महाशय' की धमकी सुनकर उसे लगा कि वह मानो नींद से ही जगा है। वह गूंगे की तरह वृथाराम पण्डित के मुंह की ओर ताकता रहा।

"गूंगा कब से बना है?" पण्डित ने धमकी देकर पूछा। "या झूठ बोलने के लिए शब्द ढूंढ़ रहा है, बदमाश।"

"दस्त हुआ था, महाशय···"

"नहीं, महाशय", 'महीमल' कन्टेक्‌दार मुहर्रर का लड़का नोमल कोने से ही चिल्ला उठा, "वह कपिली में मछली कैसे पकड़ी जाती है, उसे देखने गया था। कोमल और मैंने खुद देखा है।"

नोमल और कोमल सगे भाई हैं। बड़े ही दुष्ट हैं। कल कपिली के किनारे पश्चिमी मछुओं की मछली चोरी करते समय उन्होंने पीटा है। रूपाइ ने ही तो छुड़वा दिया था—किन्तु—।

वह झूठ बोल नहीं सका। पश्चिमी मछुआरों के मछली पकड़ने का ढंग देखने में सचमुच ही अच्छा लगता है। गांव के लोग जिस प्रकार जाल और मछली पकड़ने की दूसरी सामग्रियों को लेकर मछली पकड़ते हैं, वे उस प्रकार से नहीं पकड़ते। घाट-घाट पर मछली पकड़ने वाले जाल से भी वे मछली नहीं पकड़ते। बाघ पकड़ने वाले जाल की तरह एक जाल से नदी के करीब आधे तक घेरकर धीरे-धीरे समेटने लगते हैं। बहुत सारी मछलियां फंस जाती हैं। बड़ी-बड़ी शिलघरीया मछली फंस जाती है। शायद सभी को देखने की इच्छा होती है। नोमल आदि भी जाते हैं, किन्तु भूतनी के डर से अधिक समय नहीं ठहरते। उसको डर नहीं लगता। कपिली के किनारे उसको कुछ भी डर नहीं लगता। वह सब कुछ भूलकर वहीं बैठा रहता है। मछुओं के जाने के बाद भी।

वह झूठ नहीं बोलता। पण्डित ने आज उसकी सजा को बढ़ाकर उसे एक ढेले को लेते हुए मिट्टी में लोटपोट होनेवाले कृष्ण की तरह रहने के लिए कहा। पण्डित आज अपने मवेशियों को खोलकर आना भूल गया था। वह

बार-बार पीपल की छाया को देखता है। अभी रेलगाड़ी आयेगी। 'आघेर' अभी बजेंगे। 'आघेर' बजते ही छुट्टी हो जाएगी।

रेलगाड़ी की सीटी सुनते ही वेथाराम पण्डित ने 'स्कूल' को छुट्टी दे दी। शोर मचाकर लड़के बाहर दौड़ने लगे। "एकदम छुट्टी हुई- गरम-गरम रोटी मिली।" महीमल ठेकेदार के मुहर्रर के लड़के नोमल-कोमल कहीं सीखकर आये है।

वेथाराम पण्डित आज हाजरी लेना भूल गया था। उसने चिल्लाकर कहा "अरे, मत जा—ठहर—हाजरी ले लेने दे।" इसे सुनते ही लड़के भी एक दूसरे को चिल्लाकर बुलाने लगे। "अरे सुनो – नोमल महाशय ने बुलाया है। उसको भी बुला, अभी हाजरी ली जाएगी।"

सभी लड़के हल्ला मचा देते हैं।

पण्डित ने शून्य में ही हाथ के बेंत से प्रहार किया—"अरे, चुप रह।" लड़के इकट्ठे हो गये। मास्टर ने हाजरी ली। उपस्थित लड़कों ने, 'उपस्थित' कह कर अपनी-अपनी हाजरी दी और जो लड़के उपस्थित नहीं थे उनके बारे में आज मवेशियों की देखभाल करने की बारी। "मैं रास्ते में देख आया हूं।"- इस प्रकार के मन्तव्य दिये जाने लगे।

रोल नम्बर चौदह रूपाइ, वेथाराम पण्डित ने सिर उठाकर देखा। रूपाइ नहीं है। अभी कुछ ही देर पहले कृष्ण की तरह खड़े रहने वाला वह लड़का कहां भागा। लड़के चिल्लाये—"वह है, वह"—रूपाइ उस समय कपिली के किनारे की बाम्बी पर बैठा मछलियों का पकड़ना देख रहा था।

रूपाइ उसी स्वभाव का था। कपिली का कूल मिल जाय तो उसे और कुछ भी नहीं चाहिए।

कपिली के प्रति लगाव होना कपिली के किनारे बसने वालों की आदत ही है। यह आज की बात नहीं है। उस पुराने जमाने से ही वे कपिली के प्रति लगाव रखते आये हैं। जवान वहां नाव के खेल खेलते हैं। वैशाख के प्रथम बुधवार के दिन लालुंङ सम्प्रदाय के लोगों का 'बिहु' आरंभ होता है। जवान लड़कियां नाचती हैं। उस पार के जवान लड़के उन्हें चिढ़ाते हैं। जवान लड़कियां भी उलटे उन्हीं की खिल्ली उड़ाती हैं। कपिली में बाढ़ आती है। पौद का खेत डूब जाता है। डर के मारे लोगों को नींद नहीं आती। किसान खेत में खूंटी गाड़कर आते हैं। बित्ता-बित्ता दूर की खूंटी डूबने लगती है। फिर कई दिनों के बाद पानी उतर जाता है, नाले-परनालों में मछली छोड़कर। खेत में तलोंछ जमती है। शाली की खेती अच्छी होती है।

कपिली के किनारे के खड़े कगार की बांबी पर वह बैठा हुआ था। मछुवे केले के पत्तों में कुछ सानकर मिर्च डालकर खा रहे हैं। ये भात क्यों नहीं खाते, उसने सोचा। इतनी मछलियां पकड़ते हैं, क्या वे नहीं खाते? भात ही जब नहीं पकाते तो

मछली कैसे खायेंगे ? उसका कुतूहल बढ़ जाता है।

"तुम भात क्यों नहीं खाते ?"

उन्होंने पानी के किनारे से ही ऊपर की ओर आंखें उठाकर देखा। साफ नीला आकाश रूपाइ के पीछे की ओर होने के कारण वहां छाया की तरह दिखाई पड़ रहा था।

"क्या हुआ बच्चु ?"

"तुम लोग भात खायेगा नाइ किय ?" वह उनकी भाषा में ही बोलने का प्रयत्न करता है।

"अभी कौन पकायेगा —रात में काम नहीं है—तब पका के खायेगा।"

"तोमालो के ये इमानबोर माछ घरेगा—कि करेगा सेइबोर ?" यह जानता है कि मछलियां नीचे की ओर जाती हैं—जिला को जाती हैं। तो भी वह पूछता है।

"मछली सब 'तौन' जाता है—पाइकारी आदमी ले जाता है।"

"हां, तोमा लोकमाछ बेचेगा—हाम लोक माछ नाइ बेचेगा। पथार में माछ मारता है और पानी डालकर रखे हुए बासी भात के साथ जल्दी-जल्दी खाता है। काछ (कछुवा) पाने से मोज देगा· · ·"

दूसरों की भाषा में बातें करने के आनन्द में ही वह ओर-छोर का खयाल किये बिना ही बातें करता जाता है।

"तुम लोग को धान है ? तुम लोग माछ का व्यापार काहे करेगा—हाम लोक धान किनता (खरीदता) है, साग किनता है, सातु (सत्तू) किनता है· · ·"

"सातु क्या है ?"

"अभी हम लोग जो खाया· · ·बूट का गुड़ा· · ·"

"माह (दाल) की बुकनी ! हाम लोग भी खाता है। किन्तु बुट (चना) की बुकनी नहीं · खेसारी दाल की बुकनी· · ·भात का लग में खायेगा।"

वे जाकर जाल को धीरे-धीरे समेट लाते हैं। जाल को पूरा उठा लाते हैं। छोटी-छोटी सफेद बहुत सारी मछलियां हैं—एलेङ, माङन। दो आंरि मछली हैं। कई मकुवा मछली हैं। एक बहुत बड़ी मछली जिसका नाम वह नहीं जानता।

वह किनारे पर से ही चिल्ला उठा—"वह कौन-सी मछली है ? वह—वह, हां वह है· · ·"

मछुवे उसकी बातों के प्रति बिना ध्यान दिये मछली बीनने लग गये थे। धूप में मछलियां चमक रही हैं· · ·बड़ी-बड़ी खील की तरह। बड़ी-सी मछली कराह रही है। मछली की उस तरह की अजनबी आवाज उसने कभी नहीं सुनी थी।

"अरे भैया, वह कौन-सी मछली है—बोलो ना—भैंसे के बछड़े की तरह जो कराह रही है ?"

एक आदमी ने विरक्ति के स्वर में कहा "यह गडवा मछली है... मुसलमान लोग खाते हैं।"

गडवा मछली अत्यधिक छटपटा रही थी। दोनों मछुवों ने मछली को पकड़ लिया और उसके सांस लेने के रास्ते से एक हाथ घुसाकर उसके गले को डुबा दिया। मछली दोनों आदमियों को उछाल देना चाहती है। उनके हाथों में मछली का खून सन गया। मछली के मुह से खून निकलकर उसका सारा सिर लथ-पथ हो जाता है। माघ बिहु की लड़ाई में उनकी भैंस भी इस प्रकार खून से लथ-पथ हो गयी। भैंस की तरह यह मछली भी अन्तिम क्षण गिन रही है। मछुवों ने कपिली के पानी में अपने हाथ धोये, लाल रंग पतला होकर पानी के साथ मिल गया। कपिली के पानी में कितना खून मिला हुआ है ?

"ओ, रुपाइ, रुपाइ रे..."

मैदान के उस पार से किसी ने उसे बुलाया है। वह उठ पड़ा। गडवा मछली उस समय भी कराह रही थी —उसके चाचा को दमा का दौरा पड़ने के समय जिस प्रकार होता है। उसका चाचा ही उसे बुला रहा था। उसको यकायक याद आया - आज उसके हाट जाने की बात थी। 'इसकूल' से उसे हाट जाना था पान-सुपारी लेकर। नखोला में हाट है। चार मील की दूरी है। आज उसकी पीठ नहीं बचेगी।

चाचा का कुबड़ा शरीर रास्ते से आगे बढ़ आता है। आंख पर सीधे सूरज की रोशनी पड़ने के कारण दायें हाथ से दोनों आंखों पर उसने छाया कर ली थी। चाचा ने फिर आवाज दी—रुपाइ, ओ रुपाइ।"

वह इसी बीच दौड़कर परती अहाते के बीच के छोटे रास्ते से जाकर चाचा के बिलकुल नीचे आ निकला। चाचा ने उलट के देखा। वह खिलखिलाकर हंस दिया। चाचा ने धमकी दी —"अरे, हाट-बाजार तू यदि जाना नहीं चाहता तो किताब-'सिलट' कहां से आयेगा ? चल।"

वह जाकर चाचा की बांह पर लटक गया—"देखूं, हट... रात-दिन सिर्फ कपिली और कपिली —मालूम ही नहीं होता कि उसके किनारे तू क्या करता है..." कराहते-कराहते चाचा की आवाज बन्द हो जाती है।

"क्या छाती को मल दूं—चाचा ?" चाचा यों बड़ा ऊधम मचाता है... किन्तु खांसी के कारण वह रुपाइ के वश में रहता है। रुपाइ खूब अच्छी तरह से चाचा की छाती को मल देता है।

रुपाइ घूमकर कपिली की ओर देखता है। पानी पर पड़ी धूप के कारण लहरें चमक रही हैं। उसके बचपन में ये मगर की आंखें कहकर चाचा ने उसे डराया था। वह गडवा मछली शायद मर गयी है। उसका चाचा भी यदि... धत् ! चाचा के मरने से उसे चिड़िया पकड़ने के लिए फन्दा बनाकर कौन देगा ?

रात को जागकर जब उसकी दादी ने रुपाइ को बिस्तर पर टटोला तो वह वहां नहीं मिला। "बाहर गया होगा"—दादी करवट बदलकर सो गयी। फिर एक बार वह और जगी—अपने छोटे बेटे, यानी चाचा के खांसने से। फिर उसने देखा, रुपाइ नहीं है।

"अरे छोटे, उठ तो बेटे!"

"क्यों ?" चाचा पहले से ही जगा हुआ था।

"देखती हूं कि रुपाइ नहीं है।"

"बाहर गया होगा।"

"नहीं बेटे—काफी समय हो गया है। वह कहीं नहीं है।"

(आज आषाढ़ का ग्यारहवां दिन है। ऐसे ही एक दिन—रहने दे अब वह बात।)

चाचा यकायक बिस्तर पर से उठ पड़ा। एक ही दम जाकर दरवाजे की सिटकनी को खोलकर बाहर निकल पड़ा। ओहो, यहां रुपाइ नहीं है। अरे रुपाइ, परती अहाते से प्रतिध्वनि खिल्ली उड़ाती है—आई। उसका शरीर रोमांचित हो उठता है। घर के सभी जग पड़ते हैं। रङिली यानी धीर सिंह की पत्नी रोने लगती है।

दादी रात को ठीक तरह से नहीं देख पाती। टटोल-टटोल कर आंगन पहुंच कर वह पूछती है—क्या वह आ गया है, बेटे!" रङिली चिल्लाने लगती है—मेरे लाल, ओ मेरे रुपाइ···।

"तू चुप रह, यह अभी ही आएगा, शायद वह दीघलदरि में भाओना (नाटक) देखने गया होगा ?" धीर सिंह अपने मन की कमजोरी को छिपाने के लिए धमकी देता है। पास-पड़ोस के लोग आकर इकट्ठे होते हैं।

चाचा अकस्मात कह बैठता है—"मैं चलता हूं—नदी के किनारे देखता हूं। तुम लोग गांजाखोर भगत के यहां पूछ लो।"

"अरे, कुछ दीया आदि तो ले चल"—धीर सिंह कहता है। "नहीं, नहीं चाहिए। तुम लोग हो सके तो मीनाराम दुकानदार से लालटेन को ले आओ। मैं चलता हूं।" चाचा परती अहाते के बीच के रास्ते के अंधेरे में मिल गया। धीर सिंह आदि ने चर्चा करके दुकानदार को जगाया।

"मीनाराम, ओ दुकानदार।"

मीनाराम सपना देख रहा था। कपिली का पानी बढ़ आया है—उसके सोये

रहने के समय ही उसको आम की लकड़ी का बक्सा बहा ले जा रहा है—वह पकड़ ही नहीं पा रहा है।

"पकड़, पकड़—वह है···पकड़—" वह चिल्ला उठा।

"अरे, कौन और किस ओर ?" बाहर के लोग हल्ला करने लगे। मीनाराम जग गया। यकायक उठकर उसने अपने बक्से को देखा, वह ठीकठाक था। इसके बाद गंभीर होकर उसने आवाज दी—"कौन, कौन है बाहर ? मैं रात को कुछ भी नहीं दे सकता।"

"हम हैं, दुकानदार। धीर सिंह का लड़का खो गया है। उसको खोजने आये हैं। जरा अपनी लालटेन दो तो।"

"ऐं, कौन जाने किरासिन-विरासिन है या नहीं।"

दुकानदार ने लालटेन को हिलाकर देखा। सारे गांव में यही एक लालटेन है। गांव के लोग शादी-विवाह में ले जाते हैं। दुकानदार एक आने के हिसाब से लेता है। किरासिन का दाम अलग है।

"हो जायगा, इसी से हो जायगा।"

दुकानदार ने लालटेन जला दिया। "क्या कहा ? कौन खो गया है ? रुपाइ ? कहीं माओना देखने गया है—लो, यह है।"

यह आश्चर्य की बात थी कि आज दुकानदार ने पैसे की बात नहीं कही।

लालटेन को हाथ में लटकाकर धीर सिंह और दूसरे लोग गांव के दूसरे छोर पर गांजाखोर भगत के यहां चल पड़े। बड़ा ही मिलनसार आदमी है। बाल-बच्चा नहीं है। रुपाइ को गीत आदि सिखाता है। बारह मील के भीतर खेले जाने वाले किसी भी माओना को नहीं छोड़ता। उसके घर में जाकर भगतिन से पूछने पर मालूम हो जायगा।

उन्होंने जाकर देखा कि गांजाखोर भगत एक चटाई बिछाकर आंगन में ही सोया हुआ है। "भगत, ओ भगत ?" भगत जगकर बैठ जाता है। "माधव, माधव, तो क्या हुआ ? लालटेन, बत्ती, मशाल आदि लेकर कहां से आ निकले ?"

"क्या तुम माओना देखने नहीं गये ? हमने सोचा था कि हमारा लड़का तुम्हारे साथ माओना देखने गया होगा—"

"नहीं गया, क्या जाओगे—आज घर की मालकिन ने मोहिनी गांजा कहकर जंगली भांग ही दी होगी और एक कश लगाते ही," इस प्रकार दोनों आंखों को उलटा करके सोने का स्वांग रचा।

"हां, कौन खोया है—रुपाइ ? चलो चलें—कपिली के घाट पर—कपिली का लड़का और कहां जायगा ?"

सभी लोग जल्दी-जल्दी कपिली की ओर जाने लगे।

"वह कौन है—वह ? कौन है ? कौन है ?"

बांबी के ऊपर बैठे हुए वह लोगों की आवाज से चकित हो उठता है ।

"अरे—कौन है वह ? कौन है वह ?"

लोगों की आवाज डर के कारण कांपने लगती है। वह खड़ा हुआ । कपिली की छाती में तारों की छाया है । नीले रंगयुक्त सादे चादर में तारों के फूल हैं ।

"मैं—मैं हूं ।" लोगों को डरते देखकर वह भी डर जाता है। वह पास आता है। लोग पीछे की तरफ जाते हैं । "राम- राम ! राम, राम !" उनकी आवाज कांपने लगती है। बादलों के बीच से चांद निकलता है। सभी लोग दूर से ही झांककर उसके साये को देखते हैं । उसका साया दिखायी पड़ता है । भूत का साया नहीं होता । इस बार वे कड़ी आवाज में पूछते हैं—"कौन मैं हूं ?" यह हेमो ग्राम-प्रमुख की आवाज थी ।

"मैं—रुपाइ हूं ।"

"अरे, इस भरी रात को यहां क्या कर रहा है ?"

वह भी नहीं जानता—वह क्या कर रहा है ? वह वहां कैसे आया—यह भी उसे याद नहीं आ रहा है। तो भी उसने उत्तर दिया—"यों ही ।"

"यों ही ? इस भरी रात को यों ही ? चल, चल ! राम, राम ! तुझे किसी दिन भूत पकड़कर जमीन में उलटा गाड़ देगा ।"

दूसरों की आंखें बचाकर आंचल में छिपाकर लाये चाकू को ग्राम-प्रमुख ने अपने हाथ में लिया । हाथ में लोहा हो तो कहते हैं कि भूत कुछ भी नहीं कर सकता ।

थोड़ी दूर जाने के बाद ग्राम-प्रमुख को पुनः सन्देह हुआ ।

"अरे, रुपाई !" डर और साहस से सनी हुई बाधाग्रस्त आवाज थी ।

"क्या हुआ है ?" रुपाइ ने पूछा ।

"अच्छा, तू राम बोल तो देखें ?"

"क्यों ?"

"यों ही बोल तो देखें ?"

"राम ।"

ग्राम-प्रमुख इस बार करीब-करीब निश्चित हो गया कि यह रुपाइ ही है। भूत कभी भी राम बोल नहीं सकता । आः, क्या जाने उसने राम ही कहा या आम ! नहीं तो रुपाइ "क्यों" का प्रश्न क्यों करता !

ग्राम-प्रमुख थोड़ी दूर-ही-दूर जाने लगा ।

लालटेन को सब के आगे करके धीर सिंह आदि आ कर कोत-कोरा पेड़ के नीचे रुपाइ और ग्राम-प्रमुख से मिले ।

"यह कहां मिला ग्राम-प्रमुख ?"

"कहां मिलेगा और ? कहीं घाट-वाट आदि में बैठा रहा होगा।" भगत ने अपने मन में ही कुछ कहा ।

"कहां गया था बदमाश ?" धीर सिंह ने उसको धमकी दी। वह सिर नीचा करके खड़ा रहा । कुछ भी नहीं कहा । उसी समय लालटेन की रोशनी देखकर रुपाइ का चाचा भी वहां आ पहुंचा। उसके नदी के किनारे पहुंचने के कुछ पहले ही ग्राम-प्रमुख आदि रुपाइ को लेकर चले आये हैं। नदी में किसी चीज को बहते हुए देखकर, तैरकर पकड़ने के लिए प्रयत्न किया था; किन्तु वह एक तख्ता मात्र था । वहां से लालटेन की रोशनी देखकर परती अहाता होकर यहां आ निकले।

"तुम इस प्रकार भीग-वीगकर कहां से निकले हो ? क्या किसी भूत-वूत ने पकड़ा था ?"

कपाल पर के पानी को हाथ से पोंछकर चाचा ने खांसते हुए ग्राम-प्रमुख से कहा--"बिना कहे ही क्या भाओना देखने के लिए बच्चे को इस प्रकार ले जाना चाहिए था ?"

ग्राम-प्रमुख को भूत के भय से अभी ही मुक्ति मिली थी--"इस प्रकार ही झूठ-मूठ की बात न कहो । तुम्हारे बच्चे को कौन भाओना दिखाने के लिए ले गया था ? कपिली के कगार पर बैठा हुआ था --भूत लगे आदमी की तरह । मैं ही ले आया हूं।"

"गुस्सा-उस्सा न करना भैया," भगत ने कहा--"हम चलो चलें, इसको यदि 'ठण्डा' लग जायगा तो दमा फिर से कष्ट देगा।'

वे जब गांव पहुंचे उस समय पूरब की ओर आकाश काला होने लगा था। गांजाखोर भगत ने धीर सिंह के कानों में कहा "बच्चे को ठीक-ठाक करके रखना । कौन जाने क्या होता है --कपिली की बात है।"

कपिली की बात है, कौन जानता है क्या होता है । किन्तु उसको कुछ नहीं हुआ । हुआ उसके चाचा को । उसको फंदा बनाकर देने वाला, तोते के बच्चे को उतारकर देनेवाला। अगले ही दिन से चाचा को ज्वर हो आया । उसे दमे का प्रभाव तो है ही । किसी ने कहा उस परती अहाते के भूत का प्रभाव है । मायङ का ओझा आया। झाड-फूंक की, मिर्च जलाकर उसका धुआं दिया । भूत भागा । भूत भागने की निशानी के रूप में बारी के कोने के रबाब-पेड़ की एक डाली टूटी हुई मिली । किन्तु रुपाइ के मन में शंका रह गयी । डाली कटी हुई थी, टूटी हुई नहीं थी । तिसपर भी उसका चाचा नहीं बचा । तीन पीढ़ी का प्रभाव छोड़कर उसका

चाचा चल बसा। "इसके लिए वही दोषी है," रुपाइ को इस प्रकार का भाव हुआ। उसके लिए उसका चाचा पानी में उतरा था। उसके कपिली के किनारे जाने के कारण ही। कपिली पर भी उसको गुस्सा हो आया। कपिली के किनारे जाना उसने छोड़ दिया। पाठशाला से आकर काम आदि न रहने पर वह मिश्र-घटाव का हिसाब करता है। गांजाखोर भगत के यहां धर्म-ग्रंथ सुनता है। "एकलव्य की गुरु-दक्षिणा" नामक एक बंगाली नाटक भी भगत पढ़कर सुनाता है। तिसपर भी उसका मन बीच-बीच में जाकर कपिली के किनारे की बांबी पर जाकर बैठता है।

भूलते हैं—लोग भूलते हैं। दैनिक जीवन की स्वाभाविक धारा में इस प्रकार की घटनाएं विलीन हो जाती हैं। कपिली के किनारे मवेशियों को चराने ले जाने के बाद वहां से लौटने के लिए वह भूल जाता है। 'इस्कूल' से भागकर सरसों, लाख आदि लाने जानेवाले कामरूपी व्यापारियों की नावों को देखता रहता है। लालुङ संप्रदाय की लड़कियों को खेत से 'सिंघाड़ा' बीनकर देता है। 'ब्रहान-बिहु' में कपिली में ही मवेशियों को नहलाता है। माघ-बिहु के दिन कपिली के किनारे 'हारलीघर में' भोज खाता है।

उसने मिश्र वियोग का हिसाब सीखा। और बहुत-सी बातों के बारे में सीखा—नगाओं जिले की सीमाएं, उत्तर की ओर ब्रह्मपुत्र नदी, बरपानी कहां से निकली है। असम की राजधानी क्या है? भालुकपुङ क्या है, कहां है और किसलिए मशहूर है। ब्याज का हिसाब, तीन राशियों का हिसाब, स्थानीय शब्द का अर्थ, बहुत सारी बातें उसने सीखीं। बैथाराम पण्डित उससे स्नेह रखता है, कहता है कि उसे छात्र-वृत्ति मिलेगी ही। धीर सिंह कहता है कि वह उसे 'दर्शन-स्कूल' में दाखिल कर देगा। घर से ही खुराक ले जायेगा। हर शनिवार को न सही महीने में एक बार घर आयेगा। कुछ लोगों ने कहा—"उसको बंगला 'स्कूल' में ही दे देना, इसके बाद 'ट्रेनिंग' पास करके यहीं-कहीं पण्डित बन जायगा। या फिर? 'माइना (माइनर) इस्कूल में भी पढ़ा सकते हो, जिला जाये तो लड़का खराब हो जायगा।'

वह छात्र-वृत्ति की परीक्षा देने के लिए जिले में आया और जिले के उस वकील के घर ही रहा। इस बार उसको आंगन में खाने नहीं दिया गया। बरामदे में दिया गया। उस 'फराक' पहनने वाली लड़की ने उसको चिकोटी नहीं काटी। चिकोटी काटी होगी तो उसे शायद अच्छा ही लगता। वह आजकल 'फराक' भी नहीं पहनती। साड़ी पहनती है। बाल में मखमल की फिटा नहीं बांधती। लम्बी वेणी गूंथती है। उसको उससे बातें करने की इच्छा होती है। उससे पूछने की इच्छा होती है कि उसे चिकोटी काटने की बात याद है या नहीं। किन्तु उसे डर लगता है, वह इतनी गोरी है। उनके साथ न जाने किस प्रकार बात की जाती है।

गाव हुआ होता तो कपिली के किनारे से 'चेचोंर'*ला देता। जिले में ऐसे में क्या करते हैं ? स्नेही को क्या लाकर देते हैं ? जगबंधु वकील उससे पूछता है—"क्या रे रुपाइ ? छात्र-वृत्ति मिलेगी तो ?" उसके बाप ने उसे वकील को 'आइगा' (आज्ञा) बोलने के लिए सिखाया था।

"मिलेगी आइगा।"

"अच्छा· · ·बोल तो चातक किस लिए विख्यात है ?" जगबंधु वकील बीस वर्ष के अनुभव की असमिया में अपना सवाल करता गया।

"चातक,· · ·हां हां श्रीहट्ट जिले का एक मुख्य स्थान है—यहां चूने की खान है।" उसने इस प्रकार जवाब दिया मानो सामने किताब खुली हो।

"आच्छा, आबार बल तो योजक किसको कहता है ?"

"जो संकरी जमीन दोनों ओर दो बड़ी जमीन को जोड़ती है"—वह मानो भूगोल की किताब देखकर ही कह रहा हो। उसका उत्तर समाप्त होने से पहले ही· · ·"आरे हरि, हरिया रे—सान (स्नान) का जल दे रे" कहकर वकील भीतर चला गया। वह जमीन पर पालथी मारकर बैठ गया और असम के मान-चित्र का अंकन करने लगा।

परीक्षा के पहले ही दिन आधे घण्टे की छुट्टी में उसने फुलौरी खायी। शाम को लौटते समय मिठाई की दुकान से उसने दो पैसे का नकुलदाना खरीदा। नकुलदाना उसने पहले भी देखा है। एक बार उसका चाचा कुछ ले गया था। उसके हिस्से में पांच आये थे। उसने नोमल आदि के साथ बांटकर खाया। उसका स्वाद अब भी उसके दांतों में है। आज दो पैसे में उसे बहुत सारे नकुलदाना मिले।· · · शायद सौ सवा सौ हो जायेंगे। उनमें से आधा उसने अलग रख दिया। वकील की लड़की को देने के लिए ही।

अहाते का फाटक पहुंचते ही आज उस लड़की ने उससे पूछा—"क्यों आज परीक्षा कैसी हुई है ?" पूछने का ढंग मुलायम नहीं था। किन्तु उसका स्वर उसे बड़ा मुलायम लगा। उसकी समझ में ही नहीं आया कि वह क्या कहे। उसके दोनों कान लाल हो उठे। जेब में हाथ डालकर वह कागज के पोतले को कुरेदने लगा। कागज फटकर सारे नकुलदाने उसकी जेब में आ गये। उसने किसी प्रकार का उत्तर न देकर उसमें से एक मुट्ठी निकालकर उसकी ओर बढ़ाकर कहा—"लो।" लड़की ने देखा। उसमें किसी प्रकार के आग्रह का चिह्न नहीं था। उसने अपने गोरे हाथ को भी आगे नहीं बढ़ाया, कर्कश भाव से कहा—"छि:। हम ये सब नहीं खाती, कलेरा होगा।" कलेरा—हैजा या कलेरा। उसने स्वास्थ्य समाचार में पढ़ा

---

*खेत में अपने आप एक पौधे से जमीन के नीचे होने वाला एक बीज जो मीठा होता है।

है। लगातार कै होती है। आंतों में ऐंठन होती है। सड़ी हुई, मक्खी पड़ी हुई या बासी चीज खाने पर कलेरा होता है। उसको बड़ी शर्म लगी।

नोमल-भेदोऊ आदि को दिया होता तो उन्हें कितना आनन्द होता ! वह शर्म के मारे उसी प्रकार बाहर के रास्ते से अपने रहने के लिए दिये गये मकान में जा पहुंचा। वहीं हरिया भी रहता है। हरिया 'आइगा' का रसोइया से लेकर चाकर तक सब कुछ है। उस समय हरिया दोपहर की नींद से जगने की कोशिश में था। दोपहर के समय वह रोज सोता है। वकील के कचहरी से आने के आगे-आगे वह उठ जाता है और नाश्ता बनाता है।

नकुलदानों को रूपाइ ने उसके बिस्तर पर ही फेंक दिया।

"वे सब क्या हैं, हां ?" हरिया कामरूप का आदमी है।

"नकुलदाना"··· रुपाइ की आवाज थकी हुई है।

"दे, दो-चार दाने···चबाकर देखता हूं।"

"इनको खाने पर कहते हैं कि कलेरा होता है।"

"किसने कहा—हां ?"

"वह जो है—उसने कहा है"—रुपाइ ने हिचकिचाते हुए कहा।

"वह कौन है ?"

"वह लड़की है न, आइगा की लड़की है···"

"ओ, खुकी की बात कहता है ! वह नकुलदाना क्या खायगी ? रसगुल्ला, संदेश ही खायगी।"

रसगुल्ला संदेश—मिठाईवाले के बक्से में रखी गयी शायद वे ही होंगी, उनका दाम कितना है उसने पूछा था···एक का दाम एक आना कहा था। इतना अधिक दाम है ! उनको खाते हैं ! आइगा के पास शायद बहुत ज्यादा पैसा है। बड़ा होने पर वह भी बहुत अधिक पैसा कमायेगा। रसगुल्ला खायेगा। एक का दाम चार पैसे है।

अपनी इच्छा होते हुए भी खुकी के साथ वह बात नहीं कर सकता। एक दिन एक रसगुल्ला लाने की ही बात उसने सोची थी। किन्तु, उसको साहस नहीं हुआ। कौन जाने उसे भी वह न ले···किसी नयी बीमारी का नाम लेकर।

वह रात को आकर हरिया नौकर के साथ बात करता है। हरिया उसके साथ कामरूप की बात कहता है। ब्रह्मपुत्र पार करके जाना पड़ता है। अपने गांव की बात कहता है। पागलादिया पुटिमारि की बात—किसी दोमाही (संक्रांति के अवसर पर के समारोह) में खाने की बात कहता है। आरंभ में वह रसगुल्ले-सन्देश खाने की तरह की बात समझता था। इसके बाद पूछने पर ही उसे मालूम हुआ कि वह बहु की बात थी।

हरिया जिले की बात कहता है। बड़े साहब के घर कितने कुत्ते हैं···जानकी

वकील के घर पूजा में कितनी बलि होती है। विद्या हाकिम की नयी गाड़ी का दाम कितना है—आदि बातें। गेन्सन 'मिस्त्री' कपड़ा धोते समय कितनी ताड़ी पीता है, कलङ के किनारे के बम बाबा ने जलु धोबी को सांप की जो मणि दी थी···उसका क्या हुआ···रूपाइ इन बातों को कहानी की तरह सुनता है। हरिया ने उसे वकील के साथ रहकर पढ़ने के लिए कहा। वह उसे जिले की सारी बातें सिखा देगा। उसके नमूने के रूप में पहले उसे 'रेड-लैम्प' सिगरेट पीने के लिए सिखाया। आधी सिगरेट पीने के साथ ही उसको जोर की खांसी हुई और सिर चकरा गया। रात को सपने में देखा—वकील की लड़की को कालरा हुआ है। उसने कपिली के किनारे बैठकर कै की है। वह कगार पर बैठा है। कगार के नीचे फूस के किसी झुरमुट में आग लगी है। चारों और धुंआ है···वह कगार पर से उतर नहीं सका है—उसकी टांगें कमजोर हो गयी हैं। वह चिल्लाना चाहता है—मुंह से आवाज नहीं निकलती। उसी समय हरिया ने आकर उसे धक्का देकर कगार पर से गिरा दिया···वह गिर पड़ा। उसके सीने में धक्-धक् आवाज हुई—वह जग पड़ा। उसका शरीर पसीने से तर हो गया है।

उसकी परीक्षा समाप्त हुई। अवसर मिलने पर उसने जिले को अच्छी तरह देख लिया। दिन को वह अकेले ही घूमता रहता है। रात को हरिया के साथ परगणीया की दुकान से एक चक्कर लगा आता है। हरिया को काम में सहायता देता है। वकील की पत्नी उसे दुकान भेजती है इधर-उधर की चीजें लाने के लिए। एक दिन जब उससे गर्म मसाला लाने के लिए कहा गया तो उसे समझ में नही आया कि वह किस में रखकर लायगा। यदि उसका हाथ जल जाये! हरिया ने हंसते हुए उसको चिन्ता से मुक्त किया। जिले में उसने बहुत सारी नयी चीजें देखी हैं, बैल या घोड़ा किसी से भी न खिंचनेवाली एक गाड़ी को उसके सामने से झट निकलते देखा। ओ—यही है विद्या हाकिम की हवा गाड़ी···हरि भैया ने जिसे मोटर कहा था। गाड़ी के निकल जाने के बाद किसी चीज के जलने की गंध उसे बड़ा अच्छा लगा था। उसने स्कूलों को देखा। कलङ के किनारे का वह लाल 'इसकूल' इतना बड़ा है कि कलङ में बाढ़ आने पर सारे जिले के लोग वहीं आकर रह सकेंगे। किन्तु कलङ को देखकर उसे हंसी ही आयी। क्या यह नदी है? इस भरी वर्षा में भी इसका स्रोत क्या यही है? यह मृत नदी है—कपिली की तरह जिन्दा नही है।

कचहरी घाट का पुल देखने में बड़ा ही सुन्दर है। साल के बड़े-बड़े खंभे हैं। उनके नाम-घर (मन्दिर) के खंभे से भी बड़ा है। पुल को पार करके हयबरगांओ जाया जा सकता है। पुल को पार करने के लिए फी आदमी एक पैसा लेता है। हरिया ने उसको सिखा दिया है कि 'इसकुल' के लड़कों से नहीं लेता। पुल पर चढ़कर रेलिंग के सहारे वह धीरे-धीरे उसे पार कर गया। पार करते समय ही एक

आदमी ने उसे आवाज दी— "लड़के पैसा दे जा···"

"मैं इसकुल का लड़का हूं,"···हरिया का सिखाया हुआ अंग्रेजी शब्द वह भूल गया···"स्टुडेन—है क्या ?"

"स्कूल का लड़का है तो हाथ में किताब-सिलेट क्यों नहीं ?" आदमी के चेहरे पर चोर पकड़ने का भाव है।

"मैं यहां का लड़का नहीं हूं,"···उसके मुंह से असली बात निकल पड़ी। "छात्र-वृत्ति की परीक्षा देने आया हूं।"

"तो पैसा देना ही पड़ेगा···" वह जेब से एकन्नी का सिक्का निकालकर आदमी के हाथ में देते देते जरा रुक गया। उसने पूछा—"मैं यदि यहां से लौट जाऊं तो क्या पैसा देना पड़ेगा ?"

"जरूर देना होगा, डबल देना होगा।"

डबल किराया। माने दो पैसे। उसने सोचा लौटकर क्या दौड़ लगा दे ? नहीं, अजनबी जगह है, कहीं जाकर कुछ और हो जायगा—पकड़ा जाऊं तो कहीं बेत ही न लगाये !

आदमी ने एक घोड़ा-गाड़ी को हाथ उठाकर रोक दिया। कोचवान ने कहा—"लौटते समय दे दूंगा।"

"अच्छा जा, ए लड़के, पैसा दे।"

उसने एकन्नी को आदमी के हाथ मे दिया। उस आदमी ने गुलाब बेलांकित एक सन्दूक से तीन पैसे निकालकर उसके हाथ में दिये। वह पुल को पारकर आगे बढ़ता गया। एक पीपल के नीचे एक बड़ी धूनी जलाकर एक सन्यासी बैठा हुआ है। चारों ओर बहुत-से लोग हैं···पुरुष-महिलाएं। बीच में ताम्बे की एक थाली है। उसमें चोवन्नी, दुअन्नी, एकन्नी आदि पैसे हैं। दो अठन्नियां भी हैं। पेड़ के तने पर टीन का एक पत्ता लटका हुआ है···उसमें लिखा हुआ है···डॉ० बैनर्जी का फिबारिन। ज्वर का यम है। सभी जगह मिलता है।

वह किसी की कांख के नीचे, किसी के हाथ के नीचे जाकर सन्यासी के पास पहुंचा। हरिया ने जिस बम बाबा की बात कही थी, शायद यह वही बाबा है।

वह धूनी की राख से लोगों के कपार पर एक-एक तिलक लगा रहा है और लोगों की पीठ पर ठप्पर देकर कह रहा है—"सब ठीक हो जायगा···बाबा केदार बद्री का ध्यान करो।" उसने आस-पास के लोगों से सन्यासी के बारे में कुछ जानकारी प्राप्त कर ली है। कहते हैं कि बाबा बदरीकाश्रम से आया है। सबके भूत भविष्य के बारे में कह सकता है। पूर्व जन्म के बारे में भी कह सकता है। उसकी उम्र कोई कहता है कि एक सौ साल है, कोई कहता है दो सौ साल···और कोई कहता है कि एक हजार साल है। वह जब किसी की पीठ पर ठप्पर लगाता है तो सभी बीमारियां ठीक हो जाती हैं। वह अपने चाचा को यदि ला सकता !

उसे उत्सुकता बढ़ी कि उसे छात्र-वृत्ति मिलेगी या नहीं। लोगों की भीड़ को चीरकर वह बाबा के सामने जाकर थाली में एक पैसा रखकर बैठ गया।

"बाबा, क्या मुझे छात्र-वृत्ति मिलेगी ?" उसने पूछा।

दूसरे लोगों को जिस प्रकार देता है उसी प्रकार उसके भाल पर भी एक तिलक लगाकर पीठ पर ठप्पर देकर कहा—"सब ठीक हो जायगा,"···रूपाइ ने सोचा कि बाबा उसकी बात को नहीं समझा। उसको कोई बीमारी हुई है—शायद यह समझकर उसने इस प्रकार कहा है। उसने पुनः कहा, नहीं बाबा, हम इस बार छात्र-वृत्ति का परीक्षा दिछों है··वृत्ति मिलेगा है ?" बाबा ने अपनी लाल आंखों से उसकी ओर देखा, भाव यही था कि एक ही पैसे में इतनी बातें जानने के लिए तू कौन है ? वह डर के मारे वहां से दूर हट गया।

उसको घर ले जाने के लिए उसका पिता आया। वकील ने उससे कहा—"देखो धीर सिंह, तुम्हारा लड़का पढ़ाई में अच्छा है। उसे पढ़ाना—मेरे यहां भी रखकर पढ़ा सकते हो। यहीं खायगा। घर में थोड़ा-बहुत काम-काज करेगा। क्या कहते हो, तुम ?"

···नहीं, दूसरे के घर नौकर रखकर लड़के को नहीं पढ़ाऊंगा। उस खरसिङ मिकिर के लड़के को देखा है—नेली का ठेकेदार उसे पढ़ाने के लिए लाया था, किन्तु अन्त तक उसे नौकर बनाया। किन्तु, वकील के सामने वह यह बात कह नहीं सका। हंसते हुए उसने कहा—"अच्छा आऊंगा, उसे पहले छात्र-वृत्ति तो मिल जाय।"

"नही उसे छात्र-वृत्ति न मिलने पर भी तुम इसे भेज देना, मैं शुल्क दे दूंगा। वह सब भाग्य की बात है। लड़का अच्छा है।"

लड़का अच्छा ही है। काम-काज में अच्छा होगा। लकड़ी आदि भी चीर सकेगा। वेतन की भी जरूरत नहीं होगी। सुझाव देते समय वकील ने यही सोचा था।

शहर के विचित्र अनुभव और दो आने का नकुलदाना लेकर वह पुनः कपिली के किनारे के गांव में लौट आया।

उसको छात्र-वृत्ति नहीं मिली। आमतौर पर 'जिले के बांग्ला स्कूल' के छात्रों को ही मिली है। छात्र-वृत्ति न मिलने के कारण उसने पढ़ने-लिखने के बारे में सोचा ही नहीं। धीरसिंह भी उसे खेत-मैदान के कार्यों को ही सिखाने लगा। गांजा खोर भगत यों कहता है—"बिरती-सिरती न मिलने के कारण ही क्या बच्चे की हालत नाक कटने वाले सिपाही की तरह करनी चाहिए? यहां के 'माइना' स्कूल में ही उसका नाम लिखवा दो—जाओ।"

"उसको जब वृत्ति नहीं मिली—महसूल लगेगा न?"

"और लोग घर के इधर-उधर के सामानों को बेचकर भी अपने बाल-बच्चों की पढ़ाई का खर्च निकालते हैं। ईश्वर की कृपा से तुम्हारी बारी की सुपारी, फल आदि से ही साल में दो-डेढ़ कोड़ी रुपये आयेंगे—तुम क्यों नहीं पढ़ा सकोगे?"

"अच्छा सोच लेने दो भगत!"

सोचने में और एक वर्ष चला गया। भगत ने और एक बार स्मरण दिलाया—"तुम्हारा आइगा या साइगा कोई दीनबन्धु वकील है न—उसी ने ही खुद महसूल देकर पढ़ाने की बात कही थी न। उसी से जाकर कहो।"

"छोड़ो उसे, लड़के को चाकर नहीं बनाया जा सकता।"

"अपने मन को छोटा न करो रजा। जहां रहता है उसी को अपने घर का ज्ञान करना चाहिए। क्या हमारे लड़के अपने घरों में काम-काज नहीं करते? उसे पढ़ने दो। वह पढ़-लिखकर एक दिन दीनबन्धु वकील के ऊपर ही मनसुफ बन जायगा।"

सन् 1930 ईसवी है। इस बार महात्मा गांधी समुद्र के किनारे नमक बनाने के लिए गये। कहते हैं कि दस वर्ष के पहले भी इन्होंने सरकार के साथ लड़ाई लड़ी थी। ढाल-तलवार किसी की भी जरूरत नहीं थी। सरकार ने अपने आदमियों के साथ उन्हें जेल में ठूंस दिया। किसी फुकन 'बालिष्टार' एक बार 'कंरेज' को गुवाहाटी ले आया था—इसके बारे में उसने दो-चार आदमियों के मुंह से सुना था। बहुत बड़ा मेला हुआ था कहते हैं। उस समय वह 'कंरेज' और गांधी के राज्य की बातों को अच्छी तरह समझ नहीं सका था। महात्मा गांधी 'फोटो' रुपाइ ने इधर-उधर कहीं देखा था। जमीन पर हाथ डालकर मन मारे बैठे हुए एक आदमी। कहते हैं कि वे बड़े आदमी हैं। इस बार वे नमक बनाने के लिए निकले हैं। अंग्रेज सरकार इसकी अनुमति नहीं देती। नमक बनाने से किसको कौन-सी हानि होगी? सरकार ने उन्हें पकड़कर जेल में डाल दिया। कहते हैं

गांधी महाराज उससे डरते नहीं हैं। जब भी इच्छा होगी वे जेल से निकलकर आ सकते हैं। किन्तु वे ऐसा नहीं करते। देश में 'सुराज' होने पर ही वे निकल आयेंगे। देश में हलचल है। खद्दर का सफेद कपड़ा पहनकर लोग 'पसेसन' (प्रोसेशन) करते रहे हैं। 'वन्दे मातरम्' 'महात्मा गांधी की जय' इन नारों के कारण सारे जिले में हलचल मची हुई है। रास्ते पर लोग 'पसेसन' में विभिन्न प्रकार के गाने गाये चलते हैं—

"वहां उड़ रही है सराज की पताका,
सर उठाकर आगे—आगे बढ़ो।"

'पसेसन' करने वाले लोगों को पुलिस ने काफी पीटा है। किंतु लोगों ने पुलिस को कुछ भी नहीं किया। गांधी महाराज ने मना किया है।

रूपाइ इन कार्यों को देखता रहा। कई वर्ष पहले ही उसे इसका पिता जिले में छोड़ गया था। उसने पहले पहल 'बार पथार' के बीच के दर्शन 'स्कूल' में पढ़ा था। किन्तु उसके फेल किये जाने के कारण वकील ने महसूल देना बंद कर दिया। उसका नाम भी कट गया। पिता ने जब सुना तो उसको ले जाने के लिए वह आया, किन्तु वकील ने उसे समझाया कि रूपाइ को वह बंगाली 'स्कूल' में ही नाम लिखवा देगा।

बंगला स्कूल में महसूल कम है। उसका नाम बंगाल स्कूल' में लिखवा दिया गया। वह 'फेल' क्यों नही होगा? सारा वर्ष उसका बिना किताब से ही निकल गया। पढ़ने के लिए उसे समय ही नहीं मिलता। बाजार से सामान लाना, लकड़ी चीरना, सभी काम उसे ही करना पड़ता। रात को एक दीया भी नहीं मिलता। हरिया—जिस हरि भैया के स्नेह की कोई सीमा नहीं थी—वह हरिया भी आज उसे बिना धमकी दिये बात नहीं करता। एक दिन हरिया ने उससे बाजार के पैसे से ही बीड़ी लाने के लिए कहा। रेड-लैंप का दिन बीत गया है। देश में गांधी बीड़ी चलने लगी है। महात्मा गांधी ने विलायती वस्तु का व्यवहार बंद करने के लिए कहा है, इसलिए देश में बीड़ी का व्यवहार काफी बढ़ गया था। तीन पैसे में एक बण्डल बीड़ी लाकर उसने हरिया को दी। वकील की पत्नी को रोज बाजार का हिसाब देना पड़ता है। वह रोज एक कागज पर लिखकर उसका हिसाब देता है।

कावे मछली एक कौड़ी	दो आने छः पाई
बैंगन	एक आना छः पाई
आलू 1 सेर	तीन आने नौ पाई
मिर्च	छः पाई
जीरा	छः पाई
गर्म मसाला	एक आना

साग	तीन पाई
बीड़ी	नौ पाई
	दस आने नौ पाई

बाजार के लिये दिया गया रुपये से पांच आना एक पैसा उसने वकील की पत्नी को वापस किया। वकील की पत्नी ने हिसाब पर नजर दौड़ाकर कहा—हो जायगा—तो भी मछली का दाम बहुत ज्यादा हुआ है—अच्छा ठहर—यह क्या लिखा है ?

"एक बण्डल बीड़ी है—माताजी।"

वकील की पत्नी ने उसके गाल पर एक चपत जड़कर कहा—"सुअर का बच्चा, 'स्कूल' का लड़का होकर तू बीड़ी पीता है। जिस पर भी बाजार का पैसा चोरी करके ? तेरे बाप का पैसा मिला है ? उसने किसी तरह कहा—मैं बीड़ी नहीं पीता हूं, माताजी हरी भैया ने लाने के लिए कहा था। उसके लिए ही लाया था।

वकील की पत्नी ने आवाज दी—"ओ हरि, हरिया रे !"

हरि रसोई से धोती से हाथ पोंछते हुए निकल आया।

"यह क्या हो रहा है ? बाजार के पैसे से क्यों बीड़ी पीता है ? अच्छा नहीं होगा, हम बोल देता है।"

हरिया ने रूपाइ की ओर इस प्रकार देखा कि रूपाइ का कलेजा ही मानो सूख गया। हयबर गाओं के बम बाबा ने भी शायद इस प्रकार नहीं देखा था।

उस दिन शाम को हरि ने उसके कानों को पकड़कर, मल-मलकर लाल किया और कहा—"तुझसे बीड़ी लाने के लिए कहा था, हिसाब में लिखने के लिए किसने कहा था ? मछली का दाम बढ़ा नही सका।"

उस समय वकील की पत्नी ने उसको लड़की के सामने ही गाल पर चपत जड़ दिया था अब हरिया ने उसके कान मले। मन में दुःख होने के कारण वह भागकर पूर्ण वकील के वालंटियर के दल में शामिल हो गया। गांधी टोपी पहनकर शराब की दुकान के सामने पिकेटिंग करते समय एक नशाचर जमादार ने अपनी लम्बे हाथवाली बढ़नी से ही उसको कोंचा। उसको भी गुस्सा आ गया। एक ही चपत में ऐसा नशाखोर क्या से क्या हो जायगा कौन जानता है। किन्तु, लीला मास्टर के लड़के के मना करने पर वह रुक गया। कहते हैं कि गांधी महाराज ने मार खाने के लिए ही कहा है। मारने के लिए नही कहा है।

'करेजी' वकीलों को धीरे-धीरे जेलों में ठूसा जाने लगा। 'पसेसन' होते ही पुलिस उसे भंग कर देती है। एक दिन उन्हें "ओ भाई अफीमची, तुम लोगों ने हमको क्यों पिटवाया।" इस गाने को गाकर 'पसेसन' करते समय उन्हें सिपाही पकड़कर ले गये। साथ लीला मास्टर का लड़का भी था। उसने नारा दिया—'वन्दे मातरम्', उन लोगों ने भी उसको दोहराया था। शाम को लीला मास्टर की

पत्नी नाश्ता आदि दे गयी थी।

जेल के भीतर उसे मालूम हुआ कैदियों के भीतर भी वकील, मुहर्रिर, किसान, मजदूर आदि विभाजन है। मणि वकील और विमला मास्टर अलग जगह रहते हैं। खाना-पीना भी उनका अलग है। आरंभ में कुछ दिन लीला मास्टर का लड़का रूपाइ आदि के साथ ही रहा था। उसकी मां द्वारा भेजा हुआ नाश्ते का भाग उन्हें भी मिला था। वह सदा किताब पढ़ता रहता है और सुना है कि वह पद्य भी लिखता है। किन्तु कुछ ही दिनों के भीतर वह भी मणि वकील के पास चला गया।

पहले ही सुन रखा था कि जेल में बैलों के बदले आदमी द्वारा ही सरसों को पेरा जाता है। किन्तु अब तक भी उनसे यह काम नहीं लिया गया है। कहते हैं वह पुराना नियम था अब अप्रचलित है।

एक बड़े से मकान में चोर-डाकू आदि सभी प्रकार के कैदियों के साथ वे रहते हैं। अपने अपराधों का वर्णन वे बड़े गौरव के साथ करते हैं। शुरू में उसको पत्थर तोड़ने का काम दिया गया था। किन्तु जब एक पत्थर उछलकर उसकी आंख में लगा तो उसे वहां से हटाकर बगीचे के कार्यों में लगाया। बंगला दर्शन और 'इसकुल' में उन्हें बगीचे का काम करने दिया गया था। यामिनी मास्टर ने गाना भी सिखाया था—

"चलो, बगीचा चलें,
और धूप कहां मिलेगी।"

उस कार्य और इस कार्य के भीतर कितना भेद है। उनके बीच एक-एक टुकड़ा जमीन बांट देते हैं। वहां अन्नानास का बाग है। अनावश्यक घास-पौधों को साफ रखना उनका काम है। एक दिन अपने साथ के एक कैदी ने उसके हिस्से के एक पौधे की जड़ काटी। पौधा सूखकर मर गया। मेठ ने उसको दो-चार चपत लगा दिये। मेठ भी उसकी तरह ही 'कैदी' है। उसे बहुत दिन तक मालूम ही नहीं हुआ था। वह उसे सरकारी आदमी ही समझता था। उनके दल का मेठ छोटे कद का मैमनसिंह सिंह का आदमी है। डकैती के अपराध में सात वर्ष की सजा हुई है। उसकी दाढ़ी लम्बी है। आंखें लाल हैं। जेल में नशीली चीजों का निषेध है। किन्तु वह कहीं से इंतजाम करके भांग पीता है। चिलम में भरकर पी नहीं सका तो चबाकर ही उसे खा जाता है। मेठ के अत्याचार से भी उसे दूसरा एक काम ही अधिक खराब लगा।

तीसरे पहर पांच बजने के समय ही उन्हें घर के भीतर घुसा दिया जाता है। मुक्त आकाश को सारी रात खोने के लिए उसे बुरा लगता है। उसने अपने बैरेक के 'वार्डर' को सलाम देकर कहा—"देखो, वार्डर साहब, हम सत्याग्रही हैं; गांधी

महाराज के हुक्म से जेल आये हैं। हम तो चोर-डाकू नहीं हैं—है न?" असली बात को कहने के लिए उसे अब भी साहस नहीं हुआ था।

"क्या कहना चाहता है। जल्दी बोल, बेकार की बात मत कर।" सिलेटी वार्डर ने मूंछ पर हाथ फेरकर कहा।

"हम तो और भाग नहीं जाते।" उसने किसी तरह कहा।

"भाग कहां जायगा बेवकूफ?"

"नहीं, मैं उसे ही कहना चाहता हूं—कहां भागेंगे—हमको जरा देर करके ही बंद कर सकते हो। भीतर बड़ी गर्मी है।"

वार्डर ने हंसकर कहा—"अरे, तेरे गांधी महाराज से ये सब बातें कह दी हैं। गर्मी लगती है तो एक पंखावाला रख दे। कैदी का बच्चा कैदी होना है। ससुराल का-सा आराम चाहता है।"

और कुछ कहने के लिए उसे साहस नहीं होता। वह चुपचाप जाकर अपने कम्बल के ऊपर सोये रहता है। असहनीय गर्मी है। कम्बल काटता है। कम्बल को हटाकर वह पक्के फर्श पर सोने का यत्न करता है। रात गहरी हो जाती है। जेल की घण्टी पर प्रहार होते हैं—ग्यारह, बारह और एक। बीच-बीच में अलग-अलग वार्डर की आवाज—एक, दो, तीन, चार, पांच ठीक है। रात और गहरी हो जाती है। उनके घर के पास के हड़ के पेड़ पर एक मखियती चिड़िया गाना गाती है। उसको लगता है कि मानो कोई उसे ही बुलाता है। कलङ के किनारे से महाजनों की नावों का हल्ला-गुल्ला सुनाई पड़ता है। उसको कपिली की याद आती है। कपिली को वह फिर कब देख पाएगा?

सबेरे जगने में विलम्ब होने का कोई कारण नहीं है। वार्डर के बूट की चोट से उसे जगाया जाता है। माघ के बिहु के दिन मां के द्वारा जगाने की बात की उसे याद आती है। कितनी ठण्डक थी उन दिनों! उसके दांत कांपने लगे थे। कांपते-कांपते कपिली में जाकर एक डुबकी लगाकर आग के पास आकर···

रात को बहुत देर तक काम करना होता है तो वकील के वहां भी उसे जगाया जाता है। वकील की पत्नी चिल्लाकर जगाती है। धक्का देकर, हरिया। एक दिन लड़की ने उसके कान पर पानी उड़ेल दिया था। लड़की का एक डॉक्टर से विवाह हो गया था। हांसपानी बगीचे में काम करता है। जरा काला-सा आदमी है। विवाह में भाओना में पहने जाने की तरह मुकुट पहनता था। ठीक भाओना नहीं, 'निमाइ सन्न्यास' नाटक के राधा-कृष्ण की तरह है। उस लड़की का विवाह होते देख उसे दुःख हुआ था। उसके इधर-उधर के काम को कर देने से उसे सुख मिलता था। एक दिन डाकखाने से पोस्ट कार्ड लाकर उसके हाथ में देते समय अपना हाथ उसके हाथ से स्पर्श कर गया था। उसके शरीर में एक प्रकार की सिहरन हुई थी।

'ऐ साले उठ!'—वार्डर की कर्कश स्वर उसके कान में आ पड़ी, "बेटा

नवाब है।"

वह चकपकाकर उठ गया। एक दिन उसने चकपकाकर उठकर लड़की को नौकर के कमरे से निकलते देखा था। हरिया सोया हुआ था, करवट बदली थी।

'लपसी' खाकर वह काम में लग गया। वह मेठ है ही। मैमनसिंह का रहने वाला, बड़ी-बड़ी आंखें, जट जैसी दाढ़ी है, मुंह पर गोल-गोल दाग हैं।

इन मैमनसिंही लोगों के आने के बारे में उसे कुछ-कुछ याद है। रूपही, जुरिया आदि स्थानों के आलसी लोगों के बीच बसकर अब एरण्ड के कीड़े की तरह बढ़ते-बढ़ते मैराबारी, भरागाओं तक पहुंच गये। शुरू में दो-एक आये। इसके बाद दल के दल आये। ऊंची-नीची कोई भी जमीन नहीं बची। वे धूप में जी-जान तोड़कर मेहनत कर सकते हैं। जूट की खेती असमीया लोग भी किया करते थे। किन्तु बहुत ही कम। गाय-बैलों के पगहे हो जायें तो ठीक है। बैलगाड़ी के धुरे पर लपेटने लायक हो जाय तो ठीक है। उन्होंने आकर देखा कि यहां की बालूमिश्रित मिट्टी अपनी 'पद्दा' के किनारे की मिट्टी की तरह ही है। उन्होंने जूट की खेती करना आरंभ किया। प्राचीन राजा के समय का फुलगुरी का हाट आज नये सिरे से बसने वाले लोगों के रूपही हाट के सामने कोई मुकाबला ही नहीं रखता। मारवाड़ी व्यापारियों ने यहां पर बड़ी-बड़ी दुकानें खोलीं। दादनी देकर खेत में ही अनाज खरीदे। तथापि उन्हें काफी फायदा हुआ। मैराबारी तक रेलगाड़ी चलने लगी। उसने मैमनसिंही लोगों के दो-चार मुखियों से बातचीत भी की है। उनके अनुसार उनके यहां जमींदार नाम का कोई जीव है। बड़ा क्रोधी, बड़ा शौकीन है। बड़े-बड़े घोड़े हैं, उनकी बन्दूकें भी हैं। हम जिस प्रकार मौजेदार को लगान देते हैं उसी प्रकार वे जमींदारों को लगान देते हैं। लगान देते रहने पर हमारे यहां मौजादार हमको जमीन पर से भगा नही सकते। किन्तु उनके यहां जमींदार जभी चाहें उन्हें भगा सकते हैं। जमींदार उनको पीटते हैं, गुण्डों की सहायता से उनके घर-द्वार तोड़ देते हैं। इस देश में जमींदारों को न देखकर वे बड़े आश्चर्यचकित हुए। अपनी चाह के अनुसार खेती करते हैं—जूट की, मिर्च की। बड़े धान की खेती करना शुरू किया हमारे आहु धान की ही तरह। किन्तु खेत में सिचाई करनी पड़ती है। जूट बेचकर रुपया लाते हैं। उससे रंगीन कपड़े खरीदते हैं। इतना आनन्द करते हैं, रेशमी रूमाल गले में लपेटकर जिले में जाकर केला और बिस्कुट से चाय पीते हैं। जो अधिक शौकीन हैं वे सफेद घोड़े खरीदते हैं। और रंगीन कपड़ों की जीन लगाकर घूमते-रहते हैं।

शुरू-शुरू में उन्होंने मौजेदार को ही जमींदार समझा था, और इसलिए उनसे सहमकर रहते थे। किन्तु जब उनको मालूम हुआ कि उनको जमींदारों जैसा अधिकार नहीं है तो उनका हौसला बढ़ गया। देश में चोरी-डकैती भी बढ़ी। कचहरी बढ़ गयी। बंगाली वकील से देश भर गया। जेलखाने की बांस की दीवारों को

बदलकर ईंट की बनाया गया।

यह मेठ उसी प्रकार का मैमनसिंह आदमी था। डकैती के अभियोग में उसको काला पानी की सजा हुई थी। किन्तु तीन सौ रुपये खर्च करके उसने 'कइलकाता' के 'हाइकुट' में 'आफील' करायी और उसकी सजा घटकर सात वर्ष की कैद में बदल गयी। उसके साथ के आदमी को फांसी की सजा हुई।

एक दिन उस मेठ ने रूपाइ के साथ के कुछ वालण्टियरों पर पैर से प्रहार किया। साले खूनी आसामी का इतना साहस है। गांधी महाराज के 'सत्याग्रहियों' के ऊपर हाथ चलाता है। उस दिन उसको गुस्सा हो आया। मेठ को आसामी के रूप मे जानना अभी मुश्किल से दो-चार दिन हुए हैं। उन लोगों ने मेठ को पकड़-कर दो-चार थप्पड़ जड़ दिये। उनके साथ एक अन्य मैमनसिंही था, कहते हैं उसका उस पर बहुत दिन से खप्पा था। वह मेठ को गिराकर उस पर बैठ गया और उसके गले को दबा दिया। मेठ की बड़ी-बड़ी आंखें मानो अभी निकल ही आयेंगी। वे ही जब मेठ को उस मैमनसिंही से छुड़वाने की कोशिश करने लगे तो कुछ वार्डर और पुलिस आकर उन्हें अंधाधुंध पीटने लगी। कुछ के हाथ-पैर टूटे, कुछ के सिर फूटे। वे ही आकर पुनः ट्रेसर पर उन्हें ले गये। डॉक्टर आकर मरहम-पट्टी कर गया। उसको ज्यादा जख्म नहीं हुआ था, केवल कनपटी पर जरा जख्म हुआ था।

अगले दिन से ही उसे एक अंधेरी कोठरी में रखा गया। हवा या रोशनी में जाने का कोई रास्ता नहीं था। दरवाजा यदि बंद रखा जाय तो दिन में ही रात जैसा लगता है। एक दिन उसके हाथों में जंजीर लगाकर ऊपर की ओर टांग रखा। सारा दिन, कितना कष्ट है। पैर की नोंक से किसी प्रकार जमीन को स्पर्श किया जा सकता है।

एक हफ्ते के बाद उसे पुनः पहले के मकान में लाया गया। साथ के दूसरे लोगों से पूछने पर उसे मालूम हुआ कि औरों को 'डण्डा-बेड़ी' पहनायी गयी थी। दो जख्मी आदमी अब भी अस्पताल में हैं। जिसका सिर फूटा है, कहते हैं कि उसकी हालत अच्छी नहीं है। रूपाइ ने एक मणि वकील से मिलकर सब बातें कहीं। सुनकर मणि वकील ने एक लम्बा 'लेक्चर' दे दिया। किसी एक के बारे में कहा—कहते हैं कि उसने कहा था एक गाल पर कोई यदि चपत लगाता है तो दूसरा गाल भी उसके सामने कर देना चाहिए। इसलिए अन्याय करने पर भी सहना ही होगा इत्यादि। इसी समय जेलर साहब आने के कारण मणि वकील हंस-हंसकर अंग्रेजी मिश्रित भाषा में बातें करने लगा।

वार्डर, मेठ और दूसरे कैदियों के साथ इसी प्रकार की छोटी-मोटी घटनायें प्रायः होती थीं। सी क्लास के कैदियों ने मिलकर मणि वकील से कहा कि वह प्रयत्न करे कि सभी वालण्टियर एक ही साथ रह सकें। किन्तु उन्होंने कुछ भी नहीं किया। एक दिन जेल निरीक्षण में आने वाले किसी एक 'साहब' के साथ

लीला मास्टर के बेटे और बारपुजीया के वालंटियरों ने अंग्रेजी में ही कुछ कहा। इसके बाद सभी सत्याग्रही एक साथ रहने लगे। बरभगीया के तुलाराम गायन के साथ उसका उसी समय से परिचय हुआ। गेला पोतनी के तिलक गोसाईं के साथ भी। मणि वकील से कुछ पूछने पर आधी अंग्रेजी और आधी असमीया में कुछ कहते हैं—जो उन्हें समझ में ही नहीं आता। तिलक गोसाईं की सारी बातें उन्हें समझ में आती हैं। मणि वकील का 'लेक्चर' उसने जुबिली मैदान में भी सुना है, "भारतवर्ष को अंग्रेजों ने ऐसा किया है, तैसा किया है, इसलिए भारत को स्वराज चाहिए ही। विलायती कपड़ों को जलाना चाहिए। महात्मा गांधी ने कहा है। किन्तु क्यों? उनके बारे में अभी ही तिलक गोसाई ने ठीक तरह से समझा दिया है। तिलक गोसाई को उसने पहले 'परभु ईश्वर' कह के सम्बोधित किया था। किन्तु जिन्होंने केवल 'गोसाई' का सम्बोधन करने के लिए कहा है। इधर वे उन्हें केवल 'गोसाई' कह के ही सम्बोधित करते हैं। तिलक गोसाईं उनसे महात्मा गांधी की कथा कहते हैं। महात्मा गांधी ने भी अफ्रीका में पुलिस की लात खायी थी। बन्दूक की मार से अपने आगे के दांतों को खोया था। तिस पर भी उन्होंने उनसे एक भी कड़ा शब्द नहीं कहा। वे ही असली सत्याग्रही हैं। सचाई के लिए वे अपने प्राण दे देंगे। किन्तु कभी भी अन्याय करने वाले पर हिंसा नहीं करेंगे। वे कहते हैं—सत्यग्राही—किन्तु यह शब्द मूल है—असली शब्द है—सत्याग्रही। सत्य के प्रति जिसका आग्रह रहता है, वही सत्याग्रही है। 'वन्दे मातरम्' कहकर जेल में जाने से काम नहीं चलता।

अहिंसा की बात समझाते हैं। बुद्धदेव की बात कहते हैं। तुलाराम गायन पूछता है, "बुद्ध कल्कि नामे दश आकृति धरिछा कृष्ण—वही बुद्ध है क्या?"

"वही बुद्ध है गायन, उसी से महात्मा ने अहिंसा की बात सीखी है।"

"कहते हैं कि महात्मा गांधी एक अवतारी आत्मा है, क्या यह सच है गोसाईं जी?"

"जिस प्रकार शंकर गुरु अवतारी आत्मा थे, उसी प्रकार महात्मा गांधी हैं।"

"यदि वे अवतारी आत्मा ही हैं तो अंग्रेजों के हाथ में क्यों कैद रहते हैं? म्लेच्छों को समाप्त कर देते तो अच्छा होता।"

"शंकर महापुरुष भी आहोम-कछारियों के डर से भागे थे, गायन! किन्तु ये उनसे भी एक कदम आगे हैं। ये शत्रु के हाथ में अपने को समर्पित करके कष्ट झेल-कर देश का उद्धार करना चाहते हैं।"

गांधी महाराज के सहायता करने वाले गुण के बारे में सुनकर मेठ को पीटे जाने की बात के लिए उसे शर्म का अनुभव हुआ।

विलायती कपड़ा क्यों नहीं पहनना चाहिए। उसके बारे में भी गोसाईं ने समझा दिया है। किस प्रकार हमारे देश की कपास विलायत जाती है। किस प्रकार

वहां से कपड़ा बनकर आता है, सारे पैसे किस प्रकार विलायत चले जाते हैं ? उनके बारे में वे स्पष्ट समझा देते हैं। इसलिए ही हमारा देश इतना गरीब है। विलायती कपड़ा यदि न पहना जाय तो देश का पैसा देश में ही रहेगा। देश- हरा भरा हो जायगा।

ये सारी बातें तो बिल्कुल मामूली हैं। किन्तु अब तक उसको समझ में ही नहीं आती थीं। मणि वकील वाले इन बातों को बड़ी जटिलता के साथ कहते हैं। जेल की सारी असुविधाओं के बारे में वह भूल गया। जेल में आने के कारण उसने अपने भाग्य की सराहना की। तिलक गोसाईं नहीं मिलते तो उसे इन बातों की जानकारी कैसे होती। इस बार वह दूसरे की देखादेखी जेल में आया है। गांव में लौटकर वह लोगों से सभी बातों के बारे में समझाकर कहेगा। इतनी सहज बात है कि गांव के लोग समझेंगे ही। देश में 'सुराज' होगा ही। उनके गांव सुन्दर बनेंगे। किसी की भी जमीन की कुर्की नही होगी।

बाहर की बातों की जानकारी उन्हें बहुत ही कम होती है। बीच-बीच में नये-वालण्टियर आते हैं। उनसे ही जो कुछ सुन सकते हैं, सुन लेते हैं। जेल में जगह की कमी होने के कारण इधर सबको जेल में नहीं लाते हैं, पुलिस थाने में ले जाकर मार-पीट करके छोड़ देते हैं। जेल में आने का मौका पाने से ही मार-पीट से बचा जा सकता है। इनके बारे में जानकर अपने को भाग्यवान समझा कि वह पहले ही जेल में आ सका। किन्तु मार-पीट में उसकी अपनी जान चली जाने पर भी वह किसी पर हाथ नही उठायगा यह निश्चित है।

एक दिन अकस्मात् ही उनमें से दो-चारों को जेल के ऑफिस में ले गये। उस घर में उन्हें महीने में एक बार जाना पड़ता है। उनका वजन लिया जाता है। आज वह दिन नही है। तो उसे जरा डर भी लगता है। कुछ देर के बाद मालूम हुआ कि उन्हें वहां से स्थानान्तरित किया है। कहां ले जायगा ? गुवाहाटी, तेजपुर, सिलहट के जेलर कहते हैं कि बड़ा दुष्ट है। होने दे, वह अहिंसा सत्याग्रही है। वह किसी से भी नहीं डरता।

बहुत दिनों के बाद वह बाहर के जगत को देख पायगा। उसका मन आनन्द से नाच उठता है। किंतु तिलक गोसाईं को छोड़ जाने के लिए उसे बुरा लगा। उसने मन ही मन निश्चय किया कि 'सुराज' होने पर वह तिलक गोसाईं की ही 'शरण (दीक्षा) लेगा।

छः सिपाही उन्हें बांधकर ले गये। उसे बांधकर रास्ते पर से ले जाने पर भी उसको लज्जा का अनुभव नही हुआ। जुराई अफीमची को एक बार धरम तुल के सिपाही बांधकर ले गये थे—मीनाराम दुकानदार के यहां चोरी करने के कारण। उसने अनुभव किया कि उसके और जुराइ को बांधकर ले जाने में फर्क है। कलंङ नदी के किनारे, पीपल के पेड़ों के बीच मे रास्ते से बड़े साहब के पास से मारवाड़ी

बाजार के बीच से उनको 'स्टेशन' ले जाया गया था। कलंङ को देखकर उसकी छाती एक बार कांप उठी थी। उसको विश्वास हुआ कि वह इस बार कपिली को भी देख पायगा। उसे कलंङ कभी भी अच्छी नहीं लगी थी। आज अच्छी लगी।

बंगाली पट्टी में कुछ छोटे-छोटे बच्चे 'पसेसन' कर रहे थे। उनको देखकर लड़कों ने नारा दिया—'वन्दे मातरम्!'

बंधे हाथों को ऊपर उठाकर उन्होंने भी नारा लगाया—'वन्दे मातरम्।'

एक सिपाही चिल्ला उठा—"चुप रह साले।" उसको हंसी आयी, बुद्ध की हंसी। शूली पर चढ़ाने के पहले शायद ईसा भी इसी तरह हंसे होंगे।

रेलगाड़ी चल पड़ी। चापर स्टेशन में जाकर चुकी। उन्हें स्टेशन के बरामदे में ही बिठाकर सिपाही बीड़ी सुलगाने लगे। बीड़ी! रेड लैम्प सिगरेट नहीं गांधी बीड़ी है। सिपाही के मुंह में भी बीड़ी देखकर उसे खुशी हुई। 'सुराज' होगा ही। स्टेशन के पास से ही कपिली बहती है। केवल कई सौ गज की दूरी पर है। मां कपिली। क्या सिपाही एक बार उसे कपिली को देख आने के लिए अनुमति देंगे? वह गांधी बीड़ी पीने वाले सिपाही पास जाकर खड़ा हो गया। "सिपाही भैया" अपनी आवाज को जितनी मुलायम कर सके उतनी मुलायम करके उसने सम्बोधन किया "सिपाही भैया"।"

सिपाही ने बीड़ी का एक लम्बा कश लगाकर कहा—"तेरा बाप सिपाही मिला है। हवलदार साहब नहीं कह सकता?"

"हवलदार साहब।" उसने धीरे-से आवाज दी।

सिपाही ने और एक कश लगाया और बीड़ी को फेंककर कड़े शब्दों में कहा—"क्या हुआ?"

"जरा बाहर से आना चाहता हूं···काफी समय से···"

बड़े विरक्त होकर हवालदार साहब ने अपना मुंह बनाया और एक सिपाही से कहा—' रामलाल, इसे पाखाना ले जाओ।"

रूपाइ रेल मार्ग पार कर जाना चाहता था। सिपाही ने कहा·····उधर कहां जाता है? चल, पाखाना।"

कपिली को देखने के लिए उसने जो उपाय किया था, वह कारगर नहीं हुआ। उसको निराशा हुई। तथापि उसने एक बार सिपाही से कहा···हम देहाती आदमी हैं, पाखाना यहां अच्छा नहीं लगता।"

"नही, नही"—सिपाही ने अस्वीकृति से सिर हिलाया, 'वह नही हो सकता··· कहीं भाग जायगा। पाखाने में चल।"

रात को दस बजे वह रेल-गाड़ी पर चढ़ा। नीचे की और जानेवाली रेल-गाड़ी थी। तो, उन्हें गुवाहाटी में ही स्थानतरित किया गया है। इसका अर्थ है उन्हें रास्ते में कपिली मिल जायगी! उसका इतना भाग्य है। रेल-गाड़ी चल रही है··· यह इतनी धीमी चल रही है। 'धरमतुल दो मिनट'···लालटेनवाला एक आदमी चिल्लाया। एक लम्बी सीटी देकर रेल-गाड़ी फिर आगे बढ़ी। और कितनी दूर है···धरमतुल का पुल आयेगा ही नहीं क्या? कितनी दूर है, और कितनी दूर है। रेल-गाड़ी चलने की आवाज के साथ स्वर मिलाकर बच्चों की तरह वह गाने लगा···।

कपिली का पुल कब मिलेगा,···कपिली का पुल कब मिलेगा···।

रेल-गाड़ी की गति धीमी हुई। एक गम्-गम् की आवाज सुनाई पड़ी। रेल-गाड़ी पुल पर चढ़ी है, कपिली पुल है—शरीर पर से कुछ सरककर जाने की तरह उसे लगा। उसने खिड़की से बाहर की ओर नजर दौड़ायी, अंधेरा है! सफेद बालू के बीच पानी की धार को वह पहचानता है, नीला-सा सफेद, बूटीथम। यही कपिली नदी है···कपिली जिन्दा नदी है! उसने सिर नवा लिया।

एक लम्बी सीटी देकर रेल-गाड़ी आगे बढ़ती गयी। धरमतुल को पीछे छोड़कर, कपिली को पीछे छोड़कर रेल-गाड़ी आगे बढ़ गयी। उसने तिलक गोसाई के बारे में सोचा। तिलक गोसाई का भी उसके साथ ही स्थानान्तर होता। आज उसने एक झूठ बात कही है···कपिली को देखने की इच्छा से एक झूठ बात कही है। वह सत्याग्रही है···उसको बुरा लगा। कपिली के प्यार ने उससे झूठ कहलवाया? क्या ईश्वर ने इसे अपराध माना है? महात्मा गांधी ने? तिलक गोसाई ने?

जेल से निकलते ही उसे मालूम हो गया था कि वह कपिली को देख पायेगा। बीच में बेकार ही झूठ कहकर अपने मन को काला कर लिया है। उसे बड़ा बुरा लगा। उसी तरह बहुत से लोगों द्वारा सुराज के नाम से झूठ बोलने के कारण ही सुराज आने में इतना विलम्ब हुआ है। इस बार के लिए उसकी क्षमा कर दी गयी है, इसलिए ही वह कपिली को एक बार नमस्कार कर सका। झूठ बोलने की सजा के रूप में उसे जोरहाट में स्थानान्तरित करना चाहिए था। तभी उसका प्रायश्चित्त होता। नहीं, वह और झूठ नहीं बोलेगा। विश्वास के साथ काम करता जाएगा।

अगले दिन सबेरे वे गुवाहाटी पहुंचे। जेलखाना पहुंचने में आठ बज गये। उनको काफी भूख लगी थी। चापरमुख में उन्हें खाने के लिए कुछ मोटे चूड़ा के

सिवा और कुछ भी नहीं दिया था। इस समय जेल पहुंचने पर भी उन्हें 'लपसी' नहीं मिली। समय निकल गया था। अब शाम को ही···क्यों महात्मा ने तो बहुत दिनों तक बिना खाये अनशन किया था।

गुवाहाटी जेल मे उसे 'सुधांसु' बाबू मिले। ऊंचा, किन्तु पतला आदमी था। उसके चाचा की तरह दमे की शिकायत थी बातें जरा रुक-रुककर किया करता है। पानबाजार में दुकान थी···कपड़े और मनीहारी मालों की। दुकान का नाम था—"दि रेडिमनि कोम्पानी।" सन् 1921 ई० में अपनी दुकान के सामानों को अपने ही हाथों जलाकर कांग्रेसी बना, उस दिन मे वह और विलायती सामान नहीं बेचता है। खद्दर ही बेचता है। बंगलक्ष्मी कोम्पानी का 'सुबासित तिल तेल' और 'बौदिदि तरल आलता' भी बेचता है। दुकान छोटी हो गयी। लोग खद्दर भी ज्यादा नहीं खरीदते। इसलिए, उनकी हालत दिन-दिन खराब होती गयी। इस बार भी जेल में आना पड़ा, न जाने बाल-बच्चों का क्या हुआ होगा। 'सुधांसु' वाबू गाना गाता है। उसकी आवाज जरा फटी-फटी होते हुए भी मीठी थी। सबेरे बिस्तर से उठकर ही वह 'सुधांसु' बाबू का गाना सुनता है। 'सब मिले आजि भारत सन्तान'···'बल बल बल सबे'—ये सब गाने। बंगला गाना हैं। गानों की बातों को ठीक तरह से न समझ पा सकने पर भी उसे अच्छा लगता है। ये सब सुराज के ही गाने होंगे। उसने सुधांसु बाबू से पूछा,—"ये क्या सुराज के गाने नहीं हैं ?"

"हां भाई,—ये 'स्वदेशी' युग के गाने हैं। क्षुदिराम का नाम तुमने सुना है ? उसी समय के गाने हैं।" सुधांसु बाबू अच्छी असमीया बोलता है। किन्तु, 'स' अक्षर का असमीया उच्चारण ही ठीक तरह से कर नहीं पाता। सुधांसु बाबू उसे स्वदेशी युग की बात समझाता है···क्षुदिराम की फांसी, लाट साहब पर पिष्टोल चलानेवाली लड़की की बात कहता है। हाल ही में घटनेवाली चटगांव के माल-खाना लूटने की बात कहता है—इसी प्रकार की बातें। क्षुदिराम ने गोली और बारूद से साहबों को मारकर अंग्रेजों को डराकर भगाना चाहा था। किंतु ऐसा कर नहीं पाया। इसलिए 'महात्ता' गांधी ने (सुधांसु बाबू महात्मा को 'महात्ता' कहता है) कहा कि हिंसा से हिंसा को दूर नहीं किया जा सकता। गोली और बारूद से सुराज नहीं आयेगा। साहबों के मन को हमें खुद की मार खा-खाकर बदलना होगा। केवल सुराज लाने से ही हमारा कार्य समाप्त नहीं होगा, दुनिया से ही लड़ाई-झगड़ों को दूर करना होगा। हिंसा-द्वेष को समाप्त करना होगा।

सुधांसु बाबू सन् सत्तावन साल की कहानियों के बारे में कहता है। हिन्दु-मुसलिम एकता की बात। तांत्याटोपे, नाना साहब आदि की बातें।

रूपाइ को अपने आप बहुत-सी बातों को जाननेवाला जैसा अनुभव करता है। उसका मनाकाश मानों बिलकुल साफ हो जाता है। उसने इतना सीखा, इतना

समझा। तिलक और सुधांसु बाबू के प्रति उसका भाव-भक्ति से भी गहरा, प्रीति से भी स्निग्ध हो गया है। जेलखाना उसे तीर्थ क्षेत्र जैसा लगा।

अकस्मात् कुछ हो गया। एक दिन उन सबको मुक्त कर दिया गया। कई एक दिन से उन्होंने काना-फूसी की बातें सुनी थी। गांधी और बड़े लाट साहब कुछ समझौता कर लेंगे। शायद वही हुआ होगा। कुछ छोटे-छोटे बच्चों ने उन्हें जेल के फाटक पर माला पहनायीं। प्राइज की मिटिंग में 'डिप्निसपेकटर' को पहनाये जाने की तरह। इसके बाद उनका फोटो उतारा गया। मालाओं को पहनकर फोटो खींचने वाले आदमी के पास खड़ा होते समय उसने सोचा···सुराज हो गया होगा। ऐसा न हुआ होता तो उनको माला पहनाने की क्या जरूरत थी? गांधी महाराज किसी-न-किसी प्रकार कुछ कर वर के सुराज ला ही छोड़े। उसने तुरंत जेल के साहब की ओर नजर दी, खद्दर पहना है क्या? ओहो, नहीं पहना है! तो भी, वह उतना निराश नहीं हुआ। कुछ अवश्य ही अच्छा हुआ होगा। उसने डरते-डरते जेल के दरवाजे के ऊपर की पताका की ओर देखा, हो न हो सुराज की पताका फहरी ही हो। ओहो, वह पुरानी लाल, नील और सफेद रंगवाली ही। इसका अर्थ है सुराज नहीं हुआ। तो भी उसका उत्साह नहीं घटा। कहीं कुछ हुआ है, कुछ अच्छा अवश्य हुआ है। सुराज की किरण कहीं किसी ओर फैली है। एक पग आगे बढ़ी है किसी नये रास्ते से—कहां, किस ओर? उसे वह नहीं समझ सका।

सुधांसु बाबू के साथ बातें करके वह धीरे-धीरे आगे बढ़ आया।

सभी चीजें एक ही तरह से हैं क्या? जेल के सामने के उस उत्साह का किसी प्रकार का आभास उसे कहीं नहीं दिखाई पड़ा। उनके गले में मालाएँ देखकर भी किसी को भी किसी प्रकार का कौतुहल नहीं हुआ है···कामाख्या से कितने लोग सदा इस प्रकार आते हैं। उसकी सफेद गांधी टोपी भी क्या किसी की नजर में नहीं पड़ी है? वह मन-ही-मन जरा खिन्न हो उठा।···सचमुच ही कुछ भी परिवर्तन नहीं हुआ है क्या? गले की माला पर उसको गुस्सा हो आता है, उसे उतारकर हाथ में लेता है। उसे कुचल डालने की इच्छा होती है।

गांव कब पहुंचेगा उसी चिंता में उसका मन बावला हो उठता है। शहर ठंडा है। लोगों का कुछ भी आग्रह नहीं है।···वे सुराज के लिए जेल गये हैं, किन्तु इधर शराब की दुकान में भीड़ कम नहीं हुई, अफीम की दुकान में अफीमचियों की भीड़ है। वह हताश हो उठा। नहीं, इस प्रकार काम नहीं चलेगा, महात्मा के कहेनुसार ही काम करना पड़ेगा। वह सूत कातेगा। जेल में सीखी हुई बातें गांव में समझाकर कहेगा। सुधांसु बाबू के द्वारा गाये गये गानों की तरह गाने सिखायेगा। क्या बेथाराम पण्डित होगा? नया अनुभव और महात्मा गांधी का एक चित्र लेकर कपिली के किनारे वाला लड़का कपिली के किनारे इस बार लौट आया।

गांव में आकर उसने देखा कि आन्दोलन उसके गांव को भी अच्छी तरह छू

गया था। उसके गांव के बहुत से लड़कों ने पुलिस की मार खायी है—बहुत जेल भी गये। जेल से निकलकर आनेवाले बहुत-से लड़कों ने बेकारों की संख्या को बढ़ाया है। वलण्टियर शब्द बहुत समय बेकार का पर्यायवाची बन गया। किन्तु, क्या गांधी महाराज ने यही चाहा था? वह क्या करेगा—कुछ दिन तक सोचता रहा। वलण्टियर का नाम उसके लिए कलंक स्वरूप हो गया है। उसकी बातों पर लोगों ने अधिक ध्यान नहीं दिया। गांव की पाठशाला भी आज कुछ दिनों से बन्द पड़ी है। बेथाराम पण्डित जेल गया था···और जेल में ही उसकी मृत्यु हो गयी थी। स्कूल को पुनः खोलने की बात जब उसने गांववालों से कही···तू ही जब पढ़-लिखकर आया है, तू ही इसे चला, मास्टर बन—गांववालों का यही उत्तर था।

सबको दायित्व छोड़ने की आदत है। उसने जाकर गांजाखोर भगत से कहा····"भगत, मैं क्या करूं, बोलो, गांव देखता हूं बहुत पिछड़ गया है स्कूल के लिए भी कोई नहीं सोचता।"

भगत ने पूछा—"उन लोगों ने क्या कहा है?"

"स्कूल यदि तुझे चाहिए तो तू ही पण्डित बन। सिर्फ कांग्रेस की बात अधिक मत सिखा। भगत, मुझे भी इन बेकार लड़कों के साथ गिना है।"

"ऐसा होता ही है रूपाइ, इनको क्या दोष दोगे? तुममें अब भी अभिमान है···इसलिए ही तुम्हें दुःख हुआ। तुम अपने कामों के जरिये दिखाओ कि तुम बेकार नहीं हो।"

"मैं यदि स्कूल को खोलूं, क्या गांववाले अपने बच्चों को भेजेंगे?"

"नहीं भेजेंगे? बाप भेजेंगे। तुम खोलकर देखो, मैं तुम्हारे साथ हूं।"

एक आदमी है। गांजाखोर भगत है। उसी के ऊपर भरोसा करके उसने अपने कार्यक्रम बनाये। असमीया गांवों के नियमानुसार गांव के सबसे जीर्ण मकान ही उनकी पाठशाला का मकान था। बहुत दिनों तक व्यवहार में न आनेवाला वह मकान टूट-फूट गया था। वह खुद ही जंगल से अमलताश के खंभे काट लाया, अपनी आरी से बांस-फूस काट लाया और अकेले ही मकान बनाना आरम्भ किया। दूसरी ओर गांजाखोर भगत भी रूपाइ को सहायता करने लगा। रूपाइ ने एक दिन देखा कि हर आदमी से तीन-तीन करके बांस स्कूल में आये हैं। काम करने के लिए भी लोग आये,···आरंभ में एक-दो···इसके बाद अधिक संख्या में। ये सारे कार्य निश्चय ही गांजाखोर भगत के ही हैं। भगत?—तुम भी तिलक गोसाईं के साथ वाले हो···गांव के बेमेल और हिंसा-द्वेष के बीच भी आत्मा का दीया इसी प्रकार जलता रहता है—बिना बुझे।

मकान बन गया था। इस बार गांववालों ने उससे पंडित बनने के लिए कहा, इस बार मजाक के लिए नहीं, सचमुच कहा गया। उसने गांववालों को समझाया··· जिले में यद्यपि वह रहा है, तथापि बच्चों को पढ़ाने लायक विद्या उसे नहीं

आती। किसान का लड़का है वह···वह खेती ही करेगा, उसके लिए वही अच्छा होगा।"

"किन्तु, मास्टर कहां मिलेगा ?"

"मैं कुछ-न-कुछ इंतजाम करूंगा न।"

रूपाइ ने समझा कि उसकी बातों पर गांववालों ने कुछ वजन दिया है। कौन-सा इंतजाम करोगे, कहां से मास्टर लाओगे···इस प्रकार के अविश्वास के प्रश्न उसमें किसी ने नहीं किये।

"आप लोग यह वचन दें कि बोर्ड जब तक सहायता न दे तब तक मास्टर रखने का सारा खर्च आप लोग खुद ही भरेंगे···" उसने साहस करके यह बात भी कह दी।

आश्चर्य की बात है कि गांववालों ने इस बात को मान भी लिया।

उस दिन रात को उसने तिलक गोसाईं को एक पत्र लिखा: महामहिम श्रीचरण कमलेषु, श्री श्रीगोसाईं प्रभु।

अधीन का विनीत निवेदन यह है कि अधीन का मंगल है। विशेष बात यह है कि हमारे गांव की निम्न प्राथमिक पाठशाला के पंडित बेथाराम की 'सुराज' के कार्य में सिलहट के जेल में मृत्यु हुई है। हम एक अच्छे शिक्षक को ढूंढ रहे हैं। जब तक लोकल बोर्ड सहायता नहीं देता तब तक हम सभी चंदा करके पंडित को मासिक 12 रुपये देंगे। गांववाले भी राजी हुए हैं। इसलिए आप से विनती है कि आप हमारी पाठशाला के लिए एक अच्छे शिक्षक भेज दें।

मैं कुशलपूर्वक हूं। आपके लिए भी यही कामना करता हूं। इति।

आपका एकान्त वाध्य, श्रीरपसिंह रजा।

पत्र को लिखकर रूपाइ ने गांव वालों को सुनाया। उन्होंने तिलक गोसाईं की बात उसी के मुंह से ही सुनी है। गांजाखोर भगत ने पहचान भी लिया।

"अच्छी बात है। जो हल-बल जोतता है उससे पढ़वाना मुश्किल होता है।" गांजाखोर भगत ने कहा—"जो पढ़ाता है, जो पढ़ता है और जो पान के पौधे की खेती करता है—उसे और विषयों की चिंता नहीं होती। इसी प्रकार एक पंडित मिल जाए तो अच्छा है। कोई गोसाईं ही यदि मिल जाये तो और अच्छा है। गांव के भाओना-नाटक आदि में एकाध पद भी गाकर सुना सकेगा।"

तिलक गोसाईं ने करीब एक हफ्ते के भीतर ही अपने भतीजा बसु को भेजा। बसु के 'मैट्रिक' पास होने के कारण गांव वालों को और आनन्द हुआ। बसु गोसाईं देखने में अपने चाचा की तरह ही है, ~~केवल~~ तिलक गोसाईं की तरह कंधे तक लटके हुए उसके बाल नहीं हैं। उसकी आवाज भी चाचा की तरह ही है, किंतु उनके समान गंभीर नहीं है। कम उम्र में ही जो आदमी गंभीर हो जाता है—वह

भीतर की ओर चालाक होता है,—जरा चंचल होना ही अच्छा है। गांव का सबसे बड़ा मकान 'पातचला' (पाठशाला) होने की तरह ही सबसे अधिक गुस्सैल आदमी होता है उसका पंडित। बसु गोसाईं ऐसा न निकलने के कारण गांव वालों को अच्छा भी लगा—और वे डरे भी। कौन जाने बच्चों पर शासन कर पायेगा या नहीं ?

रूपाइ ने खेती-बाड़ी में अपना मन लगाया। कपिली भी अभी शांत है। उसकी दादी सूत कातती है, रंङिली बुनती है। उस कपड़े के सिवा दूसरा कपड़ा वह नही पहनता। खाली समय में वह भी सूत कातता है। स्कूल के अन्य आवश्यक कार्यों को वह सम्भाल लेता है।

सामान्य जीवन उसे नहीं रुचता। वह सुखी है, किंतु उसके मन में एक कुतूहल रहता है। महात्मा गांधी के फोटो के सामने वह अकेले ही कुछ बुदबुदाता है। एक बार तीन दिन तक बिना खाये रह गया था—महात्मा गांधी की तरह। उसे अकस्मात् स्मरण हो आया—जेल में जब वह रहता था उसने तिलक गोसाईं से ही शरण लेने का निश्चय किया था···। उसने सोचा कि शायद यही बात उसके मन में हलचल मचा रही है। तिलक गोसाईं से ही दीक्षा लेने के अपने निश्चय बारे में उसने अपने पिता से कहा।

"अरे, जिस सत्र में अपने बाप-दादों ने शरण ली ? वह सत्र तेरे लिए बुरा बन गया है ? शरण लेनी हो तो वही ले।"—उसके पिता ने कहा।

"मैं उस सत्र में 'शरण' नहीं ले रहा हूं, उनसे ही 'शरण' लेना चाह रहा हू।" अकस्मात् उसके मुंह से निकली हुई बात की गहराई को शायद वह खुद भी नही समझ सका—उसके पिता की समझ में यदि न आया तो कोई आश्चर्य की बात नहीं।

"बात तो एक ही हुई, कर-सीधा (दान) आदि उनके सत्र को ही देना पड़ेगा।"

कर-सीधा ? भक्ति का एक सामाजिक पहलू भी है—उसके मन में यह बात आयी ही नही थी। वह 'शरण' लेगा, उसके ज्ञान की वृद्धि होगी—उसमें एक विराट परिवर्तन होगा। कीड़ा अपने खोल से निकलकर तितली बनकर उड़ जायेगा। 'शरण' लेने की तरह रोमांचित करने वाली कल्पना को इन छोटी-मोटी कथाओं ने जरा कम महत्व बना दिया। उसने जरा निराश भाव से कहा—"मैंने उन्हीं से 'शरण' ले रखी है, बापू···।"

गांजाखोर भगत ने मुस्कराकर कहा—"रजा, कपिली माता को बांधने के लिए कोशिश न करना—क्या कर सकोगे ?"

धीर सिंह के मुंह का रंग जरा फीका पड़ गया। जो बात एक बार वह भूल गया था, आज मानो पुनः वह स्मृति में आ गयी हो।

भगत जब भी इस प्रकार कपिली की बात कहता है रूपाइ उसमें एक दूर का

संकेत पाता है । वह क्या है ? क्या है ?

तिलक गोसाईं से ही रूपाइ के दीक्षा लेने की बात तय हुई ।

उसने एक दिन सबेरे उठकर स्नान कर लिया और रास्ते में कहीं भी बिना रुके इधर-उधर पूछकर पौतनी गांव जा पहुंचा ।

झील के किनारे-किनारे गांव । ये गांव उसे ऐसा लगा कि आगे बढ़े हुए नहीं हैं । रास्ते के किनारे के बकुल और पाढर के वृक्षों की पंक्तियां गांओं में एक शान्त वातावरण ला रही थी । तिलक गोसाईं का मकान किस ओर है ? वह सोचते हुए आगे बढ़ता है । उस समय सांझ होने वाली थी—मवेशी बढ़मपुर के मैदान से चर-कर लौट रहे थे ।

"अरे भाई देखना, बैल को पकड़ो न ?"

उसने झटपट पीछे की ओर ताका । एक बैलगाड़ी से एक बैल निकलकर दौड़ रहा था । बैल को अब तक नकेल नहीं लगाया था । गाड़ी के आदमी ने ही कहा था—"पकड़ो भैया, पकड़ो बैल को ।" उसने बैल को पकड़ लिया । बैल को पुनः गाड़ी में जोतकर आदमी बैलों को साधने लगा—"हेइ-हेइ, चल-चल ।"

"भैया, तिलक गोसाईं का मकान किस ओर है, तुम्हें मालूम है ?"—उसने पूछा ।

"कौन ? वह 'कैदी' गोसाईं ?"

तिलक गोसाईं के प्रति उस आदमी की भावना अच्छी नहीं थी । तो भी उसने कोमल भाव से पूछा—"वह जो स्वराज के काम से जेल गये थे—उनके बारे में पूछ रहा हूं—माह-घोवा सत्र है ।"

"समझा, समझा—वलण्टियार हुआ था न ? चिको मकुवे का चपत खाया था जेल में । चोर-डकैत के साथ खाने वाले मलेछ को कौन नहीं जानता ?"

तिलक गोसाईं के प्रति आदमी का द्वेष बांध तोड़कर निकल आता है । रूपाइ आश्चर्यचकित रह जाता है । कपिली के किनारे वालों का गुस्सा आ जाना चाहता है । क्या, दे दे एक चपत ! छिः, शरण लेने वह आया है, इस समय गुस्सा करना ठीक नहीं है । उसने किसी प्रकार अपने को संभालकर कहा—"आपकी बात कैसी टेढ़ी-मेढ़ी लग रही है ?"

आदमी का स्वर और कर्कश हो उठता है—"तुम कहां के रहने वाले हो ? तुम्हारा मुखरा लालुङ लोगों की तरह लग रहा है—शराब पीकर, इस प्रकार सबको गाली न दो—समझते हो—हूं—चल-चल ।"

बैल की पूंछ को ऐंठकर दूर से ही चिल्लाकर उसने कहा—"अच्छा, मेरी बात टेढ़ी-मेढ़ी है—तू अपना सीधा रास्ता पकड़ ।"

वह आश्चर्य में पड़ जाता है । उसके साथ किये गए व्यवहार से भी वह आश्चर्यचकित हो उठता है कि—तिलक गोसाईं का भी शत्रु है । गांधी महात्मा

का भी शत्रु है क्या ? अंग्रेज ? अंग्रेज किसका भी शत्रु नही है, उन्होंने हमको पदावत कर रहा है, इसलिए ही हम उन्हें बुरा मानते हैं। शत्रु हो तो अंग्रेज सबका शत्रु है। उस आदमी का भी। किन्तु हमारा कोई आदमी भी महात्मा के बारे में इस प्रकार क्या कहता है ?

कुछ दूर जाकर उसने बकुल के दो पेड़ों के बीच से एक बंदनवार देखी। उस पर लिखा था—"ओम नमो भगवते वासुदेवाय।" बसु गोसाईं के दिये हुए विवरण के साथ पूरा मेल है। बंदरवार पर ही प्रणाम करके वह आगे बढ़ गया। घुसते ही दायीं ओर मंदिर है। कोई गा रहा है—

"गोविंद राम मुरारी मुकंदराम मुरारी
अनन्तकोटि ब्रह्मांड हरि अधिकारी—"

उसने स्वर को पहचाना। वह तिलक गोसाईं का ही था। वह आगे बढ़कर घर की नींव पर ही बैठ गया। घी के दीये के प्रकाश में तिलक गोसाईं का चेहरा एक बार उजाला हुआ है, एक बार अंधेरा हुआ है। कुछ रहस्य-सा लग रहा था। धूप की गंध, बकुल के फूल की गंध ने स्थान को—किससे तुलना करे उसकी समझ में नहीं आया। इस प्रसंग के अन्त में गोसाईं ने दीये की बत्ती को बढ़ाया और पाठ करने लगे, व बैठ गया—

कृष्णर अप्रिय नाइ, निष्ठ करि जान
उत्तम अधम प्रिय अप्रिय समान।
नाइ पिता माता कृष्ण जन्मे कर्महीन
नाइ भार्य्या पुत्र शत्रु मित्र उदासीन—
परम अज्ञानी येन किरात सकले
मुकुताक त्यजि गुंज मणि पिंघे गले—

रास्ते में मिले आदमी को वह अनायास ही क्षमा कर सका। महात्मा की यदि कोई हत्या भी करे शायद वह उसे क्षमा कर सकेगा।

"उत्तम अधम प्रिय अप्रिय समान।" उसका भी।

पाठ के अंत में गोसाईं उठ पड़े। खड़ाऊ के खट् खटाक की आवाज से वह जग पड़ा। वह झटपट खड़ा हुआ।

"कौन है ? वह कौन है ?"

"मैं ही हूं, प्रभो—आज उसने गोसाईं कह के संबोधन से उत्तर दिया। क्योंकि आज वह शरण लेगा। अपने प्राण को समर्पित करेगा। उसने झटपट भूमि स्पर्श करके नमस्कार किया। गोसाईं ने पास आकर उसके मुंह की ओर देखा—

"ओ, रजा है यह ! है न ? आओ, आओ। कब पहुंचे ? कितनी देर हुई है ?"

वह आश्चर्यचकित हो उठा—गोसाईं के प्रश्नों में एक भी—'क्यों' नहीं है। उसको बुला लिया और बैठक में बैठने के लिए कहकर गोसाईं चले गये। कुछ देर

बाद एक छोटी लड़की एक लोटा पानी दे गयी। गोसाईं की बेटी है ? गोसाईं की बेटी उसके लिए पानी लायी है— तिलक गोसाईं क्या देवता हैं ?

"पिताजी ने आपसे हाथ-मुह धोने के लिए कहा है", लड़की ने कहा—"ओ, आप देखती हूं कि जमीन पर ही बैठे हैं।" यह कहकर उसने एक चटाई आगे कर दी।

उसने उठकर हाथ-मुह धो लिए। तिलक गोसाईं भीतर आये। साथ ही एक आदमी के हाथ में एक बड़े कटोरे में 'कोमल चावल', दही, गुड़ और दो चेनिचम्पा (चिनिया) केले लिए हुए।

"खाओ रजा।" गोसाईं ने कहा—"और अभी तुम लोगों के क्या समाचार हैं ? बसु किस प्रकार स्कूल चला रहा है—?"

"आपका भतीजा क्या खराब हो सकता है ?"

"छुटपन में वह बड़ा ही नटखट था—जहां-तहां घूमता रहता था, पढ़ाई-लिखाई में भी उसका मन नहीं लगता था—किन्तु हमारे भैया के चल बसने के समय से उसमें बड़ा परिवर्तन आया—अपनी ओर से एक छोटी सी दुकान खोली—पढ़ा भी। मैं जिन दिनों जेल में रहा, उसी ने ही घर-द्वार चलाया। तुम्हारा पत्र पाकर उसे भेज दिया।"—

"आपकी किरपा है—ईश्वर।"

"इस्स, आदमी को ईश्वर नहीं कहना चाहिए न ! किन्तु, तुम जो यहां आ निकले—उसके बारे में जान नहीं सका। धान की कटवाई के समय क्या कोई जरूरी काम है ?"

"—जेल में ही मैंने यह सोचा था कि आपसे ही शरण लूगा—उस काम को पूरा करने के उद्देश्य से ही—"

गोसाईं ने मुस्कराकर कहा—"मैंने शिष्य को दीक्षा देना छोड़ दिया है।

उसकी छाती धक्-धक् करने लगी। पूछा, "परभो—तो आपका…।"

"ओ, मैं कैसे चलता हूं ? कुछ खेती-बारी है—चामगुरीया ही—अभी-अभी जो आदमी आया था—वही सब देख लेता है। बसु की दुकान से नमक-तेल का खर्च चलता था। पुलिस ने जबसे उसकी दुकान को तोड़ दिया है चामगुरीया वही खर्च बगीचे की साग-सब्जी आदि बेचकर निकालता है।—"

इन मामूली बातों की चर्चा गोसाईं ने उससे क्यों की है ? गुरु और भक्त के बीच धर्म-तत्व के बारे में ही चर्चा होती है। इन बातों के बारे में गोसाईं ने क्यों चर्चा की है ? उसने घबराहट भरे स्वर में कहा—"किंतु आप लोग तो पहले से ही सदाचार और धर्म के रास्तों को दिखाते आये हैं।"

क्या वे दिन आज हैं ? अपने मन को साफ करो, रास्ता अपने आप निकलेगा।

और आदमी कैसे दिखा सकेगा ? मैंने इन कार्यों को छोड़ दिया है । मैं ब्राह्मण भी नहीं हूं कि हल जोत नहीं सकूं ! कुछ दिन तक वही करता था । किन्तु संस्कार कहां जायेगा ? मां-दादी रोने लगी, गांववाले हंसे हल जोतने की बात को सुनकर, अन्त में चामगुरीया ने कसम-वसम देकर इसे छोड़वाया । उस समय से वही सब कुछ करता है । मैं बगीचे की ही देखभाल करता हूं । एक रात का 'स्कूल' खुला है । रजा, मैं तुमसे क्या कहूं ? शुद्ध हृदय से काम करते जाओ । अपना परिवार, संसार, देश सबके हैं । रास्ता अपने आप निकल जायेगा । रास्ता बाहर नहीं है—यहीं है—यह कहकर गोसाईं ने छाती की ओर अंगुली से इशारा किया ।

किसी गोसाईं से इस प्रकार की बात-चीत करने का उसका यह नया अनुभव है । उनके गांव में साल में एक बार 'अधिकार' (पर्व) आता है । गांव में हलचल मच जाती है । बगीचे के अच्छे से अच्छे केले के गुच्छे को ले आकर गांववाले दूर से, ही अर्पित करके उसके सामने सिर टेकते हैं । गोसाईं पैर के अंगूठे को डुबोकर पानी देता है । उसे ही वे सिर पर रख लेते हैं ।

वही लड़की पानदान में ताम्बूल ले के आती है । कटा ताम्बूल है । गोसाईं ने अपने लिए एक बीड़ी पान लेकर पानदान उसकी ओर बढ़ा दिया । एक ही पानदान से ताम्बूल लेना उसे अच्छा नहीं लगा । सबसे आश्चर्य की यह बात हुई कि अपने जलपान खाये हुए कटोरे को साफ करने के लिए ज्योंही उसने उठाया चामगुरीया आकर उसे ले गया । वह बेवकूफ की तरह देखता ही रह गया । इसके बाद जल्दी-जल्दी उठकर अपने हाथ धोये और कटी सुपारी का एक टुकड़ा उठा लिया ।

क्यों, क्यों ? उसको, गोसाईं दीक्षा नहीं देता ? गोसाईं की बातें उसे अच्छी भी लगी हैं, दूसरी ओर दीक्षा लेने का आग्रह भी कम नहीं हुआ है । तिलक गोसाईं के यहां दीक्षा न लेने से उसका मानो कुछ भी काम पूरा नहीं होगा ।

"प्रभु, आप जानते ही हैं कि हम समाज के बिल्कुल एक छोर वाले आदमी हैं । दीक्षा न लेने पर मुझे बिरादरी में स्थान नहीं मिलेगा । उसका मनोभाव शालीनता के कगार तोड़कर निकल पड़ता है—कांपते स्वर में वह कहता है—"मैं अकिंचन महामूर्ख हूं, मुझको दीक्षा देकर मेरा उद्धार कीजिए, हे मेरे ईश्वर ! एकलव्य ने भी मिट्टी से द्रोणाचार्य की मूर्ति का निर्माण किया था !"

भगत द्वारा पढ़ा गया बंगाली गीत-नाटक 'एकलव्य की गुरु दक्षिणा' की उसे याद आ गयी । उसने सोचा, इस बार यह अन्तिम अस्त्र है ।

गोसाईं हंस पड़े । वही शांत मुस्कान है । कहा—"किन्तु, एकलव्य का क्या हुआ—याद है न ? वह बेचारा व्याध का लड़का था । अपने अंगूठे को गुरु दक्षिणा के रूप में देकर वह एक चिड़िया तक का शिकार नहीं कर सका । हम दीक्षा देकर शिष्य इसलिए ही बनाते हैं । यह नहीं करना चाहिए, वह नहीं करना चाहिए—

इस प्रकार से उसे बांध लेते हैं—अच्छा, बातें कल ही हम कर सकेंगे। मैं जरा बाहर से आता हूं, रात को चलने वाले स्कूल से आता हूं। मुझे विलम्ब हो सकता है, तुम थककर आये हो—मेरे लिए इंतजार करने की जरूरत नहीं है—चामगुरीया सभी इंतजाम कर देगा।

गोसाईं चले गये। वह गोसाईं की बातों के बारे में ही सोच-विचारकर बैठा रहा। गोसाईं उसे दीक्षा क्यों नहीं देना चाहते? क्या वह उसे अपात्र समझते हैं! उसका अंतिम अस्त्र भी बेकार गया। एकलव्य की गुरु-भक्ति वह आज तक भक्ति की अन्तिम सीमा समझता आया था—तिलक गोसाईं उससे आज क्या कह गये हैं! किन्तु, उसकी कही हुई बात तो झूठ नहीं है—एक ही बात को इस प्रकार अलग-अलग प्रकार से सोचा जा सकता है।

चामगुरीया आकर उसे खाने के लिए बुला गया। उसने चामगुरीया से कहा—"महाशय, मुझे यदि एक केले का पत्ता ही दे दें तो···।"

चामगुरीया समझ गया। "नहीं, कुछ नहीं होगा, उसके लिए तुम्हें सोचना नहीं होगा।"

थाली में खाना परोसा गया। खाकर ही जल्दी-जल्दी थाली कटोरे को उसने धो डाला। चामगुरीया हंस पड़ा। बूढ़े को इस सहज चेहरे के लड़के के लिए स्नेह हो आया। इस प्रकार के बहुत सारे लड़के आते हैं, एक-दो दिन करके सात दिन तक रहते हैं। उन्हें बीड़ी आदि कितनी चीजों की पूर्ति करनी पड़ती है? खाकर अपने थाली-बर्तनों भी साफ नहीं करते। गोसाईं भी इन बातों के प्रति ध्यान नहीं देते। कहने पर हंसते हैं।

चामगुरीया ने उसका परिचय पूछा। खेती-बाड़ी के बारे में बातचीत हुई। बाढ़ के बारे में चर्चा हुई। तिलक गोसाईं की बातें, उनके बड़े भाई की बात, तिलक गोसाईं के मनोबल की बात—आदि आदि। कहते हैं एक बार उनको खेत के बीच 'लम्बी चींटी' (सांप) ने काटा। मटमैला काला नाग था। ठीक दोपहर का समय था। खेत में एक जीव तक नहीं था। उन्होंने जल्दी-जल्दी अपनी ही धोती की एक पट्टी को फाड़कर काटने के स्थान पर एक गांठ बांधी। इसके बाद एक ही दौड़ में बंदनयार आ पहुंचे और "मुझको मटमैला काला नाग ने काटा है—"कह कर बेहोश हो गये। जिले के रत्न हाजरिका से दवा लाकर पिलायी गयी। बस दो दिन के बाद पहले के जैसे हो गये।

रुपाइ को अकस्मात् रास्ते में भेंट होनेवाले उस आदमी के बारे में स्मरण हो आया। उसने चामगुरीया से उसकी चर्चा की।

"ओ, सुलभ दुकानदार! बड़ा तेज आदमी है—बेटा। हमारे बसु गोसाईं की दुकान जब चली थी, उस समय उसका कारोबार खराब हो गया था। उसकी धोखे बाजी की पोल खुल जाने के कारण उसे बड़ा गुस्सा आया। गोसाईं के जेल

जाने के बाद उसने ही पुलिस से कहकर दुकान को तुड़वा दिया। गांववालों ने उसे समाज से अलग करके रखा था। किन्तु, जब बसु गोसाईं ने अपनी दुकान को बंद कर दिया तो गांववालों के सामने उसकी दुकान से माल खाने के अतिरिक्त और कोई रास्ता नहीं था। इसीलिए वह बच गया। किन्तु हमारे गोसाईं के विरुद्ध उसका बड़ा ही ईर्ष्या-भाव है। गत साल के पहले साल उसने एक विधवा की जमीन को दुकान की बाकी में हड़प लेना चाहा था, किन्तु गोसाईं के हस्तक्षेप के कारण वह हो नहीं सका। गांववाले भी उसे नहीं चाहते, किन्तु उसकी दुकान से उधार सामान न लायें तो काम भी नहीं चलता।

चामगुरीया ने एक चटाई बिछा दी। अगहन महीने का दूसरा पखवारा था। काफी ठंडक पड़ी थी। चामगुरीया एक कम्बल भी दे गया। उसने कम्बल को एक ओर सिराहने रख दिया और साथ लायी हुई चद्दर से अपने पूरे शरीर को ढंककर सोने की चेष्टा की।

तिलक गोसाईं की खड़ाऊं की आवाज से वह जग पड़ा और उठ बैठा। दर-वाजा खोलते ही चांदनी से पूरा घर जगमगा उठा।

"अरे रजा, देखता हूं कि तुम एक पतली चद्दर ओढ़कर ही सो रहे हो—कम्बल को भी ओढ़ लो, जाड़ा लगेगा।"

वह बिना बोले नत मस्तक रह जाता है।

उसने गोसाईं के मुंह की ओर ताककर कहे कि न कहे इस प्रकार के भाव से कहा—"इस बंदे का हाथ के कते सूत से बुने चद्दर से ही काम चल जायेगा, नहीं चाहिए प्रभु।"

तिलक गोसाईं कुछ क्षण चुप रह गये। इसके बाद धीरे-धीरे उन्होंने कहा—"रजा, मेरी ही गलती हुई थी···" गोसाईं कम्बल लेकर भीतर चले गये। उसने क्या किया! गोसाईं की दी हुई, अपने गुरु की दी हुई वस्तु न लेने का उसका साहस कैसे हुआ? हे ईश्वर, मुझे क्षमा करना!

कुछ देर बाद गोसाईं आकर एक बड़ा कपड़ा दे गये। बक्से से निकाला हुआ, अभी उस पर की मांड़ी भी नहीं गयी थी। उसने दोनों हाथ फैला कर कपड़े को लिया और गोसाईं के दोनों पैरों में लिपट गया। गोसाईं ने उसे उठाकर कहा,—रजा देखो, मैंने आज तुमसे भी सीखा है, गुरु को भी शिष्यों से सीखना चाहिए। तुम्हारी इस बात से मुझे कितना सुख मिला है—मैं कैसे प्रकट करूं।

उसने दीक्षा नहीं ली। उसकी सरलता और तिलक गोसाईं के ज्ञान की गह-राई के बीच की खींचातानी का अंतिम निर्णय नहीं हो सका। गोसाईं ने उसे समझाया—दोनों हरि-भक्तों ने एक ही के पास दीक्षा ली है?—महात्मा गांधी से। अब अपना-अपना कर्म करते जाना चाहिए। उसके आने के समय गोसाईं ने एक पुस्तक देकर कहा—'पढ़ना।' रुपाइ ने पुस्तक का नाम पढ़ा 'हिन्दु स्वराज'—

अनुवादकर्ता श्रीरत्नकांत बरकाकती।

"हिन्दु स्वराज नही है, रजा—हिन्द स्वराज है। भारत का स्वराज्य।"

उसने पोथी को लेकर गोसाई को प्रणाम किया और अपने गांव लौट आया। काम ! वह काम करेगा। अपने गांव का, देश का। अकस्मात्—एक ही दिन में कुछ नही होता—उसी प्रकार के किसी एक दिन के लिए प्रतीक्षा करके यदि कुछ न किया जाये, तो कुछ न होगा। मनुष्य को किसी दिन अकस्मात् प्रकाश मिलता है, किन्तु आग को बनाये रखने के लिए उसमें कुछ न कुछ डालते रहना होगा। विश्वास के साथ।

उसे अपना जीवन मिला—स्कूल की स्थापना के समय। ज्यों-ज्यों वह काम करता गया गांववालों का विश्वास उसे प्राप्त होता गया। तिलक गोसाईं के सांसारिक कार्यों का अर्थ मानो अब उसे समझ में आने लगा है। एरण्डी के कीड़े से तितली का निकलना कोई नाटकीय घटना नहीं है—एक लम्बे सिलसिले का वह अन्तिम बिन्दु मात्र है। उसके लिए एक जैविक प्रक्रिया का प्रयोजन है। कपिली-परीया के मन की भाषा को जानना मुश्किल है। तो भी यह अनुमान है कि रुपाइ ने यही सोचा था। उसने खेती-बाड़ी में मनोयोग दिया अपने कर्म में।

सन् 1934 ई० है। इस बार कपिली को बड़ा गुस्सा आया है। गायन-बायन के घाट में इस बार गाजे-बाजे अधिक हुए हैं। बारिश। जयन्तीया पहाड़ में बारिश है, हाफलङ पहाड़ में बारिश है, मिकिर पहाड़ में बारिश है। खासी पहाड़ सूरज का प्रकाश मानो भूल-सा गया है। बारिश। एक दिन—दो दिन—सात दिन—पखवारा। दैयाङ के कगार पर से पानी बहने लगा। बबसानी नदी के पानी ने शिङिमारी के पहाड़ को घेर लिया है—नखोला के हाट में सीने तक पानी आ गया है। शुकानी हारिया नदी के पानी ने रहा के कस्बे को डुबो दिया। कलङ नदी का स्रोत ऊपर की ओर बहने लगा है। दिघली आटी की मसजिद की अजान की आवाज बंद हो गयी। चारों ओर हाहाकार है। रुपाइ के गांव का नामोनिशान नही रहा। पक्का रास्ता मानो चरागाह हो गया है। और वह बन पड़ा है अधरी लोगों का निवास। घांस-फूस के मकान बने हैं। रेल के रास्ते पर भी वही हाल है। रेल बंद है, नाव भी नहीं चलती—कपिली का इतना तीव्र स्रोत है !

रुपाइ के गांव के कुछ लोगों का पता ही नहीं चला, कौन किधर गया। उनमें से कई परिवार गुवालपरीया की परती बारी में ही आ टिके है। कही भी जा नहीं सकते। स्रोत है—मैदान में भी स्रोत है। वे अपने भाग्य पर ही दोष देते हैं—कपिलीपरीया हजारों लोगों की तरह वे भी अपने-अपने भाग्य को ही कोसते हैं। प्रार्थना करते हैं कपिली को—ईश्वर को। कपिली को गाली देते हैं—एक दिन दो दिन करके सात दिन तक। सात सूरज पानी के नीचे से उगकर पानी के बीच ही डूब गये हैं। पानी, चारों ओर पानी ही है। कपिली की उस ओर के एक गांव का

पता चलता है गांव के बांस की झुरमुटों के पानी के ऊपर निकले हुए अंश से ही। साथ लाये गये चावल आदि चार रोज में ही समाप्त हो गये। अड़वी-ठेकीया (जंगली सब्जी) आग में पकाकर खाते हैं—वही खाना है। आग को सब समय जलाकर रखना पड़ता है। दियासलाई में और तीली नहीं है। प्रयोजन, संकेत, आशा—जीवन के लिए आशा है। रात को कोई आग का प्रकाश देखेगा—दिन में देखेगा धुंआ। कोई आयेगा, कोई उन्हें निश्चित मृत्यु के हाथ से खींचकर ले जायेगा।

उन्होंने कुछ भी नहीं खाया है। गांजे के अभाव से गांजाखोर भगत को पेचिश हो गयी है।

आठवें दिन के दोपहर का समय है। पेड़ के डाल-पत्ते भी समाप्त होने लगे हैं। आग और नहीं जलती। क्या आज का दिन चलेगा? अकस्मात् एक छोटा लड़का चिल्ला उठा—"नाव-नाव—!"

सभी भीड़ लगाकर देखने लगे। एक काली रेखा-सी। आदमी? नाव। कौन आया है? क्या उनको देखा है? वे गला फाड़कर चिल्लाते हैं—हाथ हिलाते हैं, कपड़ा हिलाते हैं। नाव में कुछ हिलने लगता है। हां, वे भी हाथ हिलाते हैं। क्या उनको देखा है? नाव धीरे-धीरे आगे बढ़ आती है। नाव के आदमियों को पहचाना जाने लगा। उनमें से एक साहबी टोपी पहननेवाला है। साथ में और दो आदमी हैं। तीन मल्लाह हैं, कुछ बोरे हैं, और कुछ चीजें हैं। नाव आकर कगार पर रुक गयी। नाव आदमी के पास से आयी है—जीवन की वार्त्ता लेकर। मृत्यु की काली विभीषिका हट जाती है और उनके अन्नहीन चेहरे चमकने लगते हैं। हाफ पेंट और साहबी टोपी पहनने वाले—आदमी ने मुस्कराकर कहा—"बय नाई।"

मां भैः—सृष्टि की पहली अभय वाणी है।

आदमी नाटा था। काला था। दोनों होंठ ज्ञानी पुरुष की तरह थे। आंखें चंचल थीं। नाव से कुछ चीजें उतारता—चावल, लकड़ी का एक गट्ठा। कुछ दाल भी है। वे खाना पकाते हैं। भात पकाते हैं। अन्न। काला साहब उनसे बातचीत करते हैं। साथ के अन्य दो आदमी दूसरे गांवों के बारे में चर्चा करते हैं। साहब उस स्थान को चक्कर लगाकर देखते हैं।

"क्यों, हम इसी जगह एक कैम्प कर सकते हैं, आप क्या कहते हैं, हाजरिका?" साहब साथ के आदमी से ये बातें कहकर गांववालों से पूछते हैं! "इसके पास और कितने गांव हैं?"

"उस ओर ऊपर की ओर टेकलिया चार मील की दूरी पर है—बायीं ओर चराईहागी डेढ़ मील पर है—"

"तुम लोग खाना बना-बनाकर खाओ, हम जरा लोगों को देखकर आते हैं—"

"लेट अस रिटर्न फ्राम हियर, सर—" साहब के साथ के एक ने आदमी अंग्रेजी में ही कहा।

"बट, ह्वाई ?"

हमारे 'सेन्टर' से यह स्थान करीब छः मील की दूरी पर है। शाम होने पर लौट जाना मुश्किल है। वि बेटर गो बेक एण्ड कम विथ ए फ्यू मोर बोटस्—।"

"किन्तु तेरह मील की दूरी पर के एक गांव की जानकारी लिए बिना मैं लौटकर जाना नहीं चाहता। बेटर स्टे हियर एण्ड एनकरेज दीज़ पीपल। मैं देख कर लौट आता हूं।"

किन्तु मल्लाह तैयार नही होते। कपिली पर भरोसा नहीं है। साहब समझ गये। धमकी दी। नहीं। मल्लाह जाना नहीं चाहते।

"हुजूर, मैं जाऊंगा—नाव चलाना जानता हूं।"

साहब ने घूमकर देखा—एक नौजवान था।

"मैं भी जाऊंगा—यह आवाज गांजाखोर भगत की थी। साहब ने दोनों को सिर से पैर तक देखा। खाना न खाने के कारण कमजोर शरीर था। दो शरीरों के बीच से दो स्नेही मन साहब की आंखों में उद्‌भासित हो उठे—मृत्यु की विभीषिका द्वारा शोधित दो सहानुभूतिशील मन।

उसकी दादी रुपाइ को पकड़ लेती है। रडिली रोती है,—"साहब उसे मत ले जाना—मेरा इकलौता बेटा है।"

रुपाई ने कहा—"मां, कितने लोगों के इकलौते लड़के ही हमारी ही तरह प्रतीक्षा कर रहे होंगे···"

गांजाखोर भगत भी कहता है: "मां, कपिली का लड़का कपिली पहचानती है, तुम डर-वर न करना।"

तीनों नाव पर चढ़ जाते हैं। भगत पतवार संभालता है। रुपाई चप्पू चलाता है। साहब जेब से एक बही निकालकर कुछ लिखते हैं। अनिश्चतता के गर्भ की यात्रा है। कप्तान कुक की डायरी है···

भगत कहता है—"यह सजिनागुरी गांव था।"

गांव ? गांव का कहीं नामो-निशां नहीं है!

और कुछ दूर आगे बढ़ जाते हैं। साहब उंगली से इशारा करते हैं!: "वह है, वह गांव है···"

"किन्तु साहब,—बीच में कपिली है—"भगत के कण्ठ मे धीर-स्थिर स्वर था।

साहब कहना चाहते हैं—'चलो'—किन्तु मुंह से नहीं निकलता है। उन्हें क्या अधिकार है दो आदमियों को निश्चित मृत्यु के गर्भ में ले जाने के लिए। उन्हें अपने जीवन के प्रति भी लगाव हो जाता है। नीलगिरि पहाड़ के किनारे पर इला-

यची बगीचे के बीच उनका मकान है—उन्होंने ज्यादा पानी नहीं देखा है। कॉलेज के संतरण-तालाब में तैरना सीखा था—फ्री स्टाइल का—बेक स्ट्रोक। किन्तु तैरना जानने पर भी इस तीव्र स्रोतवाली नदी के गर्भ में यदि एक बार···

"आदमी हैं—साहब—पेड़ों के ऊपर आदमी हैं···देखिये हाथ हिला रहे हैं···" निर्लिप्त भगत के कण्ठ में बच्चों जैसी उत्तेजना थी। साहब ने उस ओर एकटक देखा। पेड़ के ऊपर कुछ हिल रहा है···देखते न देखते रुपाइ ने नाव को मोड़ दिया। कपिली के स्रोत में नाव बहने लगी।

"भय नहीं है साहब, भय नहीं है"—भगत ढाढस दिलाता है "हे दीनबंधु पार कर दो"—पहले का ढाढस और ज्यादा डरावना हो जाता है। रुपाई जोर लगाकर चप्पू चलाता है—भगत पतवार संभालता है—नाव थक्-थक् करके कांप रही है···

ये क्षण इतने लम्बे हैं!

कपिली को पार कर लिया गया। साहब ने घड़ी देखी। साढ़े चार बजे हैं। रुपाइ और भगत नाव को और तेज चलाने लगे। एक पेड़ के बिलकुल ऊपरी हिस्से में दो आदमी हैं। नाव और आगे बढ़ जाती है। एक लड़की भी है। एक अधेड़ आदमी ने किसी तरह पेड़ को एक डाल से पकड़ा हुआ है···बार-बार ईश्वर का नाम ले रहा है। पास ही एक लड़की है—शरीर पर एक भी वस्त्र नहीं है,—चेतनाहीन—अपनी चद्दर से अपने को पेड़ से बांधकर रखा है—आदमी नाव पर छलांग लगाकर आ जाता है—नाव एक ओर डूब जाती है। हे दयामय। किसी तरह बच गया। नाव पर चढ़ते ही आदमी बेहोश हो जाता है। पानी में धार थी—नाव बार-बार हट जाती है। भगत फिर पास ले आता है। साहब बेहोश आदमी को पट्टी बांधते हैं। रुपाइ नाव से ही हाथ आगे बढ़ाकर लड़की के बंधन को खोलना चाहता है। ओहो, खुल नहीं सकता। डाल को हाथ से पकड़कर दांत से उसने किसी तरह गांठ को खोला। नंगी लड़की को पकड़कर वह किसी तरह नाव पर ला रखता है। उसका नंगा शरीर उसके अपने शरीर को स्पर्श करता है। उसने जल्दी-जल्दी लड़की को सुलाकर उसी की चद्दर से ही उसके शरीर को ढंक दिया है। साहब एक साड़ी निकालते हैं—भीगी चद्दर को बदलकर साड़ी द्वारा उसके शरीर को ढंक देते हैं। आदमी चिल्ला उठता है—"गयी—गयी—ले गयी ले गयी—पोनपाही भी गयी—" साहब ने कहा "भय नहीं है—तुम्हारी लड़की सही सलामत है।"

दोनों के शरीर पर दो कम्बल उढ़ा दिये गये।

फिर, फिर कपिली को पार करना होगा। तीनों का गला सूख गया। "क्या करूं साहब?—कपिली माता का स्मरण करके···"

भाग्य है। भाग्य ही सिन्दाबाद नाविककी रक्षा करता है बार-बार—हमारी।

'ठहरो', साहब ने कहा—"धरमतुल कितनी दूरी पर होगा।"

भगत ने कुछ सोचकर कहा—"तीन मील के करीब, साहब···"

तीन मील? बहुत दूर है। तो भी कपिली को पार नहीं करना पड़ेगा। खेतों के ऊपर से ही स्रोत है—तो भी जाया जा सकेगा। भाग्य ही बचाता है—तथापि मनुष्य को संभलकर चलना होगा, चेष्टा करनी पड़ेगी। छोड़कर आये हुए टापू के लोग चिंतित होंगे। होने दें। एक चिन्ता ने साहब की चंचल आंखों को स्थिर कर दिया। यदि रात के भीतर कपिली में पानी और बढ़ जाये—वह टापू यदि डूब जाये—वह क्या करेगा? नौकरी पाने के समय एक रस्सी, एक टुकड़ा लकड़ी और एक की सहायता से कुछ समस्याओं को हल करने के लिए दिया गया था—गढ़ा पार करना, विद्युतवाही एक दीवार को पार करना—किन्तु, यह समस्या?

भगत साहब को उबार लेता है—"साहब, हम धरमतुल ही चलें। कपिली का पानी और नहीं बढ़ेगा—हो सके तो और एक बार हम आयेंगे···"

इसे कैसे मालूम हुआ मेरे मन के भाव?

"बढ़ने पर भी कोई भय नहीं है—पड़ती बाड़ी अपवित्र है—कपिली स्पर्श नहीं करती—उसके कंठ में स्थिर विश्वास की गहरी गंभीरता है। साहब आश्चर्य-चकित हो जाते हैं। यह कुसंस्कार है! तो भी वे भी उसी में आश्रय लेते हैं।

"चलो···"

दोनों नाव खेते हैं। कुछ देर बाद ठाह मिलने लगती है। डांड़ से ही लग्गी की तरह वे नाव खेते हैं। नाव जोर से आगे बढ़ती है दो घण्टों के बाद जब वे धरमतुल पहुंचते हैं तब आकाश में संध्यातारा अपना दामन हटाकर निकलने के लिए तैयारी कर रहा था।

गुवाहाटी से धरमतुल के लिए सहायता का दल आया है। वहीं उनके साथ आये हुए आदमी के संबंधी लोग भी मिले। उन्हें पड़ाव में रखकर रुपाइ और भगत ने कुछ आराम किया और पड़ाव के चारों ओर घूम-घामकर देखा। लोकारण्य है। पेचिश शुरू हो गयी है। आदमी मरा भी है। शवों को पानी में बहा देने के अलावा और कोई उपाय नहीं था। उसका मन दुखित हो उठा। मृत्यु और मृत्यु··· वह लड़की तो नहीं मरेगी? लड़की यदि मर जाये तो मानो उसकी कोई बड़ी हानि होगी।

अकस्मात् पीछे की तरफ से उसे किसी ने दोनों हाथों से जकड़ लिया। "रजा! तुम यहां?" 'सुधांसु बाबू'। उसने सारी बातें विस्तार से कहीं।

"तो फिर जाना हुआ।"

"साहब के साथ 'सुधांसु बाबू' ने अंग्रेजी में ही कुछ कहा। साहब के मुंह से "इम्पसिब्ल, रिस्कि"—इसी प्रकार के शब्द निकले।

सुधांमु ने अंग्रेजी में कहा—"इस लड़के के ऊपर मेरा बहुत गहरा विश्वास है—

"किन्तु रात को जाने से क्या कोई लाभ होगा ? उन्हें जाकर मिलने पर भी—गॉड फॉरबिड—यदि पानी और बढ़ता है तो ?"

"हम रहा चले जायेंगे—" रुपाइ ने आवाज दी। साहब ने निरानन्द और आनन्द की मिली-जुली दृष्टि से रुपाइ की ओर ताका।

"किन्तु, रात हो वह जगह कैसे पहचान पाओगे ?"

"आग साहब,—आग रहेगी ही। दिन में धुंआ देखेंगे और रात को आग।"

"हाऊ डेयरिंग !" साहब ने सुधांमु बाबू से कहा—"दिन टेक ए फ्यू मोर बोट्स इफ यू मस्ट गो।"

"सुधांमु" बाबू हंस पड़ा "मिस्टर पिल्लै, नो बाडी विल गो एक्सेप्ट दिस लैड।"

"आप यदि जाना चाहते हैं तो जाइये—बट, दे आर टायर्ड वे आज दोपहर से ही नाव खे रहे हैं।"

"रजा, साहब ने तुम लोगों को आराम करने के लिए कहा है—क्या करना चाहते हो, बोलो ?"

"हम जाना ही चाहते हैं—" भगत ने कहा।

साहब ने कंधा झाड़कर हताशा के स्वर में कहा—गो, इफ यू मस्ट—किन्तु विशेष असुविधा हो तो चापरमुख ही चले जायें, फिर एक बार कपिली पार करने का प्रयत्न न करें—इफ यू केन रीच एट आल—हम कल सबेरे आ निकलेंगे··· होप टू सी यू एगेन···

वे चले गये। कपिली की गड़गड़ाहट के बीच से ही। कपिली का लड़का कपिली की छाती को और एक बार पार कर गया। किन्तु, उनका टापू···पड़ती-बारी कहां ? रोशनी कहां ? क्या हम रास्ता ही भूल गये रुपाइ ? भगत की आवाज में करुण स्वर था।"

प्रकाश ! संकेत ! कुछ भी नहीं है। हवा चल रही है। वे नाव चला ही रहे हैं। 'सुधांमु' बाबू एक बार चिल्ला उठा—"वह है ? वह।"

हां सही है। वह प्रकाश है। आग का प्रकाश है। वे आगे बढ़ जाते हैं। प्रकाश हट जाता है। और आगे बढ़ते हैं। प्रकाश बराबर की दूरी पर है। रात की आग का पीछा किया है बाबू—ईश्वर को स्मरण कीजिए ! भगत का स्वर भय और उत्तेजना में कांप रहा था।

आग का प्रकाश पास होता आया। प्रकाश में खड़े लोग दिखाई पड़ने लगे। नाव आकर किनारे पर लगी।

दिन बीतने लगता है। कपिली का पानी सूखने लगता है। अब रोगों की

बारी आयी। सहायता का कार्य और तेज हो गया है। जिले के बड़े साहब श्री पिल्लइ को फुर्सत ही नहीं है। हर गांव में घूमकर आज सात दिन के बाद शहर लौट आये हैं। सात दिन की डाक जमा पड़ी है। सरकारी, निजी। उनमें से एक कम वजनदार चिट्ठी इन्होंने चुन ली। पत्नी की चिट्ठी त्रिवेन्द्रम से आयी है।

साहब का मन खराब है। जागी के लिए भेजे गये कम्बलों का कोई अता-पता नहीं चला है। बूढ़ीटिक के लिए भेजे गये 'बेट्रोफेज' कहां गये किसी को मालूम नहीं है। साब ने बैठकर चिट्ठी लिखी :

"अखबार में पढ़ा होगा, मैंने भी पढ़ा है। जो पढ़ा है उसमें कहीं अधिक है। पानी के बीच पृथ्वी के आदि युग में चले जाने का भान होता है। भाग्य पर भरोसा करने के सिवा और कोई चारा नहीं। भय और विश्वास—ये दोनों ही सहायक हैं। मैंने ईश्वर के बारे में विश्वास नहीं रखा था, अब धीरे-धीरे होने लगा है। किन्तु कोई तर्क नहीं है। मैं दो बार भाग्य के बल पर ही बचा हूं। यह भाग्य है, या ईश्वर—मैं नहीं जानता।

"कार्य कर रहा हूं—आरंभ में कर्तव्य के रूप में। बीच-बीच में शायद कर्तव्य को पार कर गया हूं। तुम्हारा स्वामी क्या ऐसा नहीं होगा? मैंने सुना है कि मुझ को 'काइजार-इ-हिन्द' की उपाधि दी जायेगी। तुम्हें सुनकर अच्छा लगेगा, मुझे भी अच्छा लग रहा है—किन्तु उससे भी मुझे अच्छा लग रहा है काम करने की अपने मन की दृढ़ता के लिए। तुम जानती हो मेरे मन की यह दृढ़ता कब आरंभ हुई है—उस दिन क्लब में।

"तुमको इससे पहले भी मैं लिख चुका हूं—यहां के लोग सरल हैं। खेती के लिए सदा ही प्रकृति के ऊपर निर्भरशील होने के कारण वे कुछ हद तक भाग्यवादी हैं। इस बार उनके साहस के साथ परिचय हुआ। भरी बरसात में कपिली को दो बार पार करना कितना कठिन है मैं तुम्हें लिखकर नहीं समझा पाऊंगा।

"शहर मेरे मन को बोझिल बना देता है। अखबार में पढ़ा होगा कि पंजाब के कुलदीप सिंह और गुरुबक्श कौर ने हमारे पास यथेष्ट सहायता भेजी है। उनकी सहायता सचमुच ही सराहने लायक है। किन्तु आदमी नहीं हैं। काम कर सकने वाले आदमी नहीं हैं। किसी पर भी भरोसा नहीं किया जा सकता। कुछ विद्यार्थी और कुछ देहाती युवक—बस ये ही विश्वास के साथ सहायता कार्य चला रहे हैं। पंजाब से भेजी गयी साड़ियां बाढ़ पीड़ित लोगों को नहीं मिली। उस दिन जेलखाने में ठेकेदार द्वारा आपूर्ति में दिये गये कम्बलों में सहायता के कम्बल भी मिले हैं। इसी आदत के लोग हैं। मनुष्य भी इतना पत्थर-दिल हो सकता है सोचकर आश्चर्य होता है। इस समय मेरे बहुत सारे काम पड़े हुए हैं। शहर में रह सकता तो अच्छा होता। किन्तु ऐसा कर नहीं सकता। खुद जाकर इन चीजों का वितरण न करे तो कुछ व्यापारी और कुछ वकील ही मोटे होंगे। तुम जानती हो—मेरी नजर कुछ

तेज है—उस दिन एक अफसर के घर के पत्रों को मैं पहचान गया। और एक आदमी के बारे में कहता हूं—वह समाज का विशिष्ट व्यक्ति है। उसने आज सहायता कार्य संबंधी एक वक्तव्य दिया है। कपिली में जिस दिन पहल-पहल बाढ़ आयी थी, उस दिन से ही उसने कार्यों का हिसाब दिखाया है। किन्तु हमारी पहली नाव वहां 48 घण्टे के बाद ही हम भेज सके। ये ही लोग समाज का घातक हैं—घृणा करने के लिए भी घृणा होती है। उनके अपने लोग ही मर रहे है—और ये ? दुनिया के अंधेरे पक्ष के बारे में लिखकर मैं तुमको और दुखित नही करना चाहता।

"आज तीसरे पहर तक मुझे और जाना पड़ेगा। लौटकर मुझे तुम्हारा एक पत्र अवश्य ही मिलेगा। मैं सरकारी आदमी हूं। अपनी सामर्थ्य जितना हो सके, करता जाऊंगा। मेरे लिए जरा प्रार्थना करना—इन आदमियों के लिए भी।"

बाढ़ के कारण ही धीर सिंह अस्वस्थ हो गया। आरंभ में पेचिश हुई—इसके बाद एक-न-एक शिकायत। अस्वस्थता के बीच ही धीर सिंह ने अपने घर-द्वार को ठीक-ठाक कर लिया। इसके फलस्वरूप रोग और बढ़ गया। रुपाई से जितना हो सका उसने किया। बस गोसाई ने आकर फिर 'इसकूल' खोला था—उसने भी दवा-दारू किया। किन्तु, धीर सिंह और स्वस्थ न हो सका। कपिली के किनारे के हजारों आदमियों की तरह धीर सिंह की भी मृत्यु हो गयी। रुपाई ने व्रत किया। उसके गांव के लोग ग्यारह दिन में ही मृतक का सारा संस्कार कार्य पूरा करते हैं।

वह रोज देखता है कि गांव के अधेड़ उम्र के लोग आकर रङिली और उसकी दादी के साथ फुसफुसाकर कुछ कहा करते हैं। उसके पास आते ही उनकी बातचीत बंद हो जाती है। दसवें के पहले दिन एक द्वार के गांव से धीर सिंह का एक भतीजा आया। वह बीड़ी पीता है, उसके दांत काले हो गये हैं। उसको देखते ही रुपाई का मन उचट गया। वह अकस्मात् क्यों आ धमका?

उसी दिन शाम को गांजाखोर भगत और पितौ सातोला ने उसे बुला लिया। रङिली और उसकी दादी भीतर चली गयी।

आज अकस्मात् क्या हो गया है?

सातोला ने कहने न कहने की अदा से जो बात कही है, उसे सुनकर उसे अत्यंत गुस्सा हो आया।

"मैं पिता का पिण्ड दान क्यों नहीं करूंगा?"—वह गरज पड़ा। "मैंने शरण (दीक्षा) नहीं ली है, क्या इसीलिए मुझे बाधा दी जा रही है? मैंने शरण ली है—महात्मा गांधी में शरण ली है।"

"शरण लेने न लेने की बात नहीं है, बेटा। वे बहुत सारी बातें हैं—तू न जाने तो अच्छा ही है।"

"नहीं, तुम लोगों को मुझसे कहना ही होगा—मैं और कोई बात नहीं मानता। मेरे पिता का पिण्ड-दान मेरे सिवा और कौन करेगा?"

आज भगत के मुंह पर पहले की हंसी नहीं है। वह आसक्ति हीन निस्पृहता नहीं है—"भगत को आज क्या हो गया है?"

"भगत।" एक छोटे बच्चे की तरह उसने अपने मुंह को भगत के घुटनों पर रखकर कहा—"भगत, बोलो, तुम ही बोलो क्या हुआ है—?"

भगत ने सातोला के मुंह की ओर ताका। सातोला ने अपने सर को जरा हिला दिया।

एक लम्बी सांस ली—

बहुत पुरानी बात है, धीर सिंह का कोई बाल-बच्चा नही था। कितना नाम प्रसंग करवाया, सत्य नारायण की पूजा करवायी। बूढ़ा गोसाई के मंदिर में दिया बत्ती जलायी गयी। महामाया को काले कबूतर उत्सर्गित किये गये। सब बेकार गया। ताबीज बांधा। ताबीज को डुबोकर उसका पानी पीया। उनके बाल-बच्चा नहीं हुआ। नाति का मुंह बिना देखे ही धीर सिंह का पिता मन सिंह मर गया···।

"मैं, क्या मेरा उस समय तक जन्म ही नहीं हुआ था ?"

भगत दुख की एक हंसी हंसा। उसके घुंघराले बालों में हाथ फेरकर उसने कहा, "धीरज धरो बेटा, कह रहा हूं सबके सब।···"

कहानी फिर आरंभ होती है।

रङिली अपने पति से कहती है—"पुनः विवाह कर लो।" गांव वाले भी उसी को दोहराते हैं। धीर सिंह अपने भाग्य पर ही दोष डालकर चुप रह जाता। उसकी सास रङिली को मन के दुख कारण ही बांझ कहकर गाली देती है। अगले ही क्षण अपनी बहू को पकड़कर जोर-जोर से रोने लगती है। अपने बेटे को गाली देती है—"मुझे एक नाति भी नहीं दे सकता।" कलकत्ते की किसी कम्पनी से दवा मंगा कर सास ने रङिली को पिलायी भी। रङिली के शरीर पर छोटे-छोटे फोड़े जैसे कुछ हुए। बाल-बच्चा नहीं हुआ। फोड़े के घाव सूखने में कोई छः महीने लग गये। रङिली ने चुपचाप गायन बूढ़े को भेजकर बारपूजीयण में एक लड़की को पसंद किया। अपने गहनों को तोड़वाकर उसमें और सोना मिलाकर उसने चाम-गुरीया सुनार के यहां कुछ नये गहने भी बनवाये। योगी गांव से पाट (रेशम) का एक जोड़ा रिया-मेखला भी कन्या के लिए बनवा लायी।

धीरसिंह को जब मालूम हुआ तो अपनी मां से कहा—"मां, तेरी बहू के पागल पन को देखा -- ईश्वर ने जब नहीं दिया तो हजार बार विवाह करने पर भी कहां होगा—शायद मेरे ही कारण नही हुआ है।"

उसी समय कपिली में बाढ़ आयी। यमुना और देयाङ का पानी। आस-पास के गांव डूब गये। रेल-पथ दो जगह टूट गया। उनके गांव में भी पानी चढ़ आया। उन दिनों आज की तरह 'रिलिफ' (सहायता कार्य) नहीं थी। जो गांव नही डूबते हैं वे डूबने वाले गांवों की सहायता करते हैं। पानी बढ़कर यदि उनके गांव भी डुबा देता है तो वे औरों की सहायता लेते हैं।

रुपाई के धीरज की अन्तिम सीमा छूने वाली थी—भगत असली बात को क्यों नहीं कहता ?

एक नाव लेकर धीर सिंह दूसरे गांव से आदमी लाने जाता है। मैदान और नदी के बीच कोई भेद नहीं है। गांव का भी नामोनिशान नहीं है। नाव के तल पर डूबे हुए मकानों की छत से रोने की आवाज सुनाई पड़ती है। यही चराइहागी

गांव है। कुछ सेमल पेड़ों का अगला हिस्सा पानी के ऊपर निकला हुआ है। वहीं पर गिद्ध बैठा हुआ है।

आदमी को देखकर दो गिद्ध उड़ गये। किन्तु बैठने के लिए कहीं भी ठाम न देखकर पुनः उसी पेड़ पर ही आ बैठे। उन्होंने अकस्मात् रोने का एक क्षीण स्वर सुना। दोनों गिद्ध पुनः नदी के ऊपर उड़ गये—पानी को छूने न छूने की तरह। वह क्या है? काली-सी मकान की छत है। एक बार भंवर में चक्कर काट रही है, एक बार बहती झाड़ी की आड़ में चली गयी है। रोने की आवाज क्या उसी से ही आ रही है? वह है, वह है—एक लड़का है—छत के पास एक लड़का है। दोनों गिद्ध उसी की ओर झपट रहे हैं। धीर सिंह नाव को उस ओर ले जाना चाहता है। साथ के लोग मना करते हैं। कृष्ण, कृष्ण! तो गायन-बायन के घाट के पास ही एक भंवर बना है। छत नदी के बीच से छटक कर उनसे अस्सी हाथ की दूरी पर आकर चक्कर काटने लगी। धीर सिंह ने शीघ्रता से नाव खेकर लड़के को तुरंत उठा लिया। कहां का लड़का है—किसी को मालूम नहीं है। पूछ-ताछ करके भी कोई पता नहीं चला। लड़के को अपनी मां के सामने फेंककर उसने कहा—"ले मां, तेरा नाति—"

रुपाई के तलवे के नीचे से मानो जमीन सरक गयी। पानी···पानी···चारों ओर पानी है···धुंआ···अनगिनत लालटेन जल उठे हैं···अनगिनत बीड़ी का धुंआ···बारिश···आंधी···धरमतुल के पुल पर रेलगाड़ी चढ़ी है—गुम-गुम। कपिली का लड़का भगत का संकेत समझ गया—बड़ी निर्दयता से समझ गया—बीड़ी पीता हुआ वह लड़का···काले काले दांत···वह पिण्ड-दान करेगा···वह भतीजा है···वह कर सकेगा। रुपाई कुछ भी नहीं लगता···बहता हुआ लड़का··· बहता हुआ लड़का!

वह थककर वहीं बैठ गया। भगत ने उसके सर पर हाथ फेरकर उसे सान्त्वना देनी चाही—रङिली आयी—उसने कहा—"मुझे कुछ देर अकेले रहने दो···।"

उसका मानों सब समाप्त हो गया—सब! वह सो गया। भगत ने सबसे उसे तंग न करने के लिए कहा और अपने घर चला गया।

घर के सब लोग व्रत में थे। सबको जल्दी ही नींद आयी। रुपाई जग पड़ा। उसे कपिली बुला रही है। वह अपने को रोक नहीं सका। उसे कपिली बुला रही है। वह निकल पड़ा। गांव से। कपिली···कपिली की गर्भ···कपिली का वह लड़का है—वह कपिली को जायेगा। कपिली के किनारे-किनारे वह दौड़ने लगा। यही बांबी है। वह पानी में कूद पड़ा।

वह मर नहीं सका। जो तैरना जानता है वह पानी में कूदकर आत्महत्या नहीं कर सकता। उसने न तैरने का प्रयत्न किया। असंभव! क्यों···क्यों उसे कपिली ने स्वीकार नहीं किया। कपिली—रङिली की सौत···उसकी मां।

वह बहता गया···ऊपर आकाश है···आकाश गंगा···उसके हाथों से जेल का बंधन टूट गया है···वह मुक्त है···वह बहता चला गया···वह कब किनारे पर लगा उसे मालूम नही।

उसने जगकर देखा कि ऊपर आकाश नहीं है। घर की छत है। वह एक बिस्तर पर है···कपिली की गोद में नही। कमरे से कौन निकल गया···उसने कहां देखा है···कहां···कब ?

सवेरे जब सोनपाही और उसकी सहेलियां घाट से पानी भरने के लिए गयी थीं तब उन्हें इसे मुर्दा समझकर सोनपाही के पिता को खबर दी। सोनपाही के पिता ने जाकर देखा कि वह मरा नहीं था। दो आदमियों की सहायता से उसे घर में उठा लाया गया। उसने उसे पहचान लिया। जीवन मृत्यु के संधिस्थल का आधा ज्ञान, आधा अज्ञान का परिचय भी स्थायी होता है। सोनपाही ने भी पहचान लिया—उस लड़के को।

होश आने पर उससे कहला भेजने के लिए हिदायत देकर सोनपाही का पिता मवेशियों को चराने के लिए गया।

उसने आंखें ज्यों ही खोलीं सोनपाही ने अपने पिता को सूचना दी।

"मैं पिण्ड-दान करूंगा···करूंगा ही—।" वह चिल्ला उठा। पिछली शाम की बात याद आकर उसे इस आदमी के लिए गुस्सा हो आया।

सोनपाही का पिता पास ही आकर बैठा।

"क्यों लाये ? मुझको क्यों लाये ? क्यों ? क्यों ? बह जाने क्यों नहीं दिया ?"

सोनपाही के पिता ने कुछ कहे बिना उसके सर पर हाथ फेरा। रुपाई ने आदमी के शरीर को झकझोर कहा—"मुझे बह जाने क्यों नहीं दिया ?" सोनपाही के पिता ने कुछ भी नहीं समझा। समझा कि उसे ठीक तरह से अब भी होश नहीं आया है। उसने रुपाई को जबरन सुला दिया। वह लड़की एक कटोरा दूध ले आयी। उसने दूध को एक ही बार में पी लिया।—आज दसवां है। उस बीड़ी पीने वाले लड़के ने शायद मन्त्रोच्चारण किया है। रङिली की बात उसने सोची। भगत की बात। धीर सिंह की बात। नगांओं के स्कूल की बात। वकील की बेटी अब कहां रही होगी ? ये बातें उसे पिछले जन्म की बातों की तरह लगी। सोनपाही पास ही खड़ी है। सोनपाही उससे एक बार मौत के सामने मिली थी—आज नये जन्म में उसने सोनपाही को देखा—बिना जामे की देह चद्दर से अच्छी तरह ढंकी हुई। उसी के नीचे उसकी नंगी देह है। उसकी नंगी देह एक दिन उसकी देह से स्पर्श कर गयी थी। उसने गूंगे की तरह सोनपाही की ओर देखा। सोनपाही सिर नीचा करके बाहर निकल गयी। उसने मानों उसके मन को चिट्ठी पढ़ने की तरह पढ़ लिया। वह क्या शर्म के मारे हट गयी है ?

सोनपाही अच्छा, कैसी लड़की है ? उसने उससे एक-एक करके सारी बातें

मालूम कर ली। किन्तु, किसी प्रकार का अपनापन दिखाये बिना उसने सीधे कहा, "तुम आज ही लौट जाओ। पिताजी तुम्हें पहुंचा आयेंगे। तुम लोगों का गांव यहां से दो मील पर है।" वह उससे कहता है—"मेरा कौन है—मेरा घर नहीं है—जिस घर को मैंने अपना घर बनाया था—वहां मैं बाहरी आदमी हूं। मैं अपना घर ढूंढ़ने जाऊंगा···कपिली होकर···" अकस्मात उसके मुंह से निकलता है। "क्या तुम भी जाओगी, सोनपाही ? मेरे साथ ही···।" कहने के बाद उसे शर्म-सी लगी। उसके इस उच्छ्वास में सोनपाही के होंठ भी कांपने लगे। मुंह पर स्थिर गांभीर्य है, उसने दोहराया—"तुम घर चले जाओ···जाकर खेती-बाड़ी करो।

"आदमी का दिया हुआ घर भी तुम्हारा घर है···" उसने यह बात नहीं कही। उसने अनुभव किया कि रुपाई को जरा कठोर शासन चाहिए···प्यार का शासन। क्या, वह कर सकेगी ?

"इन भावनाओं को छोड़ो···जाकर खेती-बाड़ी करो—"

उसकी बात में अनुशासन का कठोर स्वर है। उसकी बात को मानो मानना ही पड़ेगा। यदि न माने तो कहीं कोई बड़ा सर्वनाश हो जायेगा। रुपाई को ऐसा लगा।

वह अपने घर ही वापस गया। रङिली रुक-रुककर रोने लगी। दादी ने उसे पकड़कर विलाप किया। उसने गंभीर होकर पैर छुये। शाम को नाम कीर्तन में भी शामिल हुआ।

दसवां आदि मृतक का कार्य समाप्त हो चुका। अपने बिरादर वालों का भोज भी हो चुका है। रुपाई के हाव-भाव में उसके जीवन में घटित घटना का कोई चिह्न ही नहीं है। सहज सामान्य जीवन है।

एक दिन उनके संचित तीन कोड़ी रुपये लेकर वह बीड़ी पीने वाला लड़का भाग गया। गांव वालों ने पुलिस में मामला दर्ज करने के लिए सलाह दी—उसने ऐसा नहीं किया। धीर सिंह के लिए पिण्ड-दान करने के लिए जिसको अधिकार है—हजार दोष करने पर भी उसको सजा नहीं हो सकती। उस बीड़ी पीने वाले, काले दांत वाले लड़के से वह ईर्ष्या करता है।

बसु पंडित आता है। वह पाठशाला के बारे में बातचीत करता है। उसके अतीत जीवन के बारे में कोई भी बात नहीं करता है। दसवां के पहले दिन की बात उसे सपना-सा लगती है।

किन्तु वह आजकल कपिली को बारम्बार जाता है। सबेरे, सांझ, रात। रङिली डर जाती है। तिस पर भी कुछ भी कहने के लिए साहस नहीं करती। रङिली अनुभव करती है···रुपाई मानों उसके हाथ से निकल गया है—वह उसकी

मां सचमुच नहीं है···कपिली ही है···कपिली उसकी सौत है।

वह खेती करता है। दुगने उत्साह से वह हल जोतता है, फावड़ा चलाता है। कपिली की तलौंछ जमी जमीन में धान के पौधे उगते हैं···कोमल, हरे।

उसे अकस्मात् सोनपाही के लिए याद पड़ जाती है। उसके पानी में डूबकर न मरने और सोनपाही के उसको खोजकर पाये जाने के बीच वह कुछ संकेत देखता है। उसको सोनपाही का मानों बड़ा प्रयोजन है।

वह भरपूर वर्षा में रात को नाव खेकर सोनपाही के गांव पहुंचता है।

सोनपाहीं के घर के पास ही वह ठिठककर रुक गया। आंगन में किसी औरत की मूर्ति है। कौन ?-वह मूर्ति धीरे-धीरे आगे बढ़ आती है····"मुझे मालूम था कि तुम आओगे"···उस छाया मूर्ति के कण्ठ से स्वर निकलता है। वह बात कर नहीं सकता···सोनपाही भी। दोनों उसी प्रकार खड़े रहते हैं। आकाश के तारे स्थान बदलते हैं···सौर जगत अपने उद्देश्य विहीन यात्रा में आगे बढ़ जाता है—करोड़ों मील···

रात के अंतिम पहर की ठंडी हवा सोनपाही के बालों को उड़ा देती है। वे रुपाई के गालों पर सिहरन पैदा करते हैं। वह सपने के टूटने की तरह चौंक पड़ता है···सोनपाही के हाथ को अपने हाथ में लेता है—

सोनपाही पास आती है····"आना···कल आना···गोसाइ पोखरे में आना···पोखरे के किनारे एक दीया देखोगे····" उसकी आवाज मानों बहुत दूर से बहकर आयी है।

गोसाई पोखरा। बहुत पुराना पोखरा है। कितने दिन से है किसी को भी मालूम नहीं है। वह जगह गांव के बाहर है। कपिली के किनारों से अधिक दूर नहीं है। नदी से दिखाई पड़ता है। चारों किनारे बहुत ऊंचे हैं···पानी नहीं घुसता। किनारे पर जंगल, सुपारी और बांस हैं···फल पककर झड़ जाते हैं···वहीं अंकुर आते हैं···चरवाहे लड़के भी उन्हें नहीं उठाते। वहां दिन में भी कोई नहीं जाता···डरावना है। पोखरे के कछुवे की पीठ पर कहते है कि काई जम गयी है। सारा पोखरा मछली से भरा है···कोई नहीं मारता। पोखरे के बारे में बूढ़े लोग एक कहानी कहते हैं···बड़ी पुरानी बात है।

एक बार कालीयदमन नाटक हुआ था। श्रीकृष्ण का अभिनय गोस्वामी का लड़का ही करता है। इसके अलावा कालीयदमन नाटक का अभिनय करना और भी भय की बात है। गांव में कालीयदमन नाटक का अभिनय करने का निश्चय करने पर पास के गोस्वामी परिवार भयभीत रहते हैं। जिस गोस्वामी परिवार के लड़के को श्रीकृष्ण के अभिनय के लिए चुना जायेगा उसके घर गाजे-बाजे के साथ जाकर पान-ताम्बुल देकर उसके लिए निवेदन करना पड़ता। नहीं तो बहुत बड़ा अपराध होता है। नहीं तो क्या घटना घट जाये किसी को भी मालूम नहीं होता।

दूसरी ओर लड़का देना भी मुश्किल है। कहीं किसी प्रकार का अपराध होने पर अभिनय के दिन श्रीकृष्ण स्वयं उसमें स्थित हो जाता है। कागज आदि खोखली सामग्रियों से बना काली नाग जीवन्त हो उठता है···मुंह से खून निकालता है। सारा वातावरण गंभीर हो उठता है—श्रीकृष्ण फन पर चढ़कर नाचने वाले स्थान में एक पोखरा बनता है···धीरे-धीरे सांप के साथ अभिनय करने वाला लड़का पोखरे में प्रवेश कर जाता है···

गोसाइ पोखरा, कहते हैं उसी प्रकार से बना है। इसलिए, डरावना है। वहां अब भी शनिवार और मंगलकर को गाने-बाजे के शब्द और नाग-पत्नियों के विलाप के स्वर सुनाई पड़ते हैं।

दूसरे दिन रात को भी रुपाई ने उस अदभुत आकर्षण का अनुभव किया।··· आज और ज्यादा···गोसाइ पोखरे में—दीया जलेगा, कपिली का आकर्षण ? सोन-पाही का आकर्षण···वह बाहर निकल कर नाव पर बैठता है। सोनपाही के घाट में आकर उसकी नाव लगती है। वह किनारे पर आ जाता है—गोसाइ पोखरे के किनारे दीया जल रहे है—उसको बुलाया है—वह मंत्रमुग्ध-सा आगे बढ़ता है··· सुपारी का जंगल है—फलों के फूल की गंध है···उसके सामने से ही एक सियार दौड़ता हुआ गया —वह जरा रुक गया। एक सुपारी के पेड़ की आड़ में दीया छिप जाता है···फिर निकलता है···आकाश की ओर देखता है···दसवीं का चांद टेढ़ा क्यों है···क्यों ? उसने उसे क्यों इस डरावने स्थान में बुलाया है ? कल की रात की बात यथार्थ थी या सपना ? वह भय और उत्कंठा के साथ आगे बढ़ा···।

दीया के पास ही सोनपाही खड़ी है·· पास ही दो चार पान-सुपारी हैं। दीया उसकी बांयी ओर है···कांपते हुए प्रकाश में उसके शरीर की सारी टेढ़ी-मेढ़ी रेखायें स्पष्ट हैं। एक और प्रकाश है···एक ओर अंधेरा है···आधी छाया और आधी रक्त-मांस की···सोनपाही···?

वह आगे बढ़ आयी···"बैठो।"

वह बैठ गया। मगर की पीठ की तरह कड़ी एक सूखी लकड़ी पर। वह भी बैठी। किन्तु घास पर।

"तुम यहां अकेली आयी हो···?" उसने पूछा।

वह एक फीकी हंसी हंसती है।

"डर नहीं लगा था ?"

उसका उत्तर भी प्रश्न ही था—"तुम्हें ?"

फिर चुपचाप। झींगुरों की आवाज में गहरी रात का सन्देश था। वह लकड़ी से उतरकर उसके पास ही बैठ गया। उसकी नंगी देह एक दिन उसकी देह से छू गयी थी-—वही परिचय है—दीये के प्रकाश में उसने उसकी आंखों को देखा। जल रही हैं। धीरे-धीरे जल रही हैं—किन्तु वह भी आग है—गर्मी पहुंचाती हैं।

—उसको उसके साथ खेलने के लिए इच्छा होती है—आग के साथ खेलने के लिए इच्छा होती है—

वह उसके सिर को अपने पास खींच लाता है। उसके बाल भीगे हैं। यहां आने से पहले वह निश्चय ही नहाकर आयी है। उसका सिर अपने कंधे पर कर लिया उसने। बातें? बातें कहां चली गयीं?

उसके बालों में किसी प्रकार के तेल की गंध नहीं है। किंतु स्त्री के बालों की एक स्वाभाविक गंध उसके मन को उत्तेजित कर देती है—उसके बालों के जंगल में उसका मुखड़ा छिप जाता है—वह अनुभव करता है कि उससे अधिक शक्तिशाली किसी शक्ति ने उसके समस्त आदमी पर अधिकार कर लिया है। छाती, मुंह सभी से एक असहनीय जलन है—प्रत्येक स्नायु का संयोग टूट जाना चाहता है। उसका हाथ कांपने लगता है—वह हाथ मानो उसका नहीं है—किंतु वह अनुभव करता है कि उसका हाथ उसकी बांहों को स्पर्श करता है—कंधे के किनारे नीचे उतर जाता है—उसका वक्ष कोमल है। उसकी गर्म सांस उसके मुंह पर लगती है—वह उसे जोर से पकड़ लेता है—और जोर करके—उसके सारे शरीर का स्पर्श वह अपने सारे शरीर से अनुभव करता है। चुपचाप है। सांस लेने और छोड़ने के सिवा और आवाज नहीं है। झींगुरों की आवाज भी बंद हो गयी है। उसने उसे चूम लिया। आंख पर, गालों पर—होंठों पर—छाती पर—

"दीये को बुझा दो" सोनपाही की आवाज बहुत दूर से मानो आ रही है—"मुझे शर्म लगती है"—

काली नाग के विष भरी सांस में मानो वह जग पड़ा। पोखरे का पानी स्तब्ध है। उनकी उत्तेजना के साथ कोई मेल नहीं है। अंधेरा है। चांद अंगार जैसा लाल है। उसका मन एक अनजान आशंका में कांप उठता है। इस गोसाईं पोखरे के किनारे का प्रति वृक्ष मानो उसकी ओर देख रहा है। उसको, उसकी गोद में सिर रखकर सोने वाली सोनपाही को। उसको डर लगता है।

"सोनपाही, हम चले चलें।"

सोनपाही ने आंखों को धीरे से खोला। चांद के क्षीण प्रकाश में उसकी आंखों को देखा गया। वह आग उनमें नहीं है।

"चलो सोनपाही—मुझे डर लगा है।"

सोनपाही उठ पड़ी। उसके कंधे का सहारा लेकर खड़ी हुई।

"रोज ही आना—" पहले के शासन का स्वर उसमें नहीं था।—एक विनती का—जिंदा रहने की इच्छा का।

उसके खून में कपिली की लहरें स्थिर हो गयी हैं।

"नहीं सोनपाही—गोसाईं पोखरे में नहीं—कपिली के किनारे में—"

"किंतु, कपिली तो तुम्हारी मां—"

उसे अकस्मात याद आयी कि गोसाईं पोखरे में रहते समय उसे एक बार भी कपिली की याद नहीं आयी। क्षण भर के लिए उसका रक्त-संचालन बंध-सा गया। उसने कपिली को भुला दिया। सोनपाही क्या उसे कपिली से दूर ले जाना चाहती है ?—नहीं। वही देखता हूं—वही कपिली की याद करा रही है। उसकी मां की बात। तिस पर भी उसने निश्चय किया कि वह गोसाईं पोखरे में नहीं आयेगा। नहीं आयेगा।

अब नदी की धार के ऊपर की ओर जाने की बारी है। उसके शरीर की सारी शक्ति मानो समाप्त हो गयी है। भरी कपिली की गोद में, वह सोचता है, आज की रात ही यदि उसकी अन्तिम रात होती ! सिर पर से किसी भारी चीज को झटका देकर फेंकने की तरह उसने सिर को हिलाया।

उसकी भुजाओं में पुनः शक्ति लौट आती है। सोनपाही के प्रति उसकी एक अदभुत आकांक्षा जागृत हो जाती है। भरी कपिली को पार करके उससे आ मिलने में सुरा का एक तीव्र प्रभाव है। किन्तु, वह अनुभव करता है कि गोसाईं पोखरे से कुछ एक उसके पीछे-पीछे आ रहा है। वह मुड़कर देखता है। तीव्र लाल रंग का चांद कपिली के गर्भ में घुस रहा है।—सामने भोर का तारा निकला है। वह जोर से नाव को खेने लगता है। मानो उस तारे को लक्ष्य करके। सोनपाही—सोनपाही का नया आविर्भाव उसके अपने अस्तित्व के दिगन्त में है।

फिर अगला दिन आया। खून बुलाता है। सोनपाही का खून उसे बुलाता है। उस आह्वान को वह ठुकरा नहीं सकता। कपिली का सीना होकर उसकी नाव जब सोनपाही के घाट आ पहुंची, तभी उसकी चेतना लौट आयी। सोनपाही के सीने को उसे छोड़कर जाने की इच्छा नहीं होती। सोनपाही के वक्ष से भी कोमल—मुलायम। किंतु, गोसाईं के पोखरे के किनारे दीया जल रहा है—उसे बुलाया है —एक शलभ उतावला हो जाता है—प्रकाश का आह्वान। वह अपने को रोक नहीं सकता।

उसको फिर चेतना लौट आती है, सोनपाही के क्षीण स्वर में—"कपिली को मुझ से डर लगता है। कपिली ने ही हमको आपस में परिचित कराया। कभी कपिली ही हमें एक को दूसरे से अलग ले जायेगी।" उसका मुंह सोनपाही की छाती में छिपा है। वह उसे जोर से पकड़ लेता है। वह रोता है। वह भी रोती है।

फिर थकावट। कपिली की छाती होकर नाव खेते मिलन की आकांक्षा में आने के आनंद से सोनपाही की छाती के उत्ताप की मोहकता का प्रभाव कम-सा लगता है। वह उसकी भुजाओं के बंधन से निकलकर कुछ भी कहे बिना घाट को लौट आता है। सोनपाही वहीं रहती है—बोल नहीं सकती। वह आश्चर्यचकित भी नहीं होती —उसके इस प्रकार एकाएक चले जाना मानो कोई असाधारण बात नहीं है। सोनपाही वहीं रहती है—रुपाई की नाव किनारे से नदी के बीच गयी

है—धीरे-धीरे नाव अदृश्य हो जाती है।

किन्तु, रात होने पर ही खून उसे बुलाने लगता है। वह अपने खून में कपिली की दोनों किनारों को छू जाने वाली बाढ़ का अनुभव करता है।

रात को नदी होकर जाने वाली महाजनोंकी नावों में गोसाईं पोखरे के किनारे दीया जलना देखा जाता है। पतवार का मल्लाह अपने साथियों को जगाता है। तन्द्रा से जगकर सभी मल्लाह हाथ उठाकर प्रणाम करते हैं और जल्दी-जल्दी नाव लेकर वहां से हट जाते हैं। किनारे पर बंधी रुपाई की नाव लहरो के कारण कांप उठती है—

सारी वर्षा ऋतु में—

महाजीवन की एक कणिका सोनपाही के शरीर को किसी जगह स्थान कर लेती हैं—उनके अनजान में ही।

रुपाई के हाव-भाव के प्रति रंङिली की नजर जाती है। जन्म देने वाली वह नहीं है—किन्तु उसकी मां है। सारी वर्षा ऋतु में ही उसका उन्माद-सा भाव रहा। घर में वह नहीं रहता। रात के समय कपिली के किनारे लोग उसे देखते हैं। बसु गोसाईं रुपाई के परिवर्तन को देख कर आश्चर्यचकित हो उठता है। दुनिया के सारे काम वह कर लेता है, किंतु सब में उसकी उदासीनता है।

उसकी मां बसु गोसाईं को बुला भेजती है।

"महाराज, बच्चे के कार्य और कथाओं के प्रति आपने क्या गौर किया है? मुझे किंतु डर लग रहा है।"

"क्या उसे कम आघात पहुंचा है मां—ठीक होने में कुछ दिन लगेंगे। है न?"

"उसका विवाह किया जा सकता तो अच्छा होता, महाराज!"

"हां, ठीक है, आप ऐसा ही करें।"

रंङिली ने एक निश्वास छोड़ा और कहा—"मैंने चेष्टा तो की थी, किंतु उसके जात-कुल का पता न रहने के कारण कोई भी उसको लड़की देना नहीं चाहता।"

"उसे इच्छा है या नहीं?"

"उसके बारे में मैं जान नहीं सकी—एक दिन मैंने उससे कहा—"अरे बेटे, शादी कर लें"—उसने कहा—' जात-कुल जिसका ठीक न हो उसको कौन लड़की देगा, मां?" उसको मालूम है कि मैं इस बात से दुखित होती हूं—वह वातावरण को हल्का करने के लिए मेरे शरीर में मुंह को रगड़ कर कहता है—"मेरी मां—ओ मां—"

"अच्छा, आज उससे पूछिये तो—वह शादी करना चाहे तो क्या लड़की नहीं निकलेगी?"

कपिली का पानी सूखने लगता है। कपिली का पानी सूख जाने के बाद उसको पार करके वह सोनपाही के पास गया नहीं है—उसको जाने की इच्छा भी नहीं है।

उसकी मां उससे शादी की बात कहती है। वह हंसता है। वह किससे शादी करेगा? सोनपाही से? सोनपाही से वह कैसे शादी करेगा—वह सोचता है। सोनपाही के प्रति उसका प्रेम तीव्र सुरा की तरह है। दुनिया के शांत वातावरण में भी वह नहीं है। गोसाईं पोखरे के किनारे की उस उग्रता से निकालकर उसे चारदीवारी के बीच कैसे रखेगा? सोनपाही उसके साथ एक ही बिस्तर पर सोयेगी? असंभव है? सोनपाही के प्रति उसकी अदम्य इच्छा है—मिलन के बाद के मुहूर्त की चरम वितृष्णा — इस उग्रता के बीच संसार का कहां स्थान है?

संसार की शांति, गृहस्थी की शीतलता उसके लिए नहीं है। उसके लिए सत्य है। कपिली की अबाध गति। वह अपने प्रारंभिक जीवन के बारे में सोचता है। होगा ही। क्योंकि, उस समय उसने अपने को नहीं पहचाना था। उसने सोचा था— रंङिली उसकी मां है? धीर सिंह उसका पिता है। उसको मालूम नहीं था कि वह संसार के स्रोत का जलकुंभी मात्र है—उसके लिए केवल गति है।

जेलखाने में सिखायी गई सारी बातों को वह भूल जाना चाहता है। शान्ति, अहिंसा—ये उसके लिए नहीं हैं। उसकी कपिली में अब जीवन की वर्षा आयी है···कपिली में बाढ़ आयी है···उसे बहाकर ले जायेगी—कहां कौन—? वह पागल की तरह कपिली के किनारे की ओर दौड़ता है। उसका खून गर्म हो उठता है।··· दोनों कानों में एक असह्य आवाज हो रही है। वह उतर जाता है। कपिली का शीतल स्पर्श उसका सारा शरीर अकस्मात् ठण्डा कर देता है। आंखों के सामने की इस कपिली के साथ मन की कपिली का कोई मेल नहीं है···कुहासे के पर्दे के नीचे कपिली सो रही है···कलङ की तरह मृत है, जिन्दा नहीं है।

उसे ठगे जाने की तरह लगा।

क्या किया है कपिली···मेरी सारी धारणाओं को क्यों मिट्टी में मिला दिया। बांबी के ऊपर ही वह बैठा रहता है। जाड़े की हवा के झोंके उसकी देह को शीतल कर देते हैं। कपिली क्या चाह रही है? इस शान्त स्वरूप में कपिली उसे क्या कहना चाहती है? संसार? शान्ति? कपिली केवल बस्तियों को ही बहाकर नहीं ले जाती—खेत के मैदान में भी खाद छोड़ जाती है···संसार को बनाती भी है। बसु गोसाईं ने मेरे लिए लड़की पसंद की है···किन्तु सोनपाही? सोनपाही का क्या होगा? सोनपाही रहेगी।—उसका कपिली परीया अद्भुत तर्क है। संसार के सामान्य वातावरण में ऊब जाने पर वह सोनपाही के पास जायेगा···गोसाईं पोखरे को—भरी कपिली के सीने में छाती में नाव खेते हुए। इसके बाद?

पानी में हुए एक शब्द के कारण उसके विचार का सिलसिला टूट गया। एक नाव आकर रुक गयी। सोनपाही नाव से उतरकर कगार होकर ऊपर आ रही है। चांद के मन्द प्रकाश में उसकी दोनों आंखें जगमगा रही हैं···एक स्थिरताहीन आनन्द की छाप उस पर देखी गयी। उसने आकर अपना एक हाथ उसके कंधे पर

रखा। किसी एक उत्तेजना में सोनपाही का सारा शरीर कांप उठा।

"तुम क्यों आयी, सोनपाही ?" उसके स्वर में प्रश्न से कहीं अधिक स्पष्ट था एक कठोर व्यवहार।

सोनपाही ने उसकी बात को समझा···किन्तु पूछ नहीं सकी। उसके बालों में हाथ फेरकर कहा—"यों ही—आज समझो मैं ही आ गयी।" वह उसके गले में लिपट गयी।

क्यों, क्यों, सोनपाही क्यों आयेगी ? उसने अकस्मात् अनुभव किया···उसकी कामना की देवी, उसके खून की प्यासी देवी एक अत्यंत साधारण लड़की है। तीर्थ-क्षेत्र से देवी नहीं आती···महामाया थान से मां भगवती गांव नहीं आती···किसी भी भक्त के यहां नहीं आतीं।

उसने झटका देकर उसके हाथों को छुड़वा दिया। उसका मुंह पीला पड़ गया। उसने संकोच के साथ कहा "मेरे आने से तुम्हें बुरा लगा रुपाई···आज कितने दिनों से तुम नहीं आये···सदा ही तुम्हारे लिए राह देखती हूं···आज और अपने को रोक नहीं सकी। मेरे शरीर में भी रक्त-मांस हैं।

रुपाई का मन दुखित हो उठा ! उसने सोचा कि इतना कठोर होना उचित नहीं था। उसने सोनपाही के बालों में हाथ फेरकर कहा—"मेरा मन बहुत ही दुखी है, सोनपाही···क्या कहना चाहता था···मैं भी नहीं जानता।"

सोनपाही ने अपने हाथों से उसके मुखड़े को ऊपर उठा दिया। यह लड़का··· कितना उग्र है, दूसरी ओर कितना सहायहीन···

"तुम्हें क्या हुआ है रुपाई ?"

रुपाई को क्या हुआ है ? वह कैसे समझायेगा ? उसके जीवन की घटनाओं के बारे में सोनपाही जानती है। उन घटनाओं की प्रतिक्रियाओं के बारे में भी वह जानती है। किन्तु इसके परे भी उस पार कुछ है—मेरी उन्मत्त कामना मुझे तेरे पास ले जायेगी··· गोसाईं पोखरा···डरावना पोखरा···मेरी महामाया का थान··· वहां तुम मेरे लिए बाट देखना···महामाया देवी। वह कितना सहज है—कितना सच है। तुम एक सामान्य लड़की की तरह अपनी पसन्द के एक जवान के पास क्यों दौड़कर आओगे। क्यों ?

मैं धार में बहता जलकुंभी हूं···मेरा कोई इतिहास नहीं है···जिस परिवार ने मुझको संसार के साथ परिचित कराया है···वह मेरा परिवार नहीं है···हर घाट में ठोकर खाकर बहते रहना होगा···जरा सहारा···रक्त के उत्सव में जरा-सी आहुति है—तुम उसकी देवी हो···महामाया···

ये बातें उसे मालूम हैं···समझा नहीं सकता। कोई भी नहीं कर सकता। मनुष्य की भाषा अपने मन के भावों की तुलना में कितनी गरीब है !

वह कुछ भी नहीं बोलता। किन्तु सोनपाही···उस लड़की की बात···वह क्यों

नहीं सोच सका ?

सोनपाही ने सोचा था···यदि रुपाई मिल जाय···उसको आश्चर्य में डाल देगी···वह उसे आलिंगन करेगा।···उसे डर लग रहा था कि रुपाई मिले या न मिले ! वह मिल गया···तथापि !

उसने फिर अकस्मात् कहा—"तुम जाओ, सोनपाही, कोई देख लेगा···बहता पानी, अनायास ही जा सकोगी।" उसके स्वर में सांसारिक ज्ञान की अस्वाभाविक ध्वनि थी। "मैं फिर आऊंगा···वर्षा।"

सोनपाही खड़ी हो गयी। यह रुपाई नहीं है क्या ? रुपाई जिस प्रकार सांसारिक मनुष्य की तरह बात कर रहा है, उसे लगा कि यह एक अपरिचित रुपाई है।

"एक बात कहने आयी थी, रुपाई"—दांत से नीचे के होंठ को काटकर किसी प्रकार अपने को संभालकर सोनपाही ने कहा—"मेरे पैर भारी हैं—आज तीन माह हैं।"

"सोनपाही।" वह पागल की तरह चिल्ला उठा। नाव पर चढ़ने वाली सोनपाही ठिठककर रुक गयी।

"मैं चलती हूं रूपाइ—मैं तुमसे और कुछ भी नहीं चाहती।"

क्षण भर के लिए उसके मन से बहुत सारी भावनायें बिजली की तरह कौंध गयीं। उसकी सन्तान ! इसका माने है कि उसे सोनपाही से शादी करनी पड़ेगी। कपिली वही चाहती···जाड़े के मौसम की कपिली वही चाहती। गोसाई पोखरे के किनारे के वह डरावना प्रणय समाप्त हो जायेगा···सोनपाही उसके बिस्तर पर ही सोयेगी···उसके रक्त की उत्तेजना को संसार शान्त कर डालेगा। वर्षा की कपिली उसे पहचान नहीं पायेगी। सोनपाही के साथ उसका यह कालन्तिक प्रेम केवल स्वामी-स्त्री का सामान्य संबंध मात्र रह जायेगा। भरी वर्षा की उन रातों की याद कर उनको शर्म लगेगी···सबेरे खेत जाने के पहले सोनपाही उसके सामने एक कटोरा गर्म चाय···कपिली, तू यही चाहती ! वही हो।

कहां ? सोनपाही कहां गयी ? घाट में देखा। नाव नहीं है। सोनपाही चली गयी।

वह चिल्लाया—"सोनपाही !" उसकी प्रतिध्वनि केवल हुई। उत्तर नहीं है। कुहासे के भीतर से उसने नजर दौड़ायी···नहीं है, नाव को नहीं देखा जाता। नीचे की ओर जाने पर भी इतनी जल्दी अदृश्य नहीं हो सकती। तो ?···

"कपिली ने ही एक दिन हमारा एक दूसरे से परिचय कराया है···और एक दिन कपिली ही हमें दूर ले जायेगी।"

सोनपाही की बात उसके कान में बज उठी। तो, सोनपाही कपिली के गर्भ में ही···वह क्या करेगा समझ में नहीं आया···गांव में जाकर कहेगा क्या ? दूर कुछ काला-सा कुछ देखा···उसने तैरकर उसे पकड़ लिया—एक नाव—सोनपाही

जिसमें आयी थी। सोनपाही कहां गयी···डूब गयी ? सोनपाही सचमुच डूब गयी।

कपिली के किनारे का रहस्य हम समझ नहीं सकते। हम होते तो खोजते, पहले खुद···इसके बाद गांववालों से कहते। जाल लेकर, मशाल लेकर गांववालों ने खोजा होता। रुपाई ने कुछ भी नहीं किया। सोनपाही यदि मरी है···कपिली ने ही, उसकी मां यही चाहती थी। सोनपाही की मत्यु ने उसे नये पथ का संधान दिया। वह शादी करेगा। उसने कपिली का इंगित समझा। उसका संसार सोन-पाही से नहीं बसता। उसके तीव्र प्रेम का मूल्य कपिली ने दिया। सोनपाही को कपिली ले गयी। कपिली चाहती है कि वह अपना संसार बसाये। उसमें रहेगी रङिली, बसु गोसाईं द्वारा बन्दोबस्त की नयी लड़की···गृहस्थी की सीमाओं के भीतर रहकर वह धान रोपेगी, आंगन साफ करेगी, देवता का दीया जलायेगी, उसके बाल-बच्चे होंगे, वह प्यार करेगा, पढ़ायेगा, वह बूढ़ा होगा, एक दिन मरेगा···बसु गोसाईं की बन्दोबस्त की गयी लड़की विधवा होगी—उसके लड़के पिण्ड-दान करेंगे···। किन्तु, उसकी पहली सन्तान ? अपव्यय—विश्व के विराट अपव्यय के भीतर वह भी एक अपव्यय है।···

उसने भीगे शरीर से ही आकर बसु मास्टर को जगाया।

"महाराज, मेरा विवाह तय कीजिए।"

बसु गोसाईं की नींद पूरी टूटी नहीं।

"कौन ! रजा हो क्या ! क्या हुआ ? इस रात को इस प्रकार भींगते-भागते आने को ?"

रुपाई ने फिर कहा—"महाराज, मेरा विवाह तय कीजिए।

बसु गोसाईं स्तब्ध रह गये। इसी बात को कहने के लिए ही क्या इस प्रकार भींग-भागकर आना चाहिए···? उन्हें रुपाई अपरिचित-सा लगा।

एक मरी हुई झील के किनारे उसका घर है। जिन्दा कपिली के जिन्दा रहस्य की बात वह कैसे समझेगा ?

भारत मुद्रणालय, नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032 द्वारा मुद्रित।